क़ुरआन की शीतल छाया

लेखक:
डॉ. मोहम्मद ज़ियाउर रहमान आज़मी
बी.ए., एम.ए., पी.एच.डी.

कोकण काउन्सिल फाऊंडेशन

क़ुरआन की शीतल छाया

के अंतर्गत

चरित्र निर्माण

कोकण परिषद

कोकण काउन्सिल फाऊंडेशन

कोकणात जनतेचा आधार

प्रकाशक की ओर से

अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यिदिल अम्बियाई वल् मुर्सलीन व अला आलिही वस् सहाबिही अजमईन, अम्मा बाद

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِی أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ

(रोज़ों का) महीना रमज़ान है जिस में क़ुरआन नाज़िल किया गया जो लोगों का रहनुमा है और इसमें रहनुमाई और (हक़ व बातिल के) तमीज़ की रौशन निशानियाँ हैं (सूरह अल-बकरा २:१८५)

लेखक मुहद्दिसे आज़म, शैखे मुहतरम अल्लामा डॉक्टर प्रोफ़ेसर अबू अहमद मुहम्मद अब्दुल्लाह अल-आज़मी (मारूफ बि-ज़ियाउर रहमान) रहमतुल्लाहि अलैह का मुअज़्ज़म व अज़ीम नाम और उनके इलमी कामों के बारे में मैंने मदीना मुनव्वरा में शैख़ मुज़फ़्फ़रुल इस्लाम से सुना था।

एक रोज़ सन् २००३ में मस्जिदे नबवी में मुलाक़ात हुई, जब उन्हों ने "अल-जामे अल-कामील फ़िल् हदीस अस्-सहीह अश्-शामिल" की शुरुवात की थी, और मैंने उन्हें अपनी ख़िदमात अर्पण की। और उनको मेरा बड़ा भाई बनने की दावत दी जिसे उन्होंने स्वीकार किया।

उस दिन से लेकर आज तक मै उनका ख़ादिम व भाई बना हूं।

मुहद्दिसे आज़म, शैख़े मोहतरम अल्लामा डॉक्टर प्रोफ़ेसर अबू अहमद मुहम्मद अब्दुल्लाह अल-आज़मी रहमतुल्लाहि अलैह, ९ ज़िल हज्ज १४४१ हिजरी, यौमे अरफ़ा हज्ज के दिन एवं ३० जुलाई २०२०, दोपहर अज़ान के बाद अल्लाह ताला को ७८ वर्ष की उम्र में मदीना मुनव्वरा में प्यारे हूवे।

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिऊन (बेशक सब कुछ अल्लाह का है और अल्लाह की तरफ़ ही लौट कर जाना है।)

अल्लाह तआला मुहद्दिसे आज़म, शैख़े मोहतरम अल्लामा डॉक्टर प्रोफ़ेसर अबू अहमद मुहम्मद अब्दुल्लाह अल-आज़मी रहमतुल्लाहि अलैह के तमाम गुनाहों को माफ़ करे और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने हबीब नबी ﷺ और रसूल मुजतबा व मुस्तफ़ा मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के साथ जगह दे और हम सब को सब्र दे।

मुहद्दिसे आज़म, शैख़े मोहतरम अल्लामा डॉक्टर प्रोफ़ेसर अबू अहमद मुहम्मद अब्दुल्लाह अल-आज़मी रहमतुल्लाहि अलैह ने "दावतुल क़ुरआन ली ग़ैर मुस्लिम" यह अरबी ज़बान में पुस्तक लीखी थी। इसका हिंदी अनुवाद, "क़ुरआन की शीतल छाया" है।

यह मोबाइल एप्प इसी पुस्तक का और मुहद्दिसे आज़म, शैख़े मोहतरम अल्लामा डॉक्टर प्रोफ़ेसर अबू अहमद मुहम्मद अब्दुल्लाह अल-आज़मी रहमतुल्लाहि अलैह के तमाम पुस्तकों में से सबसे पहला मोबाइल एप्प है।

वे जवानी में कहा करते थे:

हम से ज़माना ख़ुद है ज़माने से हम नहीं

हम को मिटा सके यह ज़माने में दम नहीं

हम जिंदा थे, हम ज़िंदा हैं, हम ज़िंदा रहेंगे।

आज से हम मुहद्दिसे आज़म, शैख़े मोहतरम अल्लामा डॉक्टर प्रोफ़ेसर अबू अहमद मुहम्मद अब्दुल्लाह अल-आज़मी रहमतुल्लाहि अलैह को इस मोबाइल एप्प और दूसरे तमाम इलेक्ट्रॉनिक तथा प्रिंटिंग मीडिया के जरिए जिंदा रखेंगे इन शाअ़ अल्लाह।

बहुत जल्द उनकी तमाम पुस्तकों का मोबाइल एप्प, वेबसाइट, तमाम इलेक्ट्रॉनिक मीडिया फेसबुक पेज, यू ट्यूब चैनल से उनके क़ुरआन की इन्साइक्लोपीडिया का हिंदी, उर्दू अंग्रेज़ी ज़बान में प्रचार करेंगे।

क़ुरआन का हिंदी तर्जुमा, कुरान की तफ़्सीर सहीह हदीस से, सीरतून्नबी सहीह हदीस से,

अल-जामे अल-कामील फ़िल् हदीस अस्-सहीह अश्-शामिल" का अरबी उर्दू और अंग्रेजी जबानों के माध्यम से उनके सही शिक्षण का प्रचार करेंगे और ता क़ियामत इनके शिक्षणो को जारी रखकर सदक़ा जारिया करेंगें।

इस पुस्तक में अक़ीदा, इबादात, मामलात, रहन-सहन, अल्लाह और उसके बंदों के अधिकार अथवा जीवन के सारे पहलुओं में क़ुरआने करीम की बे-

मिसाल शिक्षाओं और उसके अच्छाइयों व ख़ूबियों पर मुश्तमिल आयात और इस्लामी इतिहास के उज्जवल कथाओं का संक्षेप व नीचोड है।

लेखक ने बड़ी श्रेष्ठता और सुंदरता से इस्लाम की आलमगीरी और जीवन के सारे पहलुओं में उसकी ख़ूबियों और अच्छाइयों को उजागर किया है।

हमारे मालिक, हमारे ख़ालिक़, हमारे पालनहार रब से दुआ है कि हम सब के काम को क़ुबूल करें और हम सबको बख़्श दे।

ख़ादिमूस् सुन्नह अल्-मुश्रफ़ह
मुजीबुल्लाह उमर दुस्ते
मदिना मुनव्वरा
www.zia-alazmi.com

कुछ लेखक के बारे में

इस पुस्तक के लेखक डॉ. मुहम्मद जियाउर्रहमान आज़मी रहिमहुल्लाह हैं, जो सन १९४३ ईस्वी में एक हिन्दू परिवार में पैदा हुए। हाई स्कूल करने के बाद १९५९ ईस्वी में क़ुरआन पढ़ने के बाद इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया, फिर अरबी पढ़ने के लिए जामिया दारुस्सलाम उमराबाद, तामिलनाडु चले गए, क्योंकि इस्लाम ग्रहण करने के बाद आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश में रहना उनके लिए असम्भव हो गया। १९६६ ईस्वी में मौलवी-फ़ाज़िल की डिग्री प्राप्त की। सन १९७० ईस्वी में इस्लामी विश्वविद्यालय मदीना मुनव्वरा से इस्लामी क़ानून में बी.ए. किया। १९७३ ईस्वी में "हज़रत अबू हुरैरह रज़ीयल्लाहु अन्हु और उनकी उल्लिखित हदीसों" के विषय पर शोध कार्य करने के उपलक्ष्य में उन्हें 'इस्लामिक स्टडीज़' में शाह अब्दुल अज़ीज़ विश्वविद्यालय मक्का मुकर्रमा ने एम. ए. की डिग्री प्रदान की। तत्पश्चात अल-अज़हर विश्वविद्यालय क़ाहिरा से पी.एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। पी.एच.डी. में उनका विषय था "पैग़म्बरे इस्लाम प्रेषित मुहम्मद ﷺ का न्याय"। इस विश्वविद्यालय ने १९७७ ईस्वी में उनके शोध कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ उपाधि से उन्हें सम्मानित किया।

डॉ. महोदय ने अरबी, उर्दू और हिन्दी में भारत, पाकिस्तान और मध्य-पूर्व के बहुत से साहित्यिक तथा धार्मिक पत्र-पत्रिकाओं में अनेकों लेख लिख कर ज्ञान जगत में महत्वपूर्ण योगदान किया है। अब वे १९७८ ईस्वी से मदीना विश्वविद्यालय में हदीस के प्रोफ़ेसर थे और अरबी भाषा में लगभग एक दर्जन

पुस्तकें लिख चुके हैं, जो अधिकतर मिस्र एवं लेबनान से प्रकाशित हुई हैं, इनमें से कुछ का अनुवाद उर्दू तथा अन्य दूसरी भाषाओं में भी हो चुका है।

प्रस्तुत पुस्तक जिसको डॉ. साहब ने १९६८ ईस्वी में लिखा था जब आप मदीना विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। चूँकि यह किताब ग़ैर मुस्लिम समाज में बहुत लोकप्रिय हुई है, जिसके कारण अब तक इसके पाँच संस्करण निकल चुके हैं। यह इसका छठा संस्करण है, इसमें कुछ लेख अधिक कर दिए गए हैं, जिसके कारण इस पुस्तक का महत्व और बढ़ गया है, आशा है पुस्तक और अधिक पसंद की जाएगी।

पहला भाग

क़ुरआन
तथा उसके लाने वाले का संक्षिप्त जीवन चरित्र

क़ुरआन: यह अल्लाह का अंतिम ग्रंथ है, जो अंतिम नबी मुहम्मद ﷺ पर तेइस वर्षों में उतरा। सबसे प्रथम स्वयं नबी ﷺ इसको याद कर लेते थे, फिर आप के साथी (सहाबा) याद कर लेते थे, और नबी ﷺ ही की आज्ञा से इसको विभिन्न वस्तुओं पर लिख लिया जाता था, इस प्रकार पू-रा क़ुरआन जिस प्रकार आज पाया जाता है नबी और आप के सहाबा को स्मरण हो गया था। फिर जब हज़रत अबू बक्र ख़लीफ़ा बनाए गए तो उन्होंने फैले हुए क़ुरआन पत्रों को इकट्ठा किया और एक ग्रन्थ के रूप में जमा कर दिया। फिर जब हज़रत उस्मान ख़लीफ़ा बने तो आप ने इसी ग्रन्थ से विभिन्न प्रतियाँ बनाईं और पूर्ण इस्लामी संसार में उसको फैला दिया और आज तक उसी प्रति से क़ुरआन प्रकाशन होता है। इस प्रकार अल्लाह ने इसमें विभिन्नता पैदा होने से सुरक्षित रखा।

"नि:संदेह क़ुरआन हम ने ही उतारा है और नि:संदेह हम ही इसके रक्षक हैं।" (सूरह हिज्र:९)

और अब संसार में यह प्रथम एवं अंतिम ग्रन्थ हैं जो अब तक सुरक्षित है, और प्रलय दिवस (क़ियामत) तक सुरक्षित रहेगा। इससे पहले जो ग्रन्थ उतरे थे उनमें बहुत सारी तब्दीलियाँ (परिवर्तन) हो चुकी हैं।

पहले पहले जब क़ुरआन लिखा गया तो उसमें बिन्दु नहीं थे। लेकिन जब इस्लामी संसार अरब से निकल कर अजम तक में फैल गया और बिन्दु के बिना क़ुरआन पढ़ने में कष्ट होने लगा तो ख़लीफ़ा ने "अबुल असवद दुवली" को आज्ञा दी कि वह क़ुरआन में बिन्दियाँ लगा दे ताकि पढ़ने में ग़लतियाँ न हों। इस प्रकार अल्लाह ने क़ुरआन को ग़लत पढ़ने से भी बचा लिया। फिर जब प्रिन्टिंग प्रेस बन गए तो क़ुरआन संसार के कोने-कोने में प्रकाशित होने लगा। इस समय सब से बड़ा क़ुरआन का प्रिंटिंग प्रेस मदीना मुनव्वरा में है जिसका नाम है: "शाह फ़हद क़ुरआन प्रेस संस्थान" जिसकी स्थापना सन हिजरी १४०५ (सन ईस्वी ३० अक्टूबर १९८४) में हुई।

यहाँ से २००० ईस्वी तक डेढ़ करोड़ से भी अधिक क़ुरआन प्रकाशित हो चुके है। इसी प्रकार इस संस्थान से सन १९९९ ईस्वी तक उन्तीस भाषाओं में क़ुरआन का अनुवाद हो चुका है, और वह यह है:

उर्दू, इस्पेनी, अलबानी, इन्डोनेशी, अंग्रेज़ी, अन्को, उरामी, इगेरिया, बराहोइया, पश्तु, बंगाली, बुर्मी, बुस्नी, तामिल, थाईलैंडी, तुर्की, ज़ूलो, सोमाली, चीनी, कश्मीरी, कोरी, फ्रेंच, मक्दूनी, मलयालम, हौसा, यूरबा यूनानी और काज़की।

किसी धार्मिक ग्रन्थ की आज्ञाकारी के लिए सब से प्रथम यह देखना चाहिए कि वह स्वयं अपने विषय में क्या कहता है, इसलिए अब आईए देखते हैं कि क़ुरआन अपने विषय में क्या कहता है।

१. यह अल्लाह की ओर से उतारा गया है।

“और यह क़ुरआन मेरी ओर ‘वह्य’ किया गया ताकि मैं इसके द्वारा तुम्हें और जिस तक यह पहुँचे सबको सचेत करूँ।" (सूरह अन्आम:१९)

“हे नबी! हम ही ने तुम पर क़ुरआन एक विशेष ढंग से उतारा।" (सूरह दहर:२३)

“हम इस क़ुरआन के द्वारा जिसको तुम्हारी ओर वह्य कर भेजा है एक बहुत ही उत्तम प्रिय कहानी सुनाते हैं जिसके विषय में इससे पहले तुम बिल्कुल ही अनजान थे” (सूरह यूसुफ़:३)

"हम ने तुम्हें बार-बार दुहराने वाली सात आयतें तथा महा क़ुरआन दिया।" (सूरह हिज्र:८७)

“और तुमको क़ुरआन (अल्लाह) जो तत्वदर्शी तथा ज्ञान वाला है की ओर से दिया जा रहा है" (सूरह नमल:६)

“क्या इन लोगों के लिए यह अधिक नहीं है कि हमने तुम पर किताब (धर्मग्रन्थ) उतारी, जो इन्हें पढ़कर सुनाई जाती है, निश्चय ही इसमें ईमानवालों के लिए दयालुता तथा अनुस्मारक है" (सूरह अनकबूत:५१)

"यह किताब हम ने तुम्हारी ओर सत्य के साथ उतारी है, अतः तुम अल्लाह ही की इबादत (उपासना) करो धर्म को उसके लिए विशेष करते हुए" (सूरह ज़ुमर:२)

(अर्थात उसके साथ किसी को उपासना में साझीदार मत बनाओ।)

इससे पता चलता है कि क़ुरआन अल्लाह की किताब है। इस समय संसार में क़ुरआन के अतिरिक्त कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं है, जो प्रत्यक्ष रूप में अल्लाह की किताब होने का दावा करे।

बल्कि क़ुरआन ने तो नबी ﷺ को भी चेतावनी दी है कि:

"अगर तुम ने अपनी ओर से कोई बात कह के क़ुरआन की ओर सम्बन्धित किया तो हम तुम्हारा दाहिना हाथ पकड़ लेते, और तुम्हारी गर्दन की रग काट देते" (सूरह हाक्क़:४५)

और जब ऐसा नहीं हुआ तो मालूम हुआ कि पूरा क़ुरआन अल्लाह की ही ओर से है। इसलिए एक स्थान पर तो क़ुरआन ने यह स्पष्ट भी कर दिया कि नबी ﷺ जो कुछ कहते हैं वह वह्य के द्वारा ही कहते हैं। (सुरह नजम:३)

२. क़ुरआन एक ऐसा धर्मशास्त्र है कि सारे मनुष्य मिल कर भी वैसा ग्रन्थ नहीं बना सकते।

"कह दो! यदि मनुष्य और जिन्न इस के लिए इकठ्ठा हो जाएं कि इस क़ुरआन जैसी कोई चीज़ लाएं, तो वे इस जैसी कोई चीज़ न ला सकेंगे।

चाहे वे परस्पर एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न बन जाएं" (सूरह बनी इस्राईल:८८)

क़ुरआन ने यह चैलेंज उन लोगों को दिया था जो अपने आपको अरबी भाषा का महान विद्वान विचार करते थे। उनके मुक़ाबले में नबी ﷺ अनपढ़ थे, फिर भी वह कहते थे कि यह मुहम्मद अपनी ओर से लाते हैं। इस पर क़ुरआन ने यह चैलेंज़ किया कि तुम और जिन्न मिलकर भी क्या ऐसा क़ुरआन ला सकते हो? उत्तर यही रहा है कि नहीं ला सके।

क़ुरआन ने केवल दस सूरतें लाने के लिए चैलेंज किया:

"क्या वह कहते हैं: उसने इसे स्वयं गढ़ लिया है? कह दो ! अच्छा इस जैसी गढ़ी हुई दस सूरतें ले आओ, और अल्लाह के अतिरिक्त जिस किसी को चाहो बुला लो यदि तुम सच्चे हो।" (सूरह हूद-१३)

जब वह दस सूरतें लाने में भी असफ़ल रहे तो फिर क़ुरआन ने केवल एक सूरह लाने का चैलेंज कर दिया।

"यदि तुम उस चीज़ के विषय में जो हम ने अपने बन्दे पर उतारी है सन्देह में हो तो उस जैसी एक 'सूरह' ला कर दिखा दो, और अल्लाह के अतिरिक्त तुम जिसे चाहो अपनी सहायता के लिए बुला लो, यदि तुम सच्चे हो" (सूरह बक़रा-२३)

3. क़ुरआन में शिफ़ा (स्वास्थ) और रहमत (दयालुता) है।

"और हम जो क़ुरआन से उतारते हैं इसमें ईमान लाने वालों के लिए शिफ़ा (स्वास्थ) और दयालुता है, और अत्याचारियों के लिए इसमें घाटा ही घाटा है" (सूरह बनी इस्राईल-८२)

अर्थात क़ुरआन हर प्रकार के हृदय तथा शारीरिक रोगों से शिफ़ा करता है। परन्तु अनिवार्य है कि उस पर ईमान लाया जाए, हृदय में उसे बसाया जाए, उसके अनुसार जीवन व्यतीत किया जाए। और जो लोग उस पर ईमान नहीं लाते, बल्कि उसके ईशवाणी होने को झुठलाते हैं ऐसे लोगों के लिए घाटा ही घाटा है, न तो वह संसार में उससे कोई लाभ उठा सकेंगे न प्रलय दिवस में। इसी प्रकार न तो वह उसके द्वारा अपने हृदय का रोग दूर कर सकेंगे न शरीर का। सूरह तौबा में आया है:

"और जब कोई सूरह उतारी जाती है तो कुछ लोग यह पूछते हैं कि इस सूरह ने तुम में से किसके ईमान को बढ़ाया? तो जो लोग ईमान लाए इस सुरत ने उनके ईमान में प्रगति प्रदान किया और वह प्रसन्न हो उठे। फिर जिनके हृदयों में रोग है इस सूरह ने उनके रोग को और बढ़ा दिया और वह कुफ़्र की अवस्था में ही मर गए।" (सूरह तौबा-१२४, १२५)

४. क़ुरआन को अल्लाह ने अरबी भाषा में उतारा

क्योंकि जिस पर उतारा गया था वह अरबी थे। उनके प्रथम संबोधित भी अरबी थे। इसलिए किसी और भाषा में उतारता तो बड़ी सरलता से उसे ठुकरा देते।

"और इसी प्रकार (हे नबी) हम ने तुम्हारी ओर अरबी क़ुरआन अवतरित किया" (सूरह शूरा-७)

"और यदि हम इसे अजमी (अरबी भाषा के अतिरिक्त) क़ुरआन बना देते तो ये लोग कहते इसकी बातें क्यों न खोल-खोल कर प्रत्यक्ष की गईं, यह क्या कि एक अजमी और एक अरबी" (सूरह हा-मीम सज्दा-४४)

"यह वह पुस्तक है जिसकी बातें खोल-खोल कर प्रत्यक्ष की गई हैं। क़ुरआन अरबी में उन लोगों के लिए है जो ज्ञान रखते हैं।" (सूरह हा-मीम सज्दा-३)

५. क़ुरआन की महानता

क़ुरआन इस पृथ्वी पर अल्लाह का कलाम है, जिसमें उसने पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों के उत्तरदायित्व तथा अधिकारी होने को खोल-खोल कर बयान किया है, ताकि वह दोनों संसारों में सफ़ल रहे, परंतु देखने में यही आया है कि वह इन सब बातों से निश्चेत पड़ा हुआ है। जब कि क़ुरआन की महानता यह है कि अगर पर्वत जैसी महान वस्तु में भी प्राण होता और उसको क़ुरआन दिया जाता तो वह काँपने लगता।

"अगर हम क़ुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तुम उसको देखते कि वह अल्लाह के भय से फटा जा रहा है। और यह बातें हम लोगों के लिए इसलिए बयान करते हैं ताकि वह विचार करें" (सूरह हश्र-२१)

इसलिए प्रलय दिवस को नबी ﷺ यह शिकायत करेंगे:

"और रसूल कहेंगे, हे रब! निश्चय ही मेरी जाति वालों ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा था" (सूरह फ़ुरक़ान-३०)

९. क़ुरआन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसकी शिक्षाएं संसार में रहने वाले सारे मनुष्यों के लिए हैं।

इसीलिए क़ुरआन बार-बार यह कह कर संबोधित करता है 'ऐ लोगों', 'ऐ मनुष्यों', देखिए उदाहरण के लिए:

"ऐ लोगों अपने उस रब की उपासना करो जिसने तुम्हें और तुम से पहले के लोगों को पैदा किया, ताकि तुम (उसकी याचना से) बच सको" (सूरह बक़रा-२१)

"हे मनुष्य! किस चीज़ ने तुझे अपने उदार रब के बारे में धोखे में डाल रखा है" (सूरह इन्फ़ितार-६)

इस समय पृथ्वी पर यह तन्हा धर्मशास्त्र है जो सारे मनुष्यों को संबोधित करते हुए इसे ग्रहण करने का आदेश देता है। इसलिए यह विचार गलत है कि यह किसी एक जाति की धर्मपुस्तक है, बल्कि यह हर उस व्यक्ति की धर्मशास्त्र है जो इसे ग्रहण कर ले।

इसीलिए सूरह "सबा" में बड़े ही प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह ने बता दिया है कि हे मुहम्मद!

"हम ने तुम्हें सारे ही मनुष्यों के लिए शुभसूचक तथा सचेत करने वाला बनाकर भेजा है, परंतु अधिकतर लोग जानते नहीं।" (सूरह सबा-२८)

शुभ-सूचक उनके लिए जो इसे ग्रहण करें, और सचेत करने वाला उनके लिए है जो इसे ठुकरा दें। यह विचार कि क़ुरआन में जो कुछ आया है उससे मेरा क्या संबन्ध? यह वह लोग हैं जो क़ुरआन की वास्तविकता को समझते नहीं। बस इनके लिए परलोक में यातना ही यातना है और ग्रहण करने वालों के लिए स्वर्ग और उसकी नेमतें।

७. क़ुरआन एक ऐसा धर्मग्रन्थ है कि जिसको जितनी बार भी पढ़ा जाए उसमें हर बार नूतनता तथा नवीनता का अनुभव होता है और ऐसा प्रतीत होता है कि

अभी-अभी उतरा है। उसके पाठ से नेत्र भीग जाते हैं, हृदय को शान्ति प्राप्ति हो जाती है और सारी इन्द्रियें स्थिर हो जाती हैं।

> “अल्लाह ने सर्वोत्तम बात उतारी है, एक ऐसा ग्रन्थ जिसके सभी भाग परस्पर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, और जिन्हें बार-बार दुहराया गया है। इससे उनके रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अल्लाह से डरते हैं। फिर उनके शरीर और हृदय नर्म पड़ कर अल्लाह का स्मरण करने लगते हैं। यह अल्लाह का मार्गदर्शन है। जिससे वह सीधे मार्ग पर ले आता है जिसे चाहता है, और जिसे अल्लाह ही पथभ्रष्ट कर दे उसके लिए कोई मार्ग दिखाने वाला नहीं है।" (सूरह ज़ुमर-२३)

क़ुरआन की इन विशेषताओं को जान लेने के पश्चात अब आईए मैं संक्षेप में क़ुरआन व्याख्या का वर्णन कर दूँ। क़ुरआन समझने के लिए दो विशेष साधन हैं।

प्रथमः स्वयं क़ुरआन

द्वितीयः क़ुरआन के अतिरिक्त साधन

प्रथम: स्वयं क़ुरआन का अर्थ है कि क़ुरआन एक बात को विभिन्न प्रकार से बयान करता है। इसलिए अगर आप इस विषय में सम्पूर्ण ज्ञान चाहते हैं तो सबसे प्रथम यह करें कि उन सारी आयतों को इकट्ठा कर लें, और फिर उनको अपने विषय के अनुसार तरतीब दे लें। इस प्रकार आप को क़ुरआन का मूल सिद्धांत इस विषय में प्रकट हो जाएगा। क़ुरआन ने स्वयं इसकी ओर विभिन्न आयतों में संकेत किया है।

> “अल्लाह ने सर्वोत्तम बात उतारी है, एक ऐसी किताब जिसके सभी भाग परस्पर मिलते-जुलते हैं और बार-बार दुहराए गए हैं” (सूरह ज़ुमर-२३)

> “और हम ने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर एक उदाहरण को विभिन्न प्रकार से बयान कर दिया है, परंतु अधिकतर लोगों ने इसका इंकार कर दिया।" (सूरह बनी इस्राईल-८९)

तथा देखिए: सूरह कहफ़ आयत नं. ५४, सूरह ताहा आयत नं. ११३, सूरह अन्आम आयत नं.४६

उदाहरण के लिए देखिए सूरह बक़रा आयत ३७:

> “फिर आदम ने अपने रब से कुछ शब्द पा लिए तो उसने उसका पश्चाताप स्वीकार कर लिया"

यह शब्द क्या थे, देखिए सूरह आराफ़ आयत २३:

> “दोनों बोले: हमारे रब! हम ने अपने ऊपर अत्याचार किया, यदि तूने हमें क्षमा न किया और हम पर दया न किया तो निश्चय ही हम घाटा उठाने वालों में से हो जाएंगे"

इसी प्रकार रसूलों की कहानियाँ तथा जातियों का कथन क़ुरआन ने भिन्न-भिन्न स्थानों पर उनसे शिक्षा प्राप्त करने के लिए बयान किया है।

इन सब आयतों को एक स्थान पर इकट्ठा करें तो उनसे उस नबी के विषय में बहुत कुछ जानकारी तो मिल जाएगी क़ुरआन का व्याख्या क़ुरआन से करने के लिए महान विद्वान “शेख मुहम्मद अमीन शनक़ीती” ने “अज़वाउल बयान” नाम की एक तफ़सीर लिखी है जो आठ भागों में है, और इस समय अरबी तफ़सीरों में सबसे अधिक प्रसिद्ध है।

फिर चूँकि क़ुरआन अरबी भाषा में उतरा है जैसा पहले आ चुका है इसलिए इसको समझने के लिए अरबी भाषा का विद्वान होना अनिवार्य है, जो लोग क़ुरआन की व्याख्या अनुवादों से करते हैं उनसे अवश्य त्रुटि हो सकती है। इसी प्रकार जो लोग अनुवाद पढ़कर क़ुरआन पर टिप्पणी करने लगते हैं वह भी ग़लती करते हैं।

द्वितीय साधन: क़ुरआन को समझने और उसकी व्याख्या करने का द्वितीय साधन क़ुरआन लाने वाले मुहम्मद ﷺ की सही हदीस (कथन) तथा आप का व्यवहार है। इसलिए कि क़ुरआन को उससे अधिक कोई और नहीं समझ सकता जिस पर उतारा गया, इसलिए प्रत्येक कर्म जो मुहम्मद ﷺ ने किया

और जो कुछ कहा वही क़ुरआन की सही व्याख्या है। स्वयं क़ुरआन में इस ओर संकेत किया गया है। उदहारण के लिए देखिए अल्लाह का यह कहना:

"हम ने इस किताब को तुम्हारी ओर सत्यता के साथ उतारा है, ताकि तुम लोगों के बीच अल्लाह के बताए हुए संविधान के अनुसार निर्णय करो, और तुम विश्वासघात करने वालों की ओर से झगड़ने वाले मत बन जाओ।" (सूरह निसा-१०५)

"और हम ने तुम पर ज़िक्र (क़ुरआन) उतारा है, ताकि तुम लोगों को इसकी व्याख्या बयान करो, जो उनकी ओर उतारा गया है, सम्भव है वह सोच-विचार करें।" (सूरह नहल-४४ एवं ६४)

इसी प्रकार एक सहीह हदीस में यह आया है:

"मुझे क़ुरआन दिया गया है, और उसके साथ उसी की तरह" (मुसनद अहमद)

इसीलिए हदीस इकट्ठा करने वालों ने अपने हदीस ग्रन्थों में तफ़सीर अध्याय रखा है अर्थात "सुन्नः" जो क़ुरआन की व्याख्या है, इसलिए क़ुरआन की कोई व्याख्या जो सही "सुन्नः" से टकराएगी वह अनुचित मानी जाएगी।

कुछ लोगों का विचार है कि कभी-कभी सही "सुन्नः" क़ुरआन की अपनी व्याख्या से टकरा जाती है, परंतु यह बात बिल्कुल ग़लत है क्योंकि सही हदीस का अर्थ ही यह है कि वह क़ुरआन के विरुद्ध नहीं है।

४. क़ुरआन की व्याख्या करते हुए हमें स्वयं क़ुरआन या हदीस में कोई विवरण न मिले तो फिर हमें सहाबा (नबी के साथियों) के वचन की ओर प्रवृत्ति करनी चाहिए, क्योंकि क़ुरआन को उतरते हुए उन्होंने स्वयं देखा है। इसलिए उनके विचार को क़ुरआन की व्याख्या करते हुए अधिक महत्व देनी चाहिए। विशेषकर चारों ख़ुलफ़ा, अबू बक्र, उमर, उस्मान तथा अली। उनके पश्चात धर्मशास्त्र विद्वान जैसे, अब्दुल्लाह बिन मसऊद, अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ीयल्लाहु अन्हुम अजमईन इत्यादि।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद का एक बहुत प्रसिद्ध कथन है:

> “मैं अल्लाह की शपथ खाकर बताता हूँ जिसके अतिरिक्त कोई और नहीं है कि क़ुरआन में कोई ऐसी आयत नहीं है जिसके विषय में मुझे यह ज्ञान न हो कि यह किसके बारे में उतरी, कहाँ उतरी। अगर मुझे यह ज्ञान हो जाए कि किसी के पास क़ुरआन के विषय में मुझ से अधिक ज्ञान है तो मैं उसकी ओर अपनी सवारी फेर दूँ।"

एक सहीह हदीस में अब्दुल्लाह बिन अब्बास के लिए नबी ने यह दुआ की: “हे अल्लाह इसको दीन में समझ-बूझ दे और क़ुरआन की व्याख्या सिखा” इसलिए उनको “तरजुमानुल क़ुरआन” कहा गया है। (क़ुरआन के महान विद्वान)

५. और फिर इसके बाद “ताबई" के वचन को देखना चाहिए (ताबई जिसने सहाबी से ज्ञान सीखा हो) क्योंकि इन्होंने क़ुरआन की व्याख्या सहाबा से लिया है। इन “ताबईयों” में मुजाहिद, सईद बिन जुबैर इत्यादि हैं।

मुहम्मद ﷺ का संक्षिप्त जीवन परिचय

इस्लाम से पहले अरबों में विभिन्न विश्वास के लोग पाए जाते थे। उनको दो दलों मे बाट सकते हैं। एक अधर्मी जो अल्लाह ही का इंकार करते थे और कहते थे कि हमारे इस जीवन के पश्चात कोई और जीवन नहीं है, हम तो केवल इस जीवन में ही खायें पीयेंगे और फिर मर जाएंगे, न हमें दुबारा उठाया जाएगा और न हम से हमारे कर्मों का बदला लिया जाएगा।

दूसरा दल धार्मिक लोगों का था, यह भी दो भागों में बटे हुए थे। एक उनका जो एकेश्वरवाद पर विश्वास करते थे, जिनको "हनीफ़िया" कहा जाता था परंतु यह केवल चन्द लोग थे। दूसरा भाग उनका था जो मूर्ति पूजा करते थे, उनका विश्वास था कि फ़रिश्ते और पूर्वजों की आत्माऐं आध्यात्मिक शक्ति हैं इनकी पूजा से अल्लाह को प्रसन्न किया जा सकता है, इसीलिए उन्होंने उनकी मूर्तियाँ बना रखी थीं, जिनके आगे सर झुकाते थे, और उनसे अपनी आवश्यकताएं माँगा करते थे। और यह विश्वास रखते थे कि यह लोग अल्लाह के पास हमारी अनुशंसा करेंगे।

इन बुतों में प्रसिद्ध बुत यह थे: हुबल, वद, सुवाअ, यग़ूस, यऊक़, नस्र, उज़्ज़ा, लात और मनात। इसी प्रकार इब्राहीम, ईसा, मरियम अलैहिमुस सलाम के भी बुत बना रखे थे। बल्कि उनको तो काबे में रखा हुआ था।

ऐसी दशा में प्रेषित मुहम्मद ﷺ को अल्लाह ने नबी बनाकर भेजा, ताकि लोगों को मूर्ति पूजा छोड़कर एक अल्लाह की उपासना का निमन्त्रण दें और अधर्मियों को धर्म का मार्ग प्रदान करें।

मुहम्मद ﷺ के जीवन को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं।

पहला भागः जो आप के जन्म से प्रारम्भ होता है और नुबूवत मिलने तक, अर्थात चालीस वर्ष की आयु तक फैला हुआ है।

दूसरा भागः जो नुबूवत के पश्चात, अर्थात चालीस वर्ष की आयु से प्रारम्भ होता है और आप के अंतिम जीवन पर समाप्त होता है।

पहला भागः आप के जीवन चरित्र से प्रथम हम यहाँ कुछ अरब देश और मक्का नगर पर प्रकाश डालते हैं। अरब की भूमि सीरिया से लेकर यमन और लाल सागर से लेकर अरब खाड़ी तक फैली हुई है। इनका वंश इस्माईल बिन इब्राहीम से प्रारम्भ होता है और प्रेषित मुहम्मद ﷺ हज़रत इस्माईल ही की संतान से थे।

आप का जन्म १२ रबीउल अव्वल, सोमवार तदनुसार २० अथवा २२ अप्रैल ५६९ ईस्वी को मक्के में हुआ। * आप के पिता अब्दुल्लाह का पहले ही देहान्त हो चुका था। सहीह अहादीस में आया है कि आप की माता ने देखा कि आप के जन्म के बाद एक ऐसा प्रकाश निकला जिसने शाम तक के जगत को जगमगा दिया।

मुस्तदरक हाकिम (२/६००), मुसनद अहमद (४/१२७)

जब आप पैदा हुए तो किसी निकट के गाँव में भेज दिए गए, जहाँ आप ने “हलीमा सादिया” का दूध पिया और देहात के खुले वातावरण में पलते रहे। परंतु यहाँ एक ऐसा चमत्कार घटित हुआ जिस से घबरा कर हलीमा ने आप की माता आमिना के पास वापस कर दिया। जैसा कि सहीह मुस्लिम में वर्णन किया गया है:

“आप ﷺ कुछ मित्रों के संघ खेल रहे थे कि इतने में जिब्रील (अलैहिस्सलाम) आए और आपको नीचे लिटा कर आप के सीने को फाड़ा और उसमें से आपके हृदय को निकाला और फिर उसको “ज़मज़म" के पानी से जो एक सोने के बरतन में लाए थे उसको धोया, फिर उसको अपने स्थान पर वापस कर दिया।" (सहीह मुस्लिम १/१४७)

उस समय आप पाँच वर्ष के थे। इस चमत्कार का अर्थ है कि अल्लाह ने आप के हृदय से हर प्रकार के गलत विचारों, शिर्क एवं मूर्ति पूजा इत्यादि को निकाल दिया और एक प्रकार से आप को भविष्य में दी जाने वाली नुबूवत के लिए तैयार किया जाने लगा। अभी छ: वर्ष के भी न होने पाए थे कि आप की माता “आमिना” का भी देहान्त हो गया। अब आप एक अनाथ जीवन व्यतीत करने लगे। मगर आपके दादा “अब्दुल मुत्तलिब" ने अब आप के पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी ले ली, परंतु जब आप की आयु आठ वर्ष की हुई तो वह भी देहान्त कर गए और अपने पुत्र अबु तालिब को आप का उत्तरदायी बनाया। अबु तालिब को आप से बहुत प्रेम था, वह हर प्रकार से आप का विचार रखते थे, अपने साथ व्यापार आदि की यात्रा में भी साथ रखते थे; आप ﷺ भी उनकी हर प्रकार सहायता करते थे (सहीह बुख़ारी)।

और सहीह मुस्लिम में है कि आप मक्के वालों की बकरियाँ चराया करते थे।" (सहीह बुख़ारी (४/१४१) सहीह मुस्लिम (१४/४-५))

इससे स्पष्ट होता है की अबु तालिब की आर्थिक अवस्था कुछ अच्छी नहीं थी, इसलिए आप बकरियाँ चरा कर उनकी सहायता करते थे।"

आपका पहला विवाहः

अभी आप पचीस वर्ष के एक युवक थे कि आप की चर्चा पूरे क़ुरैश में प्रसिद्ध हो गई कि आप बड़े सच्चे और नेक आदर्श के हैं। यह सुनकर कुरैश ही की एक मान्य महिला -जिनका नाम ख़दीजा था इस समय ख़दीजा की आयु ४० वर्ष की थी, जो दो बार विधवा हो चुकी थीं- आप ﷺ को विवाह का पैग़ाम दिया, जिसे आप ने स्वीकार कर लिया। विवाह के बाद आप हज़रत ख़दीजा के घर में रहने लगे, जो "मरवा" से थोड़े फ़ासले पर है। आज कल वहाँ क़ुरआन पाठशाला बना हुआ है जहाँ छोटे-छोटे बच्चे क़ुरआन स्मरण करते हैं; आप हिजरत करने तक इसी घर में रहे। हज़रत ख़दीजा से छः बच्चे पैदा हुए, दो लड़के क़ासिम और अब्दुल्लाह जिनकी उपाधि तैय्यब और ताहिर थी, दोनों पुत्र छोटी आयु ही में देहान्त कर गए। चार पुत्रियाँ ज़ैनब, उम्मे कुलसूम, फ़ातिमा और रूकैय्या, यह चारों मुसलमान हुईं। हिजरत के तीन वर्ष पूर्व हज़रत ख़दीजा का देहान्त हो गया।

जब आप की आयु पैंतीस वर्ष की हो गई तो क़ुरैश ने "काबे" को दुबारा बनाने की योजना बनाई, परंतु जब "हजरे अस्वद" को अपने स्थान पर रखने का समय आया तो आपस में भिन्न हो गए, बल्कि युद्ध के निकट हो गए,

क्योंकि प्रत्येक क़बीले की इच्छा थी कि इस पवित्र काम को हम करें। अंत में सबसे अधिक आयु के पुरूष ने यह परामर्श दिया कि कल जो व्यक्ति सबसे पहले काबे में प्रवेश करेगा वही मध्यस्थ होगा। दूसरे दिन मुहम्मद ﷺ ने सब से पहले काबे में प्रवेश किया, आप को देखते ही सारे क़बीले वाले कह उठे कि यह तो बड़े न्यायधारी हैं हम इनको पंच स्वीकृत करते हैं। जब यह समस्या आप के समक्ष रखी गई तो आप ने एक चादर मंगवाया और उसमें "हजरे अस्वद" को रख दिया और सभी क़बीले वालों से कहा चादर का कोई भाग पकड़ कर उसको ऊपर उठाओ, फिर आप ने हजरे अस्वद को चादर में से निकाला और उसके स्थान पर रख दिया। (मुस्नद अहमद (३/४२५) तथा हाकिम मुस्तदरक (३/४५८) हाकिम ने सहीह कहा है।)

इस प्रकार आप के इस उपाय से एक भंयकर युद्ध रूक गया। इसमें जहाँ आप के बुद्धिमान होने का प्रमाण मिलता है वहीं यह बात भी सिद्ध हो जाती है कि आप नुबूवत से प्रथम ही अपनी जाति में विश्वसनीय प्रसिद्ध थे।

चालीस बर्ष के होने वाले थे कि आप को ऐसे स्वप्न दिखाई देने लगे जो दूसरे दिन वैसा ही होता, यह एक प्रकार से आप को बताया जा रहा था कि आप पर "वह्य" उतरने वाली है। अब आप को जब भी अवसर मिलता "हिरा" नामी पर्वत पर चले जाते और अल्लाह के स्मरण में लग जाते, अधिकतर तनहा रहते और इस तनहाई में अल्लाह और उसके बनाए हुए संसार पर विचार करते रहते।

आप अपनी जाति को देखते जो मूर्ति पूजा मे लगी हुई थी, तो इससे आप को बड़ा दुख होता था। आप चाहते थे कि लोग शिर्क और मूर्ति पूजा छोड़ कर अल्लाह की उपासना करें, जिसने उनको और सारे संसार को बनाया है। इसीलिए आप को जब भी अवसर मिलता हिरा नामी पर्वत की एक गुफ़ा में चले जाते और अल्लाह के ध्यान और उपासना में लग जाते।

जब आप की आयु चालीस वर्ष की हो गई तो सोमवार के दिन रमज़ान में एक चमत्कार प्रकट हुआ। आप अल्लाह की याद में लीन थे कि जिब्रील आए और कहा: मैं अल्लाह का फ़रिश्ता हूँ और उसी के आदेश से आप के पास "वह्य" लेकर आया हूँ, इसलिए आप पढ़िए। आप ने कहा: मैं पढ़ना नहीं जानता। तब उसने आप को पूरी शक्ति से अपनी ओर खींच कर भींचा और फिर छोड़ दिया और कहा, पढ़िए। आप ने फिर कहा मैं पढ़ना नहीं जानता। उसने फिर अपनी ओर खीच कर भींचा और छोड़ दिया, फिर कहने लगा, पढ़िए। आपने फिर कहा मैं पढ़ना नहीं जानता। तीसरी बार फ़रिश्ते ने कहा:

> "पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने मनुष्य को जमे हुए रक्त से पैदा किया, पढ़ो तेरा रब बड़ा महान है, जिसने क़लम के द्वारा शिक्षा दी, मनुष्य को वह ज्ञान प्रदान किया जिसे वह नहीं जानता था।" (सूरह अलक़:१-५)

यह पहली वह्य थी, इसके पश्चात आप तुरंत घर लौट आए। आप का हृदय बड़े जोर से धड़क रहा था, आप ने घर जाते ही अपनी पत्नी ख़दीजा से कहा, मुझे कम्बल उढ़ा दो। जब आपका मन शांत हुआ तब आप ने सारी कथा

ख़दीजा को सुनाई और यह भी कहा कि मुझे अपनी जान का भय है। आप की पत्नी ने आप को तसल्ली दी और कहा: यह कैसे हो सकता है, आपको अल्लाह कदापि कष्ट नहीं पहुँचाएगा। आप तो सम्बन्धियों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं, सदैव सत्य बोलते हैं, लोगों का बोझ उठाते हैं, मेहमानों का आवभगत करते हैं, अनाथों की सहायता करते हैं तो ऐसे व्यक्ति को अल्लाह कैसे कष्ट देगा। फिर वह आप को अपने चचा के पुत्र "वरक़ा बिन नौफ़ल" के पास ले गई, जो ईसाई धर्म ग्रहण कर चुके थे और ईसाई धर्म कि पुस्तकें भी पढ़ चुके थे, तथा इंजील को अरबी भाषा में लिखते थे। उस समय उनकी आयु ९० वर्ष की थी। उसने आप से सारा हाल सुनने के बाद कहा, अल्लाह की शपथ! यह तो वही फ़रिश्ता है जो मूसा के पास आया था, मुझे विश्वास है कि आपको अल्लाह ने रसूल बनाया है। काश! मैं उस समय तक जीवित रह सकता जब आप कि जाति आप की विरोधी बन जाएगी और आप को यहाँ से निकाल देगी। आप ने आश्चर्य चकित होकर पूछा, क्या मुझे यहाँ से निकाल दिया जाएगा? उसने कहा, हाँ। फिर कहा, काश मैं उस समय जीवित रहता तो आप की भरपूर सहायता करता। इसके कुछ समय बाद वरक़ा का देहान्त हो गया।

फिर छ: माह तक "वह्य" नहीं आई जिसके कारण आप बहुत दुखी दिखाई देने लगे, यह एक प्रकार से आप की परीक्षा थी कि आप "वह्य" (जो अल्लाह) की ओर से होती है और वह जो शैतान की ओर से हृदय में डाली जाती है में अंतर कर सकें। फिर छ: मास के पश्चात "वह्य" यह थी:

"हे कम्बल ओढ़ने वाले उठ! और (लोगों को उनकी गुमराही से) डरा, और अपने रब की महानता बयान कर और अपने आप को हर प्रकार की गंदगी से पवित्र रख।" (सूरह मुदस्सिरः१-५)

(अर्थात वह गंदगी चाहे शिर्क की हो या मैल कुचैल की) (देखिए: बुख़ारी (८/६७८) तथा मुस्लिम (१/१४३))

अब आप के कंधों पर भटकती हुई मानव जाति को सत्य मार्ग दिखाने की महान जिम्मेदारी डाल दी गई, यहाँ से आप की नबूवत प्रारम्भ होती है। जिसके दो काल हैं। एक मक्का काल जो तेरह वर्ष तक और दूसरा मदीना काल, जो दस वर्ष तक आपके मृत्यु पर समाप्त होता है।

अब आईए प्रत्येक काल पर संक्षेप में प्रकाश डालते हैं।

मक्का काल:

जब मुहम्मद ﷺ ने इस्लाम धर्म का प्रचार आरम्भ किया तो सबसे पहले जो ईमान लायीं वह आप की महान पत्नी हज़रत ख़दीजा थीं, जिन्होंने आप की भरपूर सहायता की। फिर हज़रत अली जो आप के चचा अबू तालिब के पुत्र थे वह भी इस्लाम लाए, उनकी आयु उस समय केवल दस वर्ष की थी, और अधिक आयु वालों में से हज़रत अबू बक्र थे जिनकी आयु उस समय अड़तीस वर्ष की थी, इस्लाम लाए और सेवकों में हज़रत ज़ैद बिन हारिस इस्लाम लाए।

सहीह बुख़ारी की एक हदीस से प्रतीत होता है कि हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास तीसरे व्यक्ति हैं जो इस्लाम लाए। अर्थात हज़रत ख़दीजा तथा हज़रत अली के पश्चात जो इस्लाम लाए वह साद थे। (सहीह बुख़ारी (७१८३, १७०))

तीन वर्ष तक आप गुप्त निमंत्रण देते रहे और लोग इस्लाम में प्रवेश करते रहे। आप ने जिन्नों को भी इस्लाम की ओर बुलाया, और उनके एक समूह ने इस्लाम ग्रहण कर लिया।

तीन वर्ष व्यतीत होने के बाद अल्लाह ने यह आयत उतारी:

"और अपने सगे-सम्बन्धियों को अल्लाह से डराओ" (सूरह शुअरा:२१४)

अर्थात अपने निकटतम नातेदारों को इस्लाम का निमंत्रण दो और उनको आने वाली यातना से सचेत करो। वह यह कि मृत्यु के पश्चात आने वाले जीवन में केवल इस्लाम पर विश्वास लाने से ही स्वर्ग में प्रवेश पा सकते हैं, दूसरी दशा में वह सदैव के लिए नर्क में डाल दिए जाएंगे।

इस आयत के उतरने के बाद आप सफ़ा नामी एक पहाड़ी पर चढ़ गए और वहाँ खड़े होकर पुकारा: "या सबाहा"* यह सुनकर कुरैश क़बीले के लोग इकट्ठा हो गए। अब आप ने एक-एक समूह को पुकार-पुकार कर कहा: अगर मैं तुमसे यह कहूँ कि इस पहाड़ी के पीछे से तुम पर आक्रमण होने वाला है तो क्या तुम मेरी बात को सत्य मानोगे? तो लोगों ने कहा: हम ने कभी आप को झूठ बोलते हुए नहीं पाया है, इसलिए आप की बात पर विश्वास करेंगे। तब आप ने उनको संबोधित करके कहा: मैं तुम को अल्लाह

की यातना से सचेत करता हूँ। # इसी प्रकार आप ने उनको मूर्ति पूजा तथा शिर्क से वर्जित किया और एक ईश्वर की उपासना की ओर बुलाया और यह भी बता दिया कि अगर तुमने मेरी बात न सुनी तो तुम्हें कठोर तथा भयानक यातना घेर लेगी।

लोग यह बातें सुनकर बहुत झिल्लाए और कहने लगे: क्या इसीलिए तुम ने हमें इकट्ठा किया था? उनमें अबु लहब भी था जिसने कहा: तुम्हारा नाश हो, क्या तुम ने हमें इसीलिए इकट्ठा किया था? इस पर अल्लाह ने सूरह लहब अवतरित किया जिसका अनुवाद यह है:

"अबू लहब के दोनों हाथ टूट गए, वह स्वयं भी विनष्ट हो गया। न उसका धन उसके काम आया, न कुछ जो उसने कमाया था। वह शीघ्र ही भड़कती हुई अग्नि में प्रवेश करेगा। और उसकी पत्नी भी जो ईंधन लादने वाली है। उसकी गर्दन में खजूर के रेशों की रस्सी पड़ी होगी।"

* इसका परिभाषिक अर्थ है: भोर में आक्रमण करना! अरबों में यह रीति थी कि किसी भीषण भय के समय कोई व्यक्ति ऊँची पहाड़ी पर चढ़ कर यह शब्द कहता था और लोग इसको सुनकर इकट्ठा हो जाते थे।

'देखिए: सहीह बुख़ारी (८/७३७) तथा सहीह मुस्लिम (१/१९४)

अब आप ने प्रत्यक्ष रूप से इस्लाम का निमन्त्रण देना प्रारम्भ कर दिया और लोगों को भिन्न-भिन्न अवसरों पर यह भाषण देने लगे कि इस संसार का रचियता तो केवल एक अल्लाह है। इसलिए वही उपासना योग्य है, उसको छोड़कर किसी और की उपासना करना किसी और से सहायता माँगना किसी और के सामने सर झुकाना सब निषेध है; और अल्लाह ने आप को अंतिम

नबी बनाकर भेजा है, आप पर विश्वास किए बिना कोई सफ़लता नहीं प्राप्त कर सकता।

एक तरफ़ आप पूरी शक्ति से इस्लाम का निमन्त्रण दे रहे थे तो दूसरी ओर पूरी शक्ति से क़ुरैश आप के विरुद्ध संगठन कर रहे थे।

क़ुरआन बराबर उतरता जा रहा था जिसमें समय के अनुकूल ठीक-ठीक अनुदेश दिए जा रहे थे। जो हृदयों में प्रवेश होकर नए समाज की नीव रख रहा था। आप की चर्चा अब मक्का से निकल कर दूसरे शहरों में पहुँचने लगी और लोग समूह बनाकर आते, क़ुरआन सुनते और इस्लाम स्वीकार कर लेते। इधर क़ुरैश आप के विरुद्ध झूठी बातें फैलाने में लगे रहे। कभी आप को कवि कहा, कभी उन्मत्त; "ज़िमाद" जो अज़्द शनोआ वंश का था, एक बार मक्के आया और उसने सुना की कोई नबी आया है जिसको मक्के वाले उन्मत्त कहते हैं, वह जिन्नों को उतारना जानता था, इसलिए आप के पास पहुँच गया। और कहा: मैं आप का जिन्न उतार सकता हूँ। नबी ﷺ ने पढ़ा, सारी प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं, हम उसी की प्रशंसा करते हैं और उसी से सहायता माँगते हैं। जिसको अल्लाह सत्य मार्ग दिखा दे उसको कोई गुमराह नहीं कर सकता और जिसको गुमराह कर दे उसे कोई सत्य मार्ग पर नहीं चला सकता। मैं गवाही देता हूँ कि उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं और मुहम्मद उसके दास तथा रसूल हैं। ज़िमाद ने कहा: आप इसको दुबारा सुनाएं, इस प्रकार उसने तीन बार सुना और फिर कहने लगा: मैं अल्लाह की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैंने पुरोहितों, जादूगरों और कवियों को बार-बार सुना है परंतु आप से जो शब्द मैंने सुने हैं किसी और से कभी नहीं सुना।

फिर उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया, अपनी ओर से तथा अपनी जाति की ओर से इस्लाम पर बैयत कर ली। *

* देखिए: सहीह मुस्लिम (२/५९३) इसी प्रकार अबू ज़र के इस्लाम स्वीकार करने की घटना के लिए देखिए: सहीह बुख़ारी (७/१७३) तथा सहीह मुस्लिम (४/१९२३)।

क़ुरआन और उसकी शिक्षा लोगों के दिलों में उतर रही थी और मक्के के काफ़िर विभिन्न जतनों से लोगों को इससे दूर रख रहे थे। यहाँ तक कि जब उनकी कोई चाल सफ़ल होती हुई दिखाई नहीं दी तो उन्होंने मुहम्मद ﷺ और आप के साथियों को जो इस्लाम स्वीकार कर चुके थे उनको कष्ट पहुँचाने की ठान ली।

एक समय ऐसा हुआ कि आप काबा में नमाज़ पढ़ रहे थे, कुछ मक्के के काफ़िर आए और उन्होंने आप के ऊपर जब आप सज्दे में गए तो ऊँट की ओझड़ी तथा उसका रक्त इत्यादी आप के ऊपर डाल दिया जिसके कारण आप सज्दे से उठ नहीं पा रहे थे। इसकी सूचना आप की पूत्री फ़ातिमा को हुई तो वह भागती हुई आईं और आपके ऊपर से गंदगी साफ़ किया। नबी ﷺ को इससे बड़ा कष्ट हुआ, आप ने नमाज़ के पश्चात क़ुरैश को तीन बार शाप दिया और अम्र बिन हिशाम, उत्बा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ, वलीद बिन उत्बा, उमय्या बिन ख़लफ़, उक़बा बिन अबी मुईत और उमारा बिन वलीद के नष्ट होने की शाप दी।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद कहते हैं कि बदर के रण क्षेत्र में मैंने सबको क़त्ल होते हुए देखा और इन सबको एक कुएं में डाल दिया गया।

नबी ﷺ ने उनको देखकर कहा: इन कुएं वालो को धिक्कार लगी है।

मक्के के काफ़िर नबी ﷺ को तथा आप के साथियों को विभिन्न प्रकार से कष्ट पहुँचाते रहे नए मुसलमानों को तरह-तरह से सताते रहे, जिनको पढ़ कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। किसी को अरब के रेगिस्तानों में गर्म धूप में लिटा देते उनके सीने पर गर्म पत्थर रखते, किसी को पानी में डुबकियाँ देते, किसी के गले में गर्म-गर्म सलाख डाल देते। बिलाल नामक सेवक को तो बच्चों को दे दिया जो आपके गले में रस्सी डाल कर मक्का की गलियों में ऐसे लेकर फिरते थे जैसे कोई गाय और बकरी लेकर फिरता है। यह सब होने के बावजूद भी किसी ने इस्लाम धर्म नहीं छोड़ा। नबी ﷺ ने निर्णय किया कि कुछ मुसलमानों को हब्शा (जिसको इथोपिया) कहते हैं भेज दिया जाए। क्योंकि आप ने वहाँ के राजा नजाशी के विषय में सुन रखा था कि वह बड़ा सदाचारी और न्यायशील है। लेकिन मक्के के काफ़िरों ने इन देश त्याग लोगों का पीछा हब्शा तक किया और वहां के राजा को इनके विरुद्ध भड़काया। राजा ने इन देश त्यागियों को अपने दरबार में बुलाया और उनसे विभिन्न प्रकार के प्रश्न किए, उनमें से एक यह था कि तुम लोग हज़रत ईसा के विषय में क्या विचार रखते हो? इन देश त्यागियों ने हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब को अपना प्रतिनिधि बनाया। उन्होंने "सूरह मरियम" पढ़कर सुनाई जिसमे बताया गया है कि ईसा अल्लाह के दास हैं, उन्होंने लोगों को अल्लाह ही की उपासना का संदेश दिया उसमें इस बात का खंडन किया गया है कि अल्लाह ने किसी को अपना पुत्र बनाया। (सूरह मरयम-१९) इसके अतिरिक्त भी आप ने इस्लाम की शिक्षा संक्षिप्त शब्दों में प्रकट की। यह सुनकर राजा "नजाशी" रो पड़ा, यहाँ

तक कि उसकी दाढ़ी आँसूओं से भीग गई और उसके पास जो ईसाई पादरी बैठे थे वह भी रो पड़े। फिर नजाशी ने कहा: अल्लाह की शपथ! यह वाणी उसी दीप से निकला है जिसको लेकर "मूसा" आए थे, तुम लोग मेरी सल्तनत में शांति पूर्वक रहो तुम्हें यहाँ किसी प्रकार का कष्ट नहीं होगा। सहीह अहादीसों से यह भी प्रकट होता है कि स्वयं राजा नजाशी भी गुप्त में इस्लाम स्वीकार कर लिया और मुहम्मद ﷺ के नबी होने की पुष्टि की। जब हब्शा से मुसलमानों को वापस लाने में मक्का के काफ़िर असफ़ल रहे तो उन्होंने एक और चाल चली वह सामाजिक बहिष्कार था। उन्होंने बनू हाशिम को बता दिया कि जब तक तुम मुहम्मद ﷺ की हत्या नहीं कर देते या उनको हमारे सुपुर्द नहीं कर देते तुम्हारे संग हर प्रकार का सामाजिक बहिष्कार किया जाएगा। यह बड़ा ही कठिन समय था, मगर बनू हाशिम ने आप को नहीं छोड़ा। आप के चचा अबू तालिब बनू हाशिम को लेकर एक घाटी में चले गए, जहाँ वह बकरियाँ चराकर अपना जीवन व्यतीत करते थे, खाने पीने की कोई वस्तु उनको प्राप्त नहीं होती थी। सहीह हदीसों से स्पष्ट होता है कि वृक्ष के पत्ते भी खाने पड़े थे। तीन वर्ष तक वह इस सामाजिक बहिष्कार में पड़े रहे। क़ुरआन उतर रहा था, और अल्लाह उनको पूरे धैर्य के साथ इन कठिनाईयों को झेलने का हुक्म दे रहा था। तीन वर्ष व्यतीत होने के पश्चात स्वयं मक्के वालों में भिन्नता पैदा हो गई और उन्होंने स्वयं ही सामाजिक बहिष्कार उठा लिया। नबी ﷺ ने एक समय मक्के वालों के लिए शाप भी दिया जिसके कारण ऐसा सूखा पड़ा कि लोगों को मुर्दार खाना पड़ा। अबू सुफ़्यान जो मक्के के सरदारों में से थे और अभी मुसलमान नहीं हुए थे। नबी ﷺ के पास भागते हुए आए और आप से सूखा समाप्त होने की दुआ कराई, आप

की दुआ से सूखा समाप्त हुआ और आकाश में जो धुआँ दिखाई दे रहा था, जिसको देख कर मक्के वाले भयभीत होते थे वह छंट गया, परंतु वह फिर भी मुसलमान नहीं हुए।

आपके चचा अबू तालिब का देहान्तः

सामाजिक बहिष्कार समाप्त होने के कुछ ही दिनों बाद अबू तालिब का देहान्त हो गया जो आपके लिए बहुत बड़े सहायक थे। उनके कारण मक्के के काफ़िर आप ﷺ को किसी प्रकार से कष्ट पहुँचाने से बचते थे, परंतु देहान्त के बाद अब वह स्वतंत्र हो गए थे और अब तो और अधिक आप को एवं आप के साथियों को सताने लगे।

ख़दीजा का देहान्तः

चचा के देहान्त के कुछ समय पश्चात आप कि पत्नी ख़दीजा का भी देहान्त हो गया जिसके कारण आप बहुत दुखी हुए।

मक्के से बाहर इस्लाम का प्रचारः

जब आपने देखा कि मक्के वाले आपके लिए अधिक कठोर बन गए हैं तो आपने मक्के से बाहर इस्लाम प्रचार की योजना बनाई और वहाँ से निकटतम नगर ताईफ़ चले गए, जहाँ बनू सक़ीफ़ का वंश रहता था। आप ने उनको इस्लाम का संदेश सुनाया परंतु उन्होंने आप को पत्थर मारा जिसके कारण आपके पाँव से रक्त बहने लगा, आप बहुत दुखी हुए यहाँ तक कि अल्लाह की ओर से यह संदेश आया कि अगर आप कहें तो पर्वत चलने लगें और

मक्के वालों को तथा उसके आसपास रहने वालों को कुचल कर रख दें। परंतु आप के हृदय में उस समय कोई ऐसा क्रोध पैदा नही हुआ बल्कि आप ने दुआ की, ऐ अल्लाह इनको सत्यमार्ग दिखा। सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम की एक हदीस से यह भी प्रकट होता है कि आप ने कहा: मैं विश्वास करता हूँ कि इनकी कोख से ऐसे लोग पैदा होंगे जो केवल तेरी ही उपासना करेंगे और किसी प्रकार का शिर्क नहीं करेंगे। (सहीह बुख़ारी (६/३१२) सहीह मुस्लिम (३/१४२०))

ताईफ़ में दस दिन बिताने के पश्चात आप मक्के वापस आ गए अल्लाह ने आपके हृदय को शांति प्रदान करने के लिए आप को सातों आकाश की यात्रा कराई। वह इस प्रकार कि आप को मक्के से पहले बैतुल मुक़द्दस लाया गया, फिर वहाँ से आपको आकाशों की यात्रा कराई गई, आपने इस यात्रा में बहुत कुछ देखा।" (देखिए: क़ुरआन (सूरह इस्रा) तथा सहीह बुख़ारी (१/४५८) सहीह मुस्लिम (१/१४८))

इसी यात्रा में मुसलमानों पर पाँच समय की नमाज़ फ़र्ज़ की गई, आप ने स्वर्ग और नर्क को देखा, आप से पूछा गया: क्या आप ने अल्लाह को भी देखा? उत्तर दिया: वह तो एक नूर (प्रकाश) है उसे कैसे देखा जा सकता है। अर्थात अल्लाह ने इस यात्रा के द्वारा नबी ﷺ को वह सब कुछ दिया जो हमारे नेत्रों से ओझल है। जिससे आप का हृदय प्रफुल्लित हो उठा और आप अधिक शक्ति के साथ इस्लाम प्रचार में लग गए।

इस्लाम मदीने में:

यूँ तो इस्लाम की चर्चा मदीने तक पहुंच चुकी थी, परंतु आप हज के अवसर पर क़बीले के सरदारों के पास जाते और इस्लाम का संदेश पहुँचाते। यह आप की नुबूवत का दसवाँ वर्ष था। आपने उक़बा नाम के स्थान पर मदीने से आए हुए हाजियों से भेंट की। उनको इस्लाम का संदेश पहुँचाया जिसको सुनकर वह लोग मुसलमान हो गए थे। क्योंकि उन्होंने मदीने के यहूदियों से सुन रखा था कि अंतिम नबी आने वाला है, जिसकी पहचान यह है कि जब उन्होंने नबी ﷺ की बातें सुनी तो उनको विश्वास हो गया कि यह वही नबी है जिनकी सूचना यहूदी दिया करते थे।

दूसरे वर्ष आप ने फिर हज के अवसर पर हाजियों के सामने इस्लाम का संदेश रखा। मदीने से ७२ आदमी हज पर आए थे, वह मसुलमान हो गए और उन्होंने हर प्रकार से आप की रक्षा करने का वचन दिया और मदीने वापस चले गए। जहाँ उन्होंने इस्लाम का प्रचार प्रारम्भ कर दिया और नबी ﷺ की मदीने आने की प्रतीक्षा करने लगे। लेकिन आप हिजरत करने के लिए वह्य का इंतेजार करने लगे। सहीह बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम में यह हदीस बयान की गई है कि आप को स्वप्न में दिखाया गया कि आप मक्का से एक ऐसे स्थान पर हिजरत कर रहे हैं जो खजूर के बाग़ों से भरा हुआ हैं तो आप ने विचार किया कि शायद यह “यमामा” या “हजर" नाम के नगर हैं। फिर देखा आपने तो यह “यसरिब" है (मदीने का नाम “यसरिब" था)। (देखिए: सहीह बुख़ारी(७/७२६) तथा सहीह मुस्लिम (४/१७७९))

फिर आप की हिजरत के बाद उसका नाम मदीना पड़ा। इस्लाम अब मक्के से निकल कर मदीने में फैलने लगा, मक्के के काफ़िर चिंता में पड़ गए कि कहीं

ऐसा न हो जाए कि मक्के से बाहर मुहम्मद के अनुयाईयों की संख्या बढ़ जाए और बाद में हमारे लिए समस्या बन जाए। इसलिए उन्होंने यह उपाय सोचा कि क्यों न मुहम्मद ﷺ को ही समाप्त कर दें, इसके लिए कुरैश क़बीले के सारे गोत्र जैसे बनी नौफ़ल, बनी अब्दे शम्स, बनी अब्दुद्-दार, बनी असद, बनी मख़्ज़ूम, बनी सहम तथा बनी जुम्ह "दारुन् नदवा" में इकट्ठा हुए (देखिए: इब्ने हिशाम (१/४८१))। और यह निर्णय हुआ कि हर गोत्र से एक-एक युवक लिया जाए और उनको चमकती हुई तलवार थमा दी जाए, भोर होते हुए सब मुहम्मद पर टूट पढ़ें और उसकी हत्या कर दें। इस प्रकार हम उससे मुक्ति पा जाएंगे और बनू हाशिम सबसे बदला नहीं ले पाएंगे और हम सब मिल कर उनको रक्त बहा का बदला रूपयों में दे देंगे। अल्लाह ने उनकी योजना की सूचना नबी को दे दी। सूरह अन्फ़ाल की आयत (३०) इसी ओर संकेत करती है जो यह है:

"और (वह समय याद करो) जब काफ़िर लोग तुम्हारे साथ चाल चल रहे थे कि तुमको कारावास कर दें, या तुम्हारी हत्या कर दें, या तुम्हें देश से निकाल दें। वह अपनी चाल चल रहे थे अल्लाह अपनी चाल चल रहा था और अल्लाह सबसे उत्तम चाल चलने वाला है।"

और आप को हुक्म दिया गया है कि अब आप भी मदीने हिजरत कर जाएं। आप ﷺ ने हज़रत अली रज़ीयल्लाहु अन्हु को बुलाया और काफ़िरों की जो अमानत आप के पास थी उनको अली को समर्पित किया और आज्ञा दी कि मेरे जाने के बाद उनके मालिकों तक पहुँचा कर तुम मदीना आ जाना। वह इस प्रकार कि आप ने हज़रत अली को अपने बिस्तर पर लिटा दिया और

सूरह यासीन पढ़ते हुए घर से बाहर निकल गए। जब सूरह यासीन की आयत ९ पर पहुँचे: “और हम ने उनके आगे एक दीवार खड़ी कर दी और एक दीवार उनके पीछे, फिर उन पर पर्दा डाल दिया जिसके कारण उनको कुछ भी सुझाई नहीं देता।" तो देखा काफ़िर जो आप की हत्या करने के लिए आप के द्वार पर इकट्ठे हुए थे ऊँघ रहे हैं।

आप ने एक मुठ्ठी मिट्टी उठाई और उनके ऊपर फेंक दिया फिर वह नींद से न उठ सके। जब आप वहाँ से निकल गए तो किसी ने आकर उन लोगो को सूचित किया मुहम्मद तो निकल गए। फिर उन्होंने घर के अंदर प्रवेश किया तो देखा वहाँ तो अली सो रहे हैं। और आप अबू बक्र के घर चले गए और वहाँ से दोनो मिलकर मदीने के लिए निकल पड़े। यह २० जून ६२२ ईस्वी सोमवार का दिन था, इसी दिन से मुसलमानों ने अपना हिजरी कैलेन्डर आरम्भ किया।

जब मक्के में काफ़िरों को आप के बच कर निकल जाने की सूचना हुई तो आप के पीछे लग गए, आप उनसे बचने के लिए “सौर” नामी पर्वत की एक गुफ़ा में छुप गए। कहानी यह बयान की जाती है कि काफ़िर आप दोनों को खोजते हुए उस गुफ़ा तक पहुँच गए परंतु यह देख कर कि गुफ़ा के मुँह पर तो मकड़ी ने जाला लगाया हुआ है। (देखिए: मुसनद अहमद (१/३४८) परंतु इसकी सनद में एक रावी जिसका नाम उस्मान बिन अम्र बिन साज जज़री है ज़ईफ़ है।) यह आप की रक्षा के लिए एक चमत्कार था जिसके कारण काफ़िर आपको गुफ़ा में तलाश किए बिना लौट गए।

इस प्रकार दोनों नबी तथा अबू बक्र गुफ़ा में तीन दिन तक छुपे रहे। इसमें वह समय भी आया जब काफ़िर लोग गुफ़ा के दहाने पर पहुंच गए। अबू बक्र ने घबरा कर कहा: हे अल्लाह के नबी! अगर यह लोग अपने पैरों के नीचे गुफ़ा में झाँकेंगे तो हमें देख लेंगे। नबी ने कहा : अबू बक्र हम दो ही नहीं हैं, बल्कि हमारे साथ हमारा अल्लाह भी है। (देखिए: सहीह बुख़ारी(७/७२६))

सूरह तौबा की आयत ४० भी इसी ओर संकेत करती है:

"यदि तुम उसकी सहायता न भी करोगे तो (उसका कुछ भी नहीं बिगड़ेगा) अल्लाह ने तो उसकी सहायता उस समय की जब काफ़िरों ने उसे निकाल दिया था, वह दो में से एक था (अर्थात दूसरे अबू बक्र थे) जब वह दोनों गुफ़ा में थे, जब वह अपने साथी से कह रहा था चिन्ता मत करोअल्लाह हमरे साथ है तो अल्लाह ने उस पर अपनी ओर से शांति उतारी और उसकी सहायता ऐसी सेनाओं से की जिन्हें तुम ने देखा नहीं और कुफ़्र करने वालों को नीचा कर दि या, और अल्लाह के बोल को ऊँचा रखा, और अल्लाह प्रभुत्वशाली तथा तत्वदर्शी है।

जब क़ुरैश को भली-भाँति ज्ञान हो गया कि मुहम्मद ﷺ अपने साथी अबू बक्र के साथ मक्के से निकलने में सफ़ल हो गए तो उन्होंने यह घोषणा कर दी कि जो कोई उन दोनों की हत्या कर देगा या जीवित पकड़ कर लाएगा उसको सौ ऊँट की भेंट दी जाएगी। यह सुनकर "सुराक़ा बिन मालिक" आप को पकड़ने के लिए निकल पड़ा और एक ऐसा चमत्कार हुआ कि वह स्वयं

मुसलमान हो गया। वह यह कि जब वह दोनों के निकट पहुँच गया तो क्या देखता है कि उसके घोड़े के दोनों सामने के पाँव धरती में गड़ गए हैं और वह घोड़े से नीचे गिर पड़ा, फिर वह उठ कर चिल्लाया और कहा: मैं सुराक़ा बिन मालिक हूँ मैं आप को कोई कष्ट नहीं देना चाहता और न ही आप का बुरा चाहता हूँ, क्योंकि मुझे ज्ञात हो गया कि मुहम्मद का धर्म फैल कर रहेगा। नबी ﷺ ने अबू बक्र से कहा: इससे पूछो क्या चाहता है? जब अबू बक्र ने मुझसे पूछा तो मैंने कहा: मुझे आप लिख कर एक पुर्ज़ा दे दें। नबी ने अबू बक्र से कहा: लिख कर दे दो। तो उन्होंने मुझे एक पुर्ज़ा लिख कर थमा दिया मैं उसको लेकर वापस चला आया।

फिर जब नबी ﷺ हुनैन और ताईफ़ के जिहाद से वापस आ रहे थे तो सुराक़ा ने वह पुर्ज़ा दिखाया और मुसलमान हो गए। (इस कहानी का कुछ वर्णन सहीह बुख़ारी में भी आया है, देखिए: (७/२३०) तथा इब्ने हिशाम (१/४९८-४९०))।

मदीने के वासियों को ज्ञान हो गया था कि नबी मक्के से निकल चुके हैं, इसलिए वह रोज़ाना मदीने से बाहर आप की प्रतीक्षा करते और जब सूर्य की गर्मी अधिक हो जाती तो वापस चले जाते। एक दिन ऐसा हुआ कि जब सब लोग अपने घरों को चले गए तो रसूलुल्लाह ﷺ ने कुबा* में प्रवेश किया, वहाँ आप चौदह दिन ठहरे रहे। इस्लाम की सबसे पहली मस्जिद आप ने यहीं बनाई जिसका वर्णन क़ुरआन में भी आया है। #

(* "कुबा" मदीने से सात किलोमीटर दूर एक बस्ती है। # 'देखिए: सूरा तौबा आयत नं.: १०८)

नबी मदीने में:

नबुवत के तेरह वर्ष बाद जब आप की आयु तिरपन वर्ष हो गई थी, आप मदीने पहुँचे। मदीने का हर व्यक्ति इच्छा रखता था कि आप उसके यहाँ पधारें, आप के लिए यह निर्णय करना कठिन हो गया कि किसकी प्रार्थना स्वीकार करें और किसकी न करें। इसलिए आप ने फ़रमायाः मेरी ऊँटनी को छोड़ दो यह अल्लाह की आज्ञा से जहाँ बैठ जाएगी मैं वही ठहरूँगा। * ऊँटनी घूमती हुई अबू अय्यूब के द्वार पर रुक गई। और फिर आप उतरे और वहाँ ठहर गए। वहाँ कुछ खुला मैदान था जैसे खलियान होता है, जहाँ लोग खजूर सुखाया करते थे। आप ने पूछा: यह खलियान किसका है? बताया गया बनु नज्जार के अनाथ बच्चों का है। [1] आप ने उसको ख़रीद कर वहाँ मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और मुसलमानों के साथ आपने स्वयं भी मस्जिद बनाने में सहायता की। मदीने के वासियों ने मक्के से आने वाले मुसलमानों की पूरी सहायता की जिसके कारण उनका नाम अंसार पड़ गया। उनके काम से प्रसन्न होकर नबी ने फ़रमाया: अगर मुझे हिजरत न करनी पड़ती तो मेरी इच्छा होती कि मैं अंसार क़बीले से होता। [2]

* (देखिए: इब्ने हिशाम(१/४९५) तथा अल-बिदाया वन् निहाया (३/२००) इसकी इस्नाद "हसन" है, क्योंकि एक रावी जिसका नाम इताफ़ बिन ख़ालिद 'सदूक़" के पद का है।)

1 (देखिए: सहीह बुख़ारी (७/२६५))

2 देखिए: सहीह बुख़ारी (७/११२)

फिर आपने मक्के से आने वालों की समस्या इस प्रकार दूर की कि मदीने वालों को मक्के से आने वाले एक व्यक्ति को सौंप दिया और कहा: जाओ आज से

तुम दोनों भाई-भाई हो। मदीने वाले जो अंसार कहलाए (सहायता करने वाले) मक्के वाले जो मुहाज़िर कहलाए (अल्लाह के मार्ग में घर बार छोड़ने वाले) बड़ी प्रसन्नता से अपने घर ले गए और अपना घर, अपना सामान और खजूर के खेत सबका आधा अपने मुहाज़िर भाई को सौंप दिया। इतिहास के ग्रन्थों में यह भी लिखा है कि अगर किसी के पास दो पत्नी थीं तो उसने मुहाज़िर भाई से कहा: इन दोनों में से जो तुम्हें पसन्द हो मैं उसे तलाक़ दे देता हूँ, और तुम विवाह कर लो। [3]

इस प्रकार अंसार ने ऐसा आदर्श पेश किया जो प्रलय दिवस तक प्रकाश दिखाता रहेगा। क़ुरआन ने उनकी प्रशंसा इस प्रकार की:

> "और जो लोग इनसे पहले से इस घर (मदीने) में बसे हुए हैं, और ईमान रखते हैं, वे उनसे प्रेम करते हैं जो हिजरत करके उनके यहाँ आएं और अपने दिलों में उससे कोई खटक नहीं पाते जो कुछ उनको दिया जाए और उन्हें अपने से प्रथ रखते हैं चाहे स्वयं उन्हें आवश्यकता ही क्यों न हो। और जो लोग अपने मन के लोभ से बचे रहें वही सफ़लता प्राप्त करने वाले हैं।" (हश्र:९)

मुहाज़िर भाई भी कोई लालची नहीं थे। उन्होंने उनके बरताव का उत्तम प्रतिसाद दिया।

मदीने के यहूदियों के साथ प्रतिज्ञाः

मदीने में अरब और यहूदी आबाद थे। इस्लाम अरबों में बड़ी तेज़ी से फैल रहा था बल्कि अगर यह कहा जाए तो सहीह है कि कोई ऐसा घर नहीं था

जिसमें कोई व्यक्ति मुसलमान न हो गया हो। और अब यह भय था कि मक्के के काफ़िर दूसरे अरबवासियों को नबी ﷺ तथा मुसलमानों के विरूद्ध भड़का कर कहीं युद्ध न छेड़ दें। इसलिए नबी ﷺ ने मदीने के यहूदियों से एक प्रतिज्ञा कर लिया वह यह कि बाहर से आक्रमण होने की दशा में वह मुसलमानों की सहायता करेंगे और इस्लाम की बढ़ती हुई शक्ति से उनको कोई हानि नहीं पहँचेगी। और मदीने पर किसी ने चढ़ाई की तो मसुलमान उसकी सुरक्षा करेंगे।

बदर का युद्धः

बदर उस गाँव का नाम है जो मदीने से ८० मील के निकट दक्षिण-पश्चिम की ओर है। यह युद्ध इसी स्थान पर सन २ हिजरी को हुआ, मुसलमान इस लड़ाई से विजयी हुए। परंतु इस युद्ध ने दूसरे अरबों को चौकन्ना कर दिया और इस्लाम की बढ़ती हुई शक्ति से वह लोग बौखला गए।

उहद का युद्धः

उहद मदीने की एक पहाड़ी है, इस युद्ध का कारण यह था कि बदर में जो सरदार मारे गए उनका बदला लेने के लिए सन ३ हिजरी में मक्के वालों ने मदीने पर आक्रमण कर दिया, लेकिन अभी वह उहद तक पहुँचे थे कि नबी ﷺ और मुसलमानों ने वहीं घेर लिया, परंतु इस युद्ध में मुसलमानों को बहुत हानि उठानी पड़ी स्वयं नबी को बहुत हानि हुई।

नबी ﷺ दस वर्ष तक मदीने में रहे, इस बीच आप ने बहुत सारे युद्ध किए जिनमें प्रसिद्ध ये हैं: ख़न्दक़, हुदैबिया, ख़ैबर, मक्के की विजय, हुनैन और और

तबूक। हिजरत के दसवें वर्ष आप ने हज किया जिसमें एक लाख बीस हज़ार मुसलमान सम्मिलित हुए। आपने ९ ज़ील-हिज्जा को अरफ़ात के मैदान में एक ऐतिहासिक भाषण दिया जिसमें आपने अत्यंत महत्व पूर्ण आदेश दिए उनमें से कुछ यह हैं:

१. अरबी और ग़ैर अरबी (जिनको अजमी कहते हैं) में कोई भेद भाव नहीं, हम एक आदम की संतान हैं और आदम को अल्लाह ने मिट्टी से बनाया।

२. मुसलमान परस्पर भाई-भाई हैं।

३. अपने ग़ुलामों के साथ अच्छा बरताव करो, जो स्वयं खाओ उनको खिलाओ और जो स्वयं पहनो उनको पहनाओ।

४. औरतों के विषय में अल्लाह से डरो, तुम्हारा उन पर और उनका तुम पर अधिकार है।

५. मैं तुम्हारे लिए दो चीज़े छोड़े जा रहा हूँ तुम उनको शक्ति के साथ पकड़े रहोगे तो कभी भी सत्य मार्ग से नहीं भटकोगे, वह अल्लाह का ग्रन्थ क़ुरआन और नबी की सुन्नत है।

फिर आप ने लोगों को सम्बोधित कर के फ़रमाया: तुम से अल्लाह के यहाँ मेरे विषय में पूछा जाएगा तो क्या कहोगे? लोगों ने उत्तर दिया: हम यही कहेंगे कि आप ने अल्लाह का संदेश हम तक पहुँचा दिया। आप ने आकाश की ओर ऊँगली उठाकर फ़रमाया: हे अल्लाह तू साक्षी रहना।

अल्लाह ने आप को जिस कार्य के लिए नियुक्त किया था पूरा कर लिया। आप का लाया हुआ धर्म अरब द्वीप से निकल कर निकट देशों तक फैल गया

अल्लाह ने भी इस्लाम धर्म को पूर्ण होने की घोषणा कर दी:

> “आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म पूर्ण कर दिया और तुम पर अपनी नेमत (अनुकम्पा) पूरी कर दी, और मैंने तुम्हारे लिए इस्लाम धर्म को पसंद किया।" (सूरह माइदह:४)

इस आयत के उतरने से कुछ लोगों को विश्वास हो गया कि अब आप हमसे विदा होने वाले हैं, और ऐसा ही हुआ। हज से आने के बाद आप बीमार हो गए और १२ रबीउल अव्वल सन् ११ हिजरी अर्थात ६४२ ईस्वी को आप का दोहान्त हो गया। आप का जिस घर में देहान्त हुआ था वहीं दफ़्न कर दिया गया, जो अब मस्जिदे नबवी से मिला हुआ है।

आप ﷺ के देहान्त से पहले पूरा क़ुरआन लिपिबद्ध हो चुका था और बहुत से मुसलमानों ने उसे हृदय स्मरण कर लिया था। क़ुरआन इस समय हमारे सामने जिस क्रम और जिस रूप मे मौजूद है यह वही है जिसको नबी छोड़ कर गए थे। और आज भी संसार में ऐसे लाखों मुसलमान हैं जिनको क़ुरआन स्मरण हैं।

अब आईए संक्षेप में यह बताता चलूँकि क़ुरआन आप ﷺ के विषय में क्या कहता है:

१.आप को अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा:

"वही है जिसने अपने रसूल (अर्थात मुहम्मद ﷺ) को मार्गदर्शन तथा सत्य धर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे दूसरे धर्मों पर प्रभुत्व प्रदान करे चाहे मुश्रिकों को बुरा ही क्यों न लगे।" (सूरह अस-सफ़्फ़:९)

"हमनें तुम्हें सत्य धर्म के साथ शुभ सूचना देने वाला (मोमिनों को) और डराने वाला (काफ़िरों को) बनाकर भेजा है। और तुम से भड़कती हुई आग वालों के विषय (जहन्नमी लोगों) में कुछ भी पूछा नहीं जाएगा।" (सूरह बकरह:११९)

"हमने तुम्हारी ओर एक रसूल भेजा जो तुम पर साक्षी होंगे, जैसा कि हमने फ़िरऔन की ओर एक रसूल भेजा था।" (सूरह मुज़म्मिल:१५)

२. मुहम्मद ﷺ अंतिम नबी बना कर भेजे गए हैं।

अत: आप के पश्चात अब कोई नबी नहीं आएगा, अब प्रलय दिवस तक संसार के कल्याण का एक मात्र साधन आप ﷺ पर विश्वास लाने, और आप के आदेशों के पालन करने में है। क्योंकि अल्लाह ने सम्पुर्ण संसार के लिए आप को अंतिम रसूल बना कर भेजा है।

"मुहम्मद तुम्हारे पुरूषों में से किसी के पिता नहीं हैं, परंतु वह अल्लाह के रसूल और नबियों के समापक हैं। और अल्लाह हर वस्तु का ज्ञान रखने वाला है।" (सूरह अहज़ाब:४०)

क़ुरआन ने "खातम" शब्द प्रयुक्त किया है जिसका अर्थ मुहर (SEAL) भी होता है। इस प्रकार आप अंतिम नबी हैं आप के आ जाने के पश्चात अल्लाह ने नबियों के सिलसिले पर मुहर लगा दी, इसलिए अब कोई नबी नहीं आएगा। नबी ﷺ ने भी इसकी घोषणा कर दी कि मेरे बाद कोई नबी नहीं आएगा।

३.अल्लाह ने आप के महान स्वभाव की प्रशंसा की है।

आप नबूवत से पहले भी अपनी जाति में अमीन कहलाते थे। नबूवत के बाद आप का स्वभाव और उच्च हो गया। इसी ओर क़ुरआन संकेत करता है:

"नून; क़लम और जो वे उससे लिखते हैं उसकी शपथ, तुम अपने रब की कृपा से उन्मत्त नहीं हो और निश्चय ही तुम्हारे लिए ऐसा बदला है जो कभी समाप्त नहीं होगा और नि:संदेह तुम महान स्वभाव वाले हो, तुम और यह काफ़िर जल्द ही देख लेंगे कि तुम में से कौन भ्रम में पड़ा हुआ है।" (सूरह क़लम-१-६)

४. आप ﷺ के हाथ पर बैयत करना अल्लाह से बैयत करना है:

"जो लोग तुम से बैयत करते हैं वह अल्लाह ही से बैयत करते हैं अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है। अब जिसने (इस बैयत) को तोड़ दिया तो वह तोड़कर अपना ही बुरा करेगा। और जिसने उसे पूरा किया जिसकी प्रतिज्ञा अल्लाह से की है उसे वह बहुत बड़ा बदला प्रदान करेगा।" (सूरह फत्ह:१०)

अरब लोग जब किसी बात का संकल्प करते थे तो एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर अल्लाह की शपथ लेते थे जिसको "बैयत" कहते हैं। और फिर इसको तोड़ना बहुत बुरा समझते थे। ऊपर की आयत में इसी की ओर संकेत किया गया है कि जो लोग मुहम्मद ﷺ के हाथ पर बैयत करते हैं वह वास्तव में अल्लाह से बैयत करते हैं। इस लिए इसके तोड़ने से बचना चाहिए, इसमें जहाँ बैयत का महत्व बताया गया है वहीं नबी ﷺ के पद की ओर संकेत किया गया है।

५. आप ﷺ वह्य के अनुसार ही धर्म प्रचार करते थे:

"शपथ है तारे की जब वह नीचे आया। तुम्हारा साथी न तो भटका है और न तो मार्ग से फिरा है। और ऐसा नहीं की जो चाहता है कह देता है, वह तो बस वह्य होती है जो उस पर की जाते है।" (सूरह नजम:१-४)

"मेरी ओर तो केवल इसलिए वह्य की जाती है कि मैं खुला-खुला सचेत करने वाला हूँ।" (सूरह साद:७०)

"कहो! सबसे बड़ी गवाही किसकी है? कहो! अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच साक्षी है। और यह क़ुरआन मेरी ओर वह्य किया गया है, ताकि मैं इसके द्वारा तुम्हें और जिस किसी को यह पहुँचे सचते करूँ।" (सूरह अन्आमः१९)

"कहो! मैं तो तुम जैसा केवल एक मनुष्य हूँ (अर्थात पूज्य नहीं हूँ) परंतु मेरी ओर वह्य आती है कि तुम्हारा पूज्य तो बस एक ही है।" (सूरह कहफ़:११०)

६. आपको अल्लाह ने सारे संसार वालों के लिए नबी बनाकर भेजाः

"और (हे मुहम्मद) हम ने तो तुम्हें सारे मनुष्यों के लिए शुभ सूचक और सचते करने वाला बना कर भेजा है। परंतु अधिक तर लोग जानते नहीं।" (सूरह सबा:२८)

नबी ﷺ ने भी इसकी पुष्टि की है। आप ने फ़रमाया:

नबी केवल अपनी जाति के लिए भेजे जाते थे, परंतु मुझे सारे मनुष्यों के लिए भेजा गया है। (सहीह बुख़ारी १/८६)

दूसरी हदीस में है:

मैं सारे मनुष्यों की ओर भेजा गया हूँ, और मेरे द्वारा नबूवत समाप्त कर दी गई है। (सहीह मुस्लिम १/३७१)

इसीलिए इस्लाम धर्म स्वीकार करने के बाद एक मुसलमान का दुसरे से कोई भेदभाव नहीं होता है। और नया मुसलमान इस्लामी समाज में उस प्रकार मिल जाता है जैसे पुराने मुसलमान हों। रंग, जाति, भाषा तथा देश के पृथक होने का इस्लामी समाज पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। कोई भी मुसलमान किसी मुसलमान के घर विवाह कर सकता है, मस्जिद में एक-दूसरे के साथ मिलकर नमाज़ पढ़ सकता है और क़ुरआन का विद्वान बन सकता है। अर्थात सामान्य रूप में एक दूसरे में कोई भेदभाव नहीं रहता और कहीं यह पाया जाता है तो वह इस्लामी शिक्षा के विरुद्ध है।

७. आप ﷺ के चमत्कारः

वैसे तो नबी ﷺ के हाथों बहुत से चमत्कार प्रकट हुए जिनका वर्णन हदीस ग्रन्थों में आया है। जैसे चाँद के दो टुकड़े हो जाना, नबी ﷺ की ऊँगलियों से पानी के सोते बह निकलना, खंदक के युद्ध में दो-तीन आदमियों का भोजन एक हज़ार आदमियों के लिए पर्याप्त हो जाना। साईब बिन यज़ीद जो बचपन से ही पीड़ित रहने लगे, और जिनकी मौसी लेकर नबी ﷺ के पास गईं और दुआ एवं प्रार्थना की, जिसके कारण साईब बिन यज़ीद सदैव के लिए स्वस्थ हो गए। यहाँ तक कि चौरानवे वर्ष तक जीवित रहे मगर फिर कभी पीड़ित नहीं हुए। इस प्रकार के बहुत सारे चमत्कार हदीस ग्रन्थों में वर्णित हुए हैं। परंतु मैं यहाँ एक ऐसे चमत्कार का वर्णन करना चाहता हूँ जो महाप्रलय दिवस तक रहने वाला है। और वह आप पर क़ुरआन का उतरना जो आप का महान चमत्कार है। क्योंकि इससे पूर्व बता चुका हूँ कि जब “हिरा” नामी गुफ़ा में हज़रत जिब्रील क़ुरआन की “वह्य" लेकर आए और आप को कहा: पढ़, तो आप ने उत्तर दिया मुझे पढ़ना नहीं आता।

इसकी पुष्टि क़ुरआन भी करता है कि आपको पढ़ना लिखना नहीं आता था:

> “कहो ऐ लोगो! मैं तुम सबकी ओर उस अल्लाह का रसूल बनाकर भेजा गया हूँ जो आकाशों और धरती का स्वामी है। उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, वही जीवन प्रदान करता है और वही मृत्यु देता है, अत: अल्लाह और उसके रसूल जो “नबी-ए-उम्मी” है पर ईमान लाओ।" (सूरह आराफ़:१५८)

"उम्मी" का अर्थ है "अनपढ़" जिसको लिखना पढ़ना न आता हो। नबी जिस नगर और समाज में पैदा हुए थे वह उम्मी लोग थे, इसलिए आप भी उम्मी रह गए। फिर ऐसे व्यक्ति पर क़ुरआन जैसा महान ग्रन्थ उतरना यह इतना बड़ा चमत्कार है जिसका संसार में कोई उदाहरण नहीं है। इसीलिए क़ुरआन ने स्वयं बार-बार चैलेन्ज किया है कि अगर तुमको इसे अल्लाह की ओर से होने की शंका है तो इस जैसा लाकर दिखाओ:

"कह दो! यदि मनुष्य और जिन्न इस बात के लिए इकठ्ठा हो जाएं कि इस क़ुरआन जैसा कोई ग्रन्थ लायें तो वे इस जैसा कोई ग्रन्थ नहीं ला सकेंगे चाहे वे परस्पर एक-दूसरे के सहायक ही क्यों न बन जाए।" (सूरह इस्रा:८८)

लेकिन मक्के के काफ़िर और मुशरिक ऐसा ग्रन्थ लाने में असमर्थ रहे। जब कि वे अपने आप को अरबी भाषा का महान विद्वान विचार करते थे।

फिर क़ुरआन ने दुबारा चैलेन्ज किया कि अगर पूर्ण क़ुरआन जैसा ग्रन्थ नहीं ला सकते तो उसकी दस सूरतों जैसा ही क़ुरआन लाकर दिखाओ:

"क्या यह कहते हैं: उसने इसे स्वयं गढ़ लिया है। कह दो! अच्छा तो तुम इस जैसी गढ़ी हुई दस सूरते ले आओ, और अल्लाह के अतिरिक्त जिस किसी को बुला सकते हो बुला लो यदि तुम सच्चे हो।" (सूरह हूदः १३)

जब दस सूरतें भी लाने मे असमर्थ रहे तो उसने तीसरी बार चैलेन्ज किया:

"क्या यह लोग कहते हैं कि इसने उसे स्वयं गढ़ लिया है? कहो! यदि तुम सच्चे हो तो एक ही सूरा उसके समान बना कर लाओ, और अल्लाह के अतिरिक्त जिसको बुला सकते हो बुला लो।" (सूरह यूनुसः३८)

मगर ऐसा भी करने में वे असमर्थ रहे। क़ुरआन का यह चैलेन्ज आज भी बाक़ी है और महा प्रलय दिवस तक बाकी रहेगा, बल्कि एक स्थान पर तो उसने यह चैलेन्ज भी दे दिया है कि एक "आयत" ही लाकर दिखा दो:

"क्या यह कहते हैं: इसने यह बात अपनी ओर से बना ली है? नहीं बल्कि ये ईमान नहीं लाना चाहते, अच्छा यदि ये सच्चे हैं तो इस जैसी कोई एक बात तो लाकर दिखाएं।" (सूरह तूर:३३-३४)

नबी ﷺ का सबसे बड़ा चमत्कार यह क़ुरआन है जो आप पर उतरा, जब कि आप "उम्मी" थे परंतु आप का लाया हुआ क़ुरआन करोड़ों मनुष्यों को प्रभावित कर गया, और करता रहेगा और प्रलय दिवस तक कोई भी उस जैसा क़ुरआन लाने में समर्थ नही हो सकता।

क़ुरआन की प्रमुख शिक्षाएं

क़ुरआन और अल्लाह की महान सत्ता

क़ुरआन ईश्वर की महान सत्ता को विभिन्न प्रकार से बयान करता है और यह कि पृथ्वी और आकाश में जो कुछ भी है सबको उसी ने बनाया है। इसलिए कण-कण उसकी महान सत्ता के गीत गाते हैं। और उसी की बड़ाई बयान करते हैं। अब यह मनुष्य की ग़लती है कि अपने जैसों को ईश्वर बना बैठे और उनकी उपासना करे।

आईए क़ुरआन की कुछ आयत (श्लोंक) का अध्ययन करें और उसकी महान सत्ता के गीत गाएं।

"या फिर उदाहरण के रूप में उस व्यक्ति को देखो, जिसका एक ऐसी बस्ती पर से जाना हुआ जो अपनी छतों पर औंधी गिरी पड़ी थी, उसने कहा: "यह आबादी तो विनष्ट हो चुकी है, इसे अल्लाह किस प्रकार पुन: जीवन प्रदान करेगा?" इस पर अल्लाह ने उसके प्राण ग्रस्त लिए और सौ वर्ष तक वह निर्जीव पड़ा रहा। फिर अल्लाह ने उसे पुन: जीवनदान दिया और उससे पूछा: "बताओ कितनी अवधि तक पड़े रहे हो?" उसने कहा: "एक दिन या कुछ घंटे रहा हूँगा।" कहा: "तुम पर सौ वर्ष इसी दशा में बीत चुके हैं। अब तनिक अपने खाने और पीने को देखो कि उसमें तनिक परिवर्तन नहीं आया है। दूसरी ओर तनिक अपने गदहे को भी देखो (कि उसका पंजर तक जीर्ण हो रहा है) और यह हमने इसलिए किया है कि हम तुम्हें

लोगों के लिए एक निशानी बना देना चाहते हैं। फिर देखो कि हड्डियों के इस पंजर को हम किस प्रकार उठा कर माँस और चर्म उस पर चढ़ाते हैं।" इस प्रकार जब वास्तविकता उसके समक्ष प्रकट हो गई, तो उसने कहाः 'मैं जानता हूँ कि अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।" (२:२५९)

“अल्लाह ने स्वयं इस बात की गवाही दी है कि उसके सिवा कोई आराध्य नहीं है और फ़रिश्ते तथा सब ज्ञानवान भी सच्चाई और न्याय के साथ इस पर गवाह हैं कि उस बलशाली गहरी समझ वाले के सिवा वास्तव में कोई आराध्य नहीं है।" (३:१८)

“कहो! ऐ प्रभु, राज्य के स्वामी तू जिसे चाहे राज्य दे और जिससे चाहे छीन ले। जिसे चाहे शक्ति-सम्मान प्रदान करे और जिसको चाहे अपमानित कर दे, भलाई तेरे अधिकार में है। नि:संदेह तुझे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है। रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है और दिन को रात में। निर्जीव में से जीवधारी को निकालता है और जीवधारी में से निर्जीव को, और जिसे चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है।" (३:२६-२७)

“निश्चय ही कुफ़्र किया उन लोगों ने जिन्होंने कहा कि मरियम का बेटा मसीह ही अल्लाह है। हे नबी, उनसे कहो कि अगर अल्लाह मरियम के बेटे मसीह को और उसकी माता और समस्त धरती वालों को विनष्ट कर देना चाहे तो किसकी शक्ति है जो उसको इस निश्चय से रोक सके? अल्लाह तो धरती और आसमानों का और उन सब चीज़ों का मालिक है

जो धरती और आसमानों के बीच पाई जाती हैं, जो कुछ चाहता है पैदा करता है और उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।" (५:१७)

"हे नबी, उनसे कहो, कभी तुमने यह भी सोचा कि अगर अल्लाह तुम्हारे देखने और सुनने की शक्ति तुम से छीन ले और तुम्हारे दिलों पर ठप्पा लगा दे तो अल्लाह के अतिरिक्त और कौन ईश्वर है जो ये शक्तियाँ तुम्हें वापस दिला सकता हो? देखो, किस तरह हम बार-बार अपनी निशानियाँ उनके सामने प्रस्तुत करते हैं और फिर ये किस तरह उनसे निगाह चुरा जाते हैं।" (६:४६)

"उसने हर चीज़ को पैदा किया है और उसे हर चीज़ का ज्ञान है। यह है अल्लाह तुम्हारा प्रभु, कोई आराध्य उसके सिवा नहीं है, हर चीज़ का सृष्टा। अत: तुम उसी की उपासना करो और वह हर चीज़ का भारधारक है।" (६:१०१,१०२)

“(रही उसकी सम्भावना तो) हमें किसी चीज़ को अस्तित्व प्रदान करने के लिए इससे अधिक कुछ करना नहीं होता कि उसे आदेश दें “हो जा” और बस वह हो जाती है।" (१६:४०)

"और वही है जिसने पानी से एक आदमी पैदा किया, फिर उससे वंश और ससुराल के दो अलग सिलसिले चलाए। तेरा प्रभु बड़ा ही सामर्थ्यवान है।" (२५:५४)

"अल्लाह ही तो है जिसने निर्बलता की दशा से तुम्हारे सृजन का आरम्भ किया, फिर उस निर्बलता के पश्चात तुम्हें शक्ति प्रदान की, फिर उस शक्ति

के पश्चात तुम्हें निर्बल और बूढ़ा कर दिया। वह जो कुछ चाहता है पैदा करता है। और वह सब कुछ जानने वाला, हर चीज़ का सामर्थ्य रखने वाला है।" (३०:५४)

"प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो आकाशों और धरती का आविष्कार करने वाला है और फ़रिश्तों को संदेशवाहक नियुक्त करने वाला है, (ऐसे फ़रिश्ते) जिनके दो-दो, तीन-तीन और चार-चार भुजायें है। वह अपनी सृष्टि संरचना में जैसी चाहता है अभिवृद्धि करता है। निःसंदेह अल्लाह को हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।" (३५:१)

“क्या ये लोग धरती में कभी चले-फिरे नहीं है कि इन्हें उन लोगों का परिणाम दिखाई देता जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं और इनसे बहुत अधिक शक्तिशाली थे? अल्लाह को कोई चीज़ विवश करने वाली नहीं है, न आसमानों में और न धरती में। वह सब कुछ जानता है और उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है।" (३५:४४)

“अल्लाह हर चीज़ का सृष्टा है और वही हर चीज़ पर निगहबान है। धरती और आकाशों के ख़ज़ानों की कुंजियाँ उसी के पास हैं। और जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं वही घाटे में रहने वाले हैं।" (३९:६२-६३)

धरती और आकाशों के राज्य का मालिक वही है, जीवन प्रदान करता है और मृत्यु देता है, और उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है। (५७:२)

अल्लाह की महान सत्ता की ओर संकेत करने वाली यह कुछ आयतें हैं, जिनसे प्रकट होता है कि इस संसार का रचयिता केवल वही है, इसमें उसका कोई साझी नहीं है। क़ुरआन ने भूले हुए इस पाठ को विभिन्न प्रकार से याद दिलाया ताकि इसके द्वारा केवल अल्लाह के पूज्य (इलाह) होने को प्रमाणित किया जा सके जो सारे नबियों के आदेश का निचोड़ है।

क़ुरआन और इलाह (पूज्य प्रभू)

क़ुरआन की शिक्षा का मूल उद्देश्य एक ईश्वर की उपासना है। और यही सम्पूर्ण नबियों की शिक्षा थी। लेकिन लोगों ने उसे भुला दिया था और उसमे परिवर्तन कर दिया था। तब अल्लाह ने अपनी अंतिम पुस्तक के द्वारा उसे फिर जीवित किया और उन लोगों पर क़ुरआन ने कड़ी आलोचना की जो एक ईश्वर को छोड़ कर बहुत सारे देवी देवताओं को अपना भगवान समझते हैं और उनकी पूजा करते हैं, क़ुरआन विभिन्न प्रमाणों द्वारा सिद्ध करता है कि इस संसार को बनाने और चलाने वाला जब एक है तो वही पूज्यनीय भी है।

नीचे क़ुरआन की कुछ आयात बयान करता हूँ, उनको ध्यान से पढ़ें और विचार करें तो आपको प्रतीत होगा कि यह तो आपके हृदय का स्वर है।

"उनका कहना है कि अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया है। अल्लाह पाक है इन बातों से। वास्तविक तथ्य यह है कि धरती और आकाशों में पाई जाने वाली सभी चीज़ों का वह मालिक है, सबके सब उसके आज्ञाकारी हैं, वह आकाशों और धरती का आविष्कार है, और जिस बार का वह निर्णय करता है, उसके लिए बस वह आदेश देता है कि "हो जा" और वह हो जाती है।" (२:११६-११७)

"अल्लाह वह जीवन्त नित्य सत्ता है जो सम्पूर्ण जगत को संभाले हुए है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं है। वह न सोता है और न उसे ऊँघ लगती है। आकाशों और धरती में जो कुछ है उसी का है। कौन है जो उसके यहाँ

उसकी अनुमति के बिना सिफारिश कर सके? जो कुछ लोगों के सामने है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उनसे ओझल है उसे भी वह जानता है, उसके ज्ञान में से कोई चीज़ लोगों के ज्ञान की पकड़ में नहीं आ सकती, यह और बात है कि किसी चीज़ का ज्ञान वह स्वयं ही उनको देना चाहे। उसकी कुर्सी ने आकाशों और धरती को घेरा हुआ और उनकी देख-रेख उसके लिए कोई थका देने वाला कार्य नहीं है। बस वही एक महान और सर्वोपरि सत्ता है।" (२:२५५)

“अल्लाह ने स्वयं इस बात की गवाही दी है कि उसके सिवा कोई उपासक नहीं है और फ़रिश्ते और सब ज्ञानवान भी सच्चाई और न्याय के साथ इस पर गवाह हैं कि उस बलशाली गहरी समझ वाले के सिवा वास्तव में कोई पूज्य नहीं है।" (३:१८)

“अल्लाह वह है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं है, वह तुम सब को पुनरुज्जीवन के दिन इकठ्ठा करेगा जिसके आने में कोई संदेह नहीं, और अल्लाह की बात से बढ़ कर सच्ची बात और किसकी हो सकती है।" (४:८७)

"हे किताब वालों! अपने धर्म में अत्युक्ति से काम न लो और अल्लाह से लगा कर सत्य के अतिरिक्त कोई बात न कहो। मसीह मरियम का बेटा इसके सिवा कुछ न था कि अल्लाह का एक रसूल था और एक आदेश था जो अल्लाह ने मरियम की ओर भेजा और एक आत्मा थी अल्लाह की ओर अतः तुम अल्लाह और उसके रसूलों को मानो और न कहो कि

“तीन” हैं। बाज़ आ जाओ, यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है। अल्लाह तो बस एक ही पूज्य है। यह उसकी महिमा के प्रतिकूल बात है कि उसका कोई पूत्र है। धरती और आकाशों की सारी वस्तुओं का वह स्वामी है, और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति और उनकी ख़बर रखने के लिए बस वही काफ़ी है।" (४:१७१)

“निश्चय ही कुफ़्र किया उन लोगों ने जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन में का एक है, हालांकि एक अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं है। अगर ये लोग अपनी इन बातों से बाज़ न आएं तो इनमें से जिस-जिस ने कुफ़्र किया है उसको दुखद यातना दी जाएगी। फिर क्या ये अल्लाह की ओर लौटेंगे नहीं और उससे क्षमा की प्रार्थना न करेंगे? अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दयावान है।" (५:७३-७४)

“इनसे पूछो, आकाशों और धरती में जो कुछ है किसका है? कहो! सब अल्लाह का है, उसने दयालुता को अपने लिए अनिवार्य कर लिया है (इसीलिए वह अवज्ञाओं और उद्दण्डताओं पर तुम्हें जल्दी नहीं पकड़ता) पुनरुज्जीवन के दिन वह तुम सबको अवश्य इकट्ठा करेगा। यह बिल्कुल एक असंदिग्ध तथ्य है, मगर जिन लोगों ने अपने आप को स्वयं तबाही के ख़तरे में डाल लिया है वे इसे नहीं मानते।"

रात के अंधेरे और दिन के उजाले में जो कुछ ठहरा हुआ है, सब अल्लाह का है और वह सब कुछ सुनता है और जानता है। कहो, अल्लाह को छोड़ कर क्या मैं किसी और को अपना पूज्य बना लूँ? उस अल्लाह को छोड़

कर जो धरती और आकाश का सृष्टा है और जो रोज़ी देता है रोज़ी लेता नहीं है। कहो, मुझे तो यही आदेश हुआ है कि सबसे पहले मैं उसके आगे आज्ञापालन की भावना से झुक जाऊँ (और ताकीद की गई है कि कोई ईश्वर का साझीदार बनाता है तो बनाए) तू कदापि मुशरिकों (बहुदेववादियों) में सम्मिलित न हो। कहो, अगर मैं अपने प्रभु की अवज्ञा करूँ तो डरता हूँ कि एक बड़े (भयानक) दिन मुझे दण्ड भुगतना पड़ेगा। उस दिन जो दण्ड से बच गया उस पर अल्लाह ने बड़ी ही दया की और यही खुली सफ़लता है। अगर अल्लाह तुम्हें किसी प्रकार की हानि पहुँचाए तो उसके सिवा कोई नहीं जो तुम्हें हानि से बचा सके, और अगर वह तुम्हें कोई भलाई पहुँचाए तो उसे हर चीज़ का सामर्थ्य प्राप्त है। उसे अपने बन्दों पर पूर्ण अधिकार प्राप्त है और वह जानता और ख़बर रखता है।

इनसे पूछो, किसकी गवाही सबसे बढ़कर है? कहो, मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह है, और यह क़ुरआन मेरी ओर "वह्य" (प्रकाशना) द्वारा भेजा गया है ताकि तुम्हें और जिस जिसको यह पहुँचे सबको सावधान कर दूँ। क्या वास्तव में तुम लोग यह गवाही दे सकते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे पूज्य भी हैं? कहो, मैं तो इसकी गवाही कदापि नहीं दे सकता? कहो, ईश्वर तो वही एक है और मैं उस शिर्क (बहुदेववाद) से विरक्त हूँ जिसमें तुम पड़े हो।" (६:१२,१९)

"यह एक संदेश है सब मानवों के लिए, और यह भेजा गया है इसलिए कि उनको इसके द्वारा सावधान कर दिया जाए और वे जान लें कि वास्तव में

पूज्यनीय बस एक ही है और जो बुद्धिमान हों वे होश में आ जाएं।" (१४:५२)

"ता. हा.! हमने यह क़ुरआन तुम पर इसलिए अवतरित नहीं किया है कि तुम मुसीबत में पड़ जाओ। यह तो एक अनुस्मारक है प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो डरे। उतारा गया है उस सत्ता की ओर से जिसने पैदा किया है धरती को और उच्च आकाशों को। वह करुणामय (ब्रह्माण्ड के) अर्श (सिंहासन) पर स्थिर है। स्वामी है उन सब चीज़ों का जो आकाशों और धरती में हैं और जो धरती और आकाश के बीच में हैं और जो मिट्टी के नीचे है। तुम चाहे अपनी बात पुकार कर कहो, वह तो चुपके से कही बात भी बल्कि उससे बढ़ कर छिपी बात भी जानता है। वह अल्लाह है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं उसके लिए उत्तम नाम हैं।" (२०:१-८)

"जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर दूसरे संरक्षक बना लिए हैं उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है जो अपना एक घर बनाती है और सब घरों से अधिक कमज़ोर घर मकड़ी का घर ही होता है। क्या अच्छी बात होती कि ये लोग ज्ञान रखते। ये लोग अल्लाह को छोड़कर जिस चीज़ को भी पुकारते हैं अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है और वही प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है। ये मिसालें हम लोगों के (प्रबोधन) के लिए देते हैं किंतु इनको वही लोग समझते हैं जो ज्ञान रखने वाले हैं। अल्लाह ने आकाशों और धरती को हक़ के साथ पैदा किया है, वास्तव में इसमें एक निशानी है ईमान वालों के लिए।" (२९:४१-४४)

“यदि तुम इन लोगों से पूछो कि धरती और आकाशों को किसने पैदा किया है और चंद्रमा और सूर्य को किसने वशीभूत कर रखा है, तो अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर ये किधर से धोखा खा रहे हैं? अल्लाह ही है जो अपने बंदों में से जिसकी चाहता है जीविका विस्तीर्ण करता है और जिसकी चाहता है तंग करता है, निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। और यदि तुम इनसे पूछो, किसने आकाश से पानी बरसाया और उसके द्वारा मुर्दा पड़ी हुई भूमि को जीवन प्रदान किया तो वे अवश्य कहेंगे अल्लाह ने। कहो, प्रशंसा अल्लाह के लिए है किंतु इनमें से अधिकतर लोग समझते नहीं है।" (२९:६१-६३)

“यदि अल्लाह किसी को बेटा बनाना चाहता है तो अपने पैदा किए हुए में से जिसको चाहता चुन लेता, पाक है वह इससे (कि कोई उसका बेटा हो), वह अल्लाह है अकेला और सब पर प्रभुत्वशाली। उसने आकाशों और धरती को हक़ के साथ पैदा किया है। वही दिन पर रात और रात पर दिन को लपेटता है। उसी ने सूर्य और चंद्रमा को इस प्रकार वशीभूत कर रखा है कि प्रत्येक एक नियमित समय तक चले जा रहे हैं। जान रखो, वह प्रभुत्वशाली है और क्षमा करने वाला है। उसी ने तुमको एक जीव से पैदा किया, फिर वही है जिसने उस जीव से उसका जोड़ा बनाया। और उसी ने तुम्हारे लिए चौपायों में आठ नर और मादा पैदा किए। वह तुम्हारी माताओं के पेटों में तीन-तीन अंधकारमय परदों के भीतर तुम्हें एक के पश्चात एक रूप देता चला जाता है। यही अल्लाह (जिसके ये कार्य हैं) तुम्हारा प्रभु है,

राज्य उसी का है, कोई पूज्य उसके सिवा नहीं है, फिर तुम किधर से फिराए जा रहे हो?" (३९:४-६)

"कहो वह अल्लाह है, यकता! अल्लाह सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मोहताज हैं न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान और कोई उसका समकक्ष नहीं है।" (११२:१-४)

क़ुरआन में एक अल्लाह की उपासना के लिए 'इलाह' शब्द का प्रयोग हुआ है। जो अरब इस्लाम से पहले थे वह इसके अर्थ से परिचित थे, वह समझते थे कि इलाह वह है जिसकी उपासना की जाए और वह भी इलाह है जो उपासना के योग्य हो। इस प्रकार वह अल्लाह को उपासना योग्य समझ कर अल्लाह की भी उपासना करते थे, और उनकी भी जिनकी उनके माता-पिता उपासना करते चले आ रहे थे। क़ुरआन ने इस दूसरे इलाह की पूरी शक्ति से निंदा की और यह बार-बार विभिन्न प्रकार से प्रकट किया कि इलाह तो केवल एक है और वह है अल्लाह। क्योंकि वही उपासना के योग्य है। शेष जिनकी तुम पूजा पाठ कर रहे हो वह इसके योग्ह नहीं। और जिसको हम "कलिमा-शहादत" कहते हैं उसका यह एक भाग है। अर्थात (अश्हदु अन्ला इलाहा इल्लल्लाह) जिसका अर्थ है: मैं साक्षी देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई इलाह (पूज्य) नहीं है और जिस पर विश्वास करने तथा मुहम्मद ﷺ की नबूवत पर विश्वास करने के पश्चात ही एक व्यक्ति इस्लाम में प्रवेश कर सकता है।

ईश्वर पर विश्वास

क़ुरआन मूल रूप से एक ईश्वर पर विश्वास करने का आदेश देता है।

"(मुसलमानों!) कहो कि: हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस (मार्गदर्शन) पर जो हमारी ओर उतरा है और जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़, याक़ूब और उनकी संतान की ओर उतरा था और जो मूसा और जो दूसरे सभी पैग़म्बरों को उनके प्रभु की ओर से दिया गया था। हम उनके बीच कोई अंतर नहीं करते और हम अल्लाह के मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं।" (२:१३६)

"(अब) क्या ये लोग अल्लाह के दीन (ईश्वरीय धर्म) को छोड़ कर कोई और धर्म चाहते हैं? हालाँकि आकाशों और धरती की सारी चीज़ें स्वेच्छा से अथवा विवशता पूर्वक अल्लाह की आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं और उसी की ओर सबको पलटना है? हे नबी, कहो कि हम अल्लाह को मानते हैं, उस शिक्षा को मानते हैं जो हम पर उतारी गई है, उन शिक्षाओं को भी मानते हैं जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़, याक़ूब और याक़ूब की सतांन पर उतरी थीं। और उन आदेशों को भी मानते हैं जो मूसा, ईसा और दूसरे पैग़म्बरों को उनके प्रभु की ओर से दिए गए। हम उनके बीच अंतर नहीं करते और हम अल्लाह के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं। इस आज्ञा पालन (इस्लाम) के सिवा जो व्यक्ति कोई अन्य दीन अपनाना चाहे उसका दीन कदापि स्वीकार न किया जाएगा और परलोक में वह असफ़ल रहेगा।" (३:८३-८५)

“अब (संसार में) वह उत्तम गरोह तुम हो जिसे लोगों के मार्गदर्शन और सुधार के लिए मैदान में लाया गया है। तुम नेकी का आदेश देते हो, बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो। ये किताब वाले मानते तो इन्हीं के हक़ में अच्छा था।" (३:११०)

"आख़िर इन लोगों पर क्या आपदा आ जाती अगर ये अल्लाह और अंतिम दिन को मानते और जो कुछ अल्लाह ने दिया है उसमें से ख़र्च करते। अगर ये ऐसा करते तो अल्लाह से इनकी नेकी का हाल छुपा न रहता। अल्लाह किसी पर रत्ती भर भी अत्याचार नहीं करता, अगर कोई एक नेकी करे तो अल्लाह उसे दो गुना करता है और फिर अपनी ओर से बड़ा बदला देता है। फिर सोचो कि उस समय ये क्या करेंगे जब हम हर समुदाय में से एक गवाह खड़ा करेंगे और आप को उन लोगों पर गवाह बनाकर लाएंगे। उस समय वे सब लोग जिन्होंने रसूल की बात न मानी और उसकी अवज्ञा करते रहे, कामना करेंगे की क्या ही अच्छा होता की धरती फट जाए और वे उस में समां जायें। वहाँ ये अपनी कोई बात अल्लाह से न छुपा सकेंगे।" (४:३९-४२)

“परिणाम न तुम्हारी कामनाओं पर निर्भर करता है न किताब वालों की कामनाओं पर। जो भी बुराई करेगा उसका फल पाएंगा और अल्लाह के मुक़ाबले में अपने लिए कोई समर्थक और सहायक न पा सकेगा। और जो अच्छे काम करेगा चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह आस्थावान हो। तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनका तनिक हक़ न मारा जाएगा। उस व्यक्ति से अच्छा और किसका दीन हो सकता है

जिसने अल्लाह के आगे सिर झुका दिया और वह सदाचारी भी हो और एकचित हो कर इब्राहीम के तरीक़े का अनुसरण किया, उस इब्राहीम के तरीक़े का जिसे अल्लाह ने अपना मित्र बना लिया था। आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह का है और हर चीज़ को अल्लाह अपने घेरे में लिए हुए है।" (४:१२३-१२६)

"फिर जब मूसा का क्रोध शांत हुआ तो उसने उन पटिकाओं को उठा लिया जिनके लेख में मार्गदर्शन और दयालुता थी उन लोगों के लिए जो अपने प्रभु से डरते हैं। और उसने अपनी जाति के सत्तर आदमियों को चुना ताकि वे (उसके साथ) हमारे नियमित किए हुए समय पर उपस्थित हों। जब उन लोगों को एक प्रचण्ड भूकम्प ने आ पकड़ा तो मूसा ने निवेदन किया, हे मेरे प्रभु, आप चाहते तो पहले ही इनको और मुझे विनष्ट कर सकते थे। क्या आप उस अपराध में जो हम में से कुछ नादानों ने किया था हम सबको विनष्ट कर देंगे? यह तो आपकी डाली हुई एक परीक्षा थी जिसके द्वारा आप जिसे चाहते हैं पथभ्रष्ट कर देते हैं और जिसे चाहते हैं राह पर लगा देते हैं। हमारे सरपरस्त तो आप ही हैं। अत: हमें राह पर लगा देते हैं। हमारे सरपरस्त तो आप ही हैं। अत: हमें क्षमा कर दीजिए और हम पर दया कीजिए, आप सबसे बढ़ कर क्षमाशील हैं। और हमारे लिए इस लोक की भलाई भी लिख दीजिए और परलोक की भी, हम आप की ओर पलट आए। उत्तर में कहा गया, दण्ड तो मैं जिसे चाहता हूँ देता हूँ मगर मेरी दयालुता हर चीज़ पर छाई हुई है और उसे मैं उन लोगों के हक़ में लिखूगा जो अवज्ञा से बचेंगे, दान देंगे और मेरी आयतों पर ईमान लाएंगे।

(अत: आज यह दयालुता न लोगों का हिस्सा है) जो उस पैग़म्बर उम्मी नबी का अनुसरण करें जिसका उल्लेख उन्हें अपने यहाँ तौरात और इंजील में लिखा हुआ मिलता है। वह उन्हें नेकी का हुक्म देता है, बुराई से रोकता है, उनके लिए स्वच्छ चीज़ें वैध और अस्वच्छ चीज़ें अवैध करता है, और उन पर से वह बोझ उतारता है जो उन पर लदे हुए थे और वे बन्धन खोलता है जिनमें वे जकड़े हुए थे। अत: जो लोग उस पर ईमान लाएं और उसकी सहायता और समर्थन करें और उस प्रकाश का अनुसरण ग्रहण करें जो उसके साथ अवतरित हुआ है, वही सफ़ल होने वाले हैं। हे नबी! कहो, ऐ लोगो, मैं तुम सब की ओर उस अल्लाह का पैग़म्बर हूँ जो धरती और आकाशों के राज्य का मालिक है, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं है, वही जीवन प्रदान करता है और वही मृत्यु देता है, अत: मानो अल्लाह को और उसके भेजे हुए उम्मी नबी को जो अल्लाह और उसकी बातों को मानता है और उसके अनुयायी बनो, आशा है कि तुम सीधा मार्ग पा लोगे।" (७:१५४-१५८)

"अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करने वाले (देवक) तो वह लोग हैं जो अल्लाह और अंतिम दिन को मानें, और नमाज़ का आयोजन करें, दान दें और अल्लाह के सिवा किसी से न डरें उन्हीं से यह आशा है कि सीदी राह चलेंगे।" (९:१८)

क़ुरआन और ईशदूत

क़ुरआन इस बात की पुष्टि करता है कि ईश्वर ने हर जाति में अपने ईश्दूत भेजे, जिन्होने ईश्वर की शिक्षा लोगों तक पहुँचाई। अब अगर कोई व्यक्ति यह प्रश्न करे कि हमें कैसे ज्ञान होगा कि कौन ईश्दूत है कौन नहीं? तो इस विषय में कुछ कसौटियाँ हैं इन पर उसको परखा जा सकता है।

१. वह अपनी जाति में सर्वश्रेष्ठ होगा।

२. वह ईश्वर की ओर बुलाएगा।

३. उसके हाथों बहुत सारे चमत्कार होंगे। और ये चमत्कार उस क्षेत्र में होंगे जिनमें उसकी जाति के लोग अपने आपको बड़ा समझते होंगे।

४. वह स्पष्ट रूप से यह एलान करेगा कि मैं ईशदूत हूँ। इसलिए मेरी उपासना मत करो, क्योंकि मैं भी तुम्हारी तरह एक मनुष्य हूँ।

५. वह जो कुछ कहेगा सबसे पहले वह स्वयं उस पर अमल करेगा।

ईशदूतों का यह सिलसिला चलता रहा, यहाँ तक कि अंतिम दूत (प्रेषित मुहम्मद ﷺ) आए और प्रलय तक के लिए ईश शिक्षा मनुष्यों तक पहुंचा दिया और वह है क़ुरआन और आप की हदीस। अब मैं ईशदूत के विषय में क़ुरआन की कुछ आयात बयान करता हूँ।

"(मुसलमानों!) कहों कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस (मार्गदर्शन) पर जो हमारी ओर उतरा है और जो इब्राहीम, इस्माईल,

इसहाक़, याक़ूब और उनकी संतान की ओर उतरा था और जो मुसा और ईसा तथा दूसरे पैग़म्बरों को उनके प्रभु की ओर से दिया गया था। हम उनके बीच कोई अंतर नहीं करते और हम उसी की आज्ञा मानने वाले हैं।"

फिर यदि वे उसी तरह ईमान लाएं, जिस तरह तुम ईमान लाए हो, तो सीधे मार्ग पर हैं, और अगर इससे मुँह फेरें, तो खुली बात है कि वे हठधर्मी में पड़ गए हैं। अतः विश्वास रखो कि उनके मुक़ाबले में अल्लाह तुम्हारी सहायता के लिए काफ़ी है। वह सबकुछ सुनता और जानता है।" (२:१३६)

"नेकी यह नहीं है कि तुमने अपने चेहरे पूर्व की ओर कर लिए या पश्चिम की ओर, बल्कि नेकी यह है कि आदमी अल्लाह को और अंतिम दिन को और फ़रिश्तों को और अल्लाह की उतारी हुई किताब और उसके संदेशवाहकों को दिल से माने, और अल्लाह के प्रेम में अपना मन भाता धन नातेदारों और अनाथों पर, निर्धनों और मुसाफ़िरों पर, सहायतार्थ हाथ फैलाने वालों पर और ग़ुलामों की रिहाई पर ख़र्च करे, नमाज़ का आयोजन करे और दान दे, और (नेक) वे लोग हैं कि वचन दें तो उसे पूरा करें, और तंगी और विपत्ति के समय में और सत्य तथा असत्य के युद्ध में धैर्य दिखाएं। ये हैं सच्चे लोगों और यही लोग सुचिन्तित हैं।" (२:१७७)

"इन रसूलों में से किसी को हम ने किसी पर श्रेष्ठता प्रदान किया। उनमें कोई ऐसा था जिससे अल्लाह ने स्वयं बातें की, किसी को उसने ऊँचे दरजे दिए, और अंत में ईसा मरियम के बेटे को खुली निशानियाँ प्रदान की और

पवित्र आत्मा से उसकी सहायता की। यदि अल्लाह चाहता तो सम्भव था कि इन रसूलों के पश्चात जो लोग खुली निशानियाँ देख चुके थे, वे आपस में न लड़ते। परंतु उन्होंने परस्पर विभेद किया, फिर किसी ने माना और किसी ने इंकार की नीति अपनाई! हाँ, अल्लाह चाहता, तो वे कदापि न लड़ते, मगर अल्लाह जो चाहता है करता है।" (२:२५३)

"रसूल (ईश्वरीय संदेशवाहक) ने उस मार्गदर्शन को माना जो उसके प्रभु की ओर से उस पर उतरा है। और जो लोग इस रसूल के मानने वाले हैं, उन्होंने भी इस मार्गदर्शन को दिल से मान लिया है। ये सब अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों को मानते हैं और इनका कहना यह है कि हम अल्लाह के रसूलों को एक-दूसरे से अलग नहीं करते, हमने सुना और आज्ञाकारी हुए। (मालिक) हम तुझसे क्षमा के इच्छुक हैं और हमें तेरी ही ओर पलटना है।" (२:२८५)

"हे नबी! कहो कि हम अल्लाह को मानते हैं, उस शिक्षा को मानते हैं जो हम पर उतारी गई है, उन शिक्षाओं को भी मानते हैं जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़, याक़ूब और याक़ूब की संतान पर उतरी थीं, और उन आदेशों को भी मानते हैं जो मूसा और ईसा तथा दूसरे पैग़म्बरों को उनके प्रभु की ओर से दिए गए। हम उनके बीच अंतर नहीं करते और हम अल्लाह के आज्ञाकारी (मुस्लिम) है। इस आज्ञापालन (इस्लाम) के सिवा जो व्यक्ति कोई और दीन अपनाना चाहे उसका दीन कदापि स्वीकार न किया जाएगा और परलोक में वह असफ़ल रहेगा।" (३:८४,८५)

“नहीं, हे नबी ! तुम्हारे प्रभु की क़सम ये कभी ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक कि अपने आपस के मतभेद में ये तुमको फ़ैसला करने वाला न मान लें, फिर जो कुछ तुम फ़ैसला करो उस पर अपने दिलों में भी कोई तंगी न पायें, बल्कि स्वेच्छापूर्वक स्वीकार कर लें।" (४:६५)

"हे ईमान लाने वालों ! ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उसकी किताब पर जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारी है, और हर उस किताब पर जो इससे पहले वह उतार चुका है। जिसने अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों और अंतिम दिन का इंकार किया वह गुमराही में भटक कर बहुत दूर निकल गया।" (४:१३६)

“जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों के साथ इंकार की नीति अपनाते हैं, और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच अंतर करें, और कहते हैं कि हम किसी को मानेंगे और किसी को न मानेंगे, और इंकार तथा ईमान के बीच में एक राह निकालना चाहते हैं, वे सब पक्के काफ़िर हैं और ऐसे काफ़ीरो के लिए हमने वह यातना तैयार कर रखी है जो उन्हें अपमानित कर देने वाली होगी।

इसके विपरीत जो लोग अल्लाह और उसके सभी रसूलों को मानें, और उनके बीच अंतर न करें, उनको हम अवश्य उनकी मज़दूरियाँ देंगे, और अल्लाह बड़ा क्षमाशील और दया करने वाला है।" (४:१५०-१५२)

"हे किताब वालो ! अपने धर्म में अत्युक्ति से काम न लो और अल्लाह से लगा कर सत्य के अतिरिक्त कोई बात न कहो। मसीह ईसा मरियम का

बेटा इसके सिवा कुछ न था कि अल्लाह का एक रसूल था और एक आदेश था जो अल्लाह की ओर से (जिसने मरियम के गर्भ में बच्चे का रूप धारण किया) अतः तुम अल्लाह और उसके रसूलों को मानों और न कहो कि "तीन" हैं। बाज़ आ जाओ, यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है। अल्लाह तो बस एक ही पूज्य है। वह पाक है इससे कि कोई उसका बेटा हो। धरती और आकाशों की सारी वस्तुओं का वही मालिक है, और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति और उनकी ख़बर रखने के लिए बस वही काफ़ी है।" (४:१७१)

"अल्लाह ने इस्राईल की संतान से दृढ़ प्रतिज्ञा कराई थी और उनमें बारह सरदार नियुक्त थे और उनसे कहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, अगर तुमने नमाज़ क़ायम रखी और दान दिया और मेरे रसूलों को माना और उनकी सहायता की और अपने अल्लाह को अच्छा ऋण देते रहे तो विश्वास रखो कि मैं तुम्हारी बुराईयाँ तुमसे दूर कर दूंगा और तुम को ऐसे बाग़ में प्रवेश कराऊँगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। मगर इसके बाद जिसने तुम में से इंकार की नीति अपनाई तो वास्तव में उसने सुगम एवं सीधे मार्ग को गुम कर दिया। (५:१२)

"यह था हमारा वह तर्क जो हमने इब्राहीम को उसकी जाति वालों के मुक़ाबले में प्रदान किया। हम जिसे चाहते हैं ऊँचे पद प्रदान करते हैं। सत्य यह है कि तुम्हारा प्रभु अत्यंत बुद्धिमान और सर्वज्ञ है।

फिर हमेने इब्राहीम को इसहाक़ और याक़ूब जैसे पुत्र दिए और हर एक का पथ प्रदर्शन किया। (वह सीधा मार्ग जो) उससे पहले नूह को दिखाया था। और उसकी संतति से हमेन दाऊद, सुलैमान, अय्यूब, यूसुफ़, मूसा और हारून को (सीधा मार्ग दिखाया) इस प्रकार हम सत्कर्मी लोगों को उनकी नेकी का बदला देते हैं। (उसी की संतान से) ज़करिया, यह्या, ईसा और इलयास को (मार्ग दिखाया) हर एक इनमें नेक था। (उसी के वंशज से) इस्माईल, इलयास, यूनुस और लूत को (रास्ता दिखाया)। इनमें से हर एक को हमने सारे संसार वालों के मुक़ाबले में आगे रखा। यह भी कि उनके पूर्वजों और उनकी संतति और उनके भाई-बन्धुओं में से बहुतों को हमने अपना कृपा पात्र बनाया, उन्हें अपनी सेवा के लिए चुन लिया और उन्हें सीधा मार्ग दिखाया। यह अल्लाह का मार्गदर्शन है जिसके साथ वह अपने बंदों में से जिसको चाहता है पथ प्रदर्शन करता है। लेकिन अगर कहीं वे लोग शिर्क (बहुदेववाद) में पड़े होते तो उनका सब किया कराया नष्ट हो जाता। ये वे लोग थे जिनको हमने किताब और निर्णय शक्ति और पैग़म्बरी प्रदान की थी। अब यदि ये लोग इसको मानने से इंकार करते हैं तो (परवाह नहीं) हमने कुछ और लोगों को यह कृपानिधि सौंप दी है जो इसका इंकार नहीं करते।" (६:८३-८९)

क़ुरआन और प्रलय दिवस

प्रलय दिवस पर ईमान लाना क़ुरआन की प्रमुख शिक्षाओं में से एक है। क्योंकि मनुष्य इस जीवन में जो कुछ अच्छा या बुरा करता है उसको कभी भी पूरा-पूरा फल नहीं मिलता तो यह उस पर बहुत बड़ा ज़ुल्म होगा अगर उसको ईश्वर के सामने अपने अच्छे या बुरे कर्तव्यों का हिसाब न देना पड़े और बड़ी बात तो यह है कि क्या इस संसार के बाद कोई संसार नहीं? अगर ऐसा नहीं तो फिर अच्छाई और बुराई किस लिए? और ऐसा भी तो होता है कि हम जिसको बुरा कहते हैं दूसरा उसको अच्छा कहता है और जिसको वह अच्छा कहता है हम उसको बुरा कहते हैं। इसलिए प्रलय दिवस अनिवार्य है जहाँ अच्छाई और बुराई का सही फ़ैसला होगा और अपने-अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग या नरक मिलेगा। अब आईए क़ुरआन की निम्न लिखित आयत (श्लोक) को ध्यान से पढ़ें और उन पर विचार करें।

"जो किताब तुम पर उतारी गई है (अर्थात क़ुरआन) और जो किताबें तुमसे पहले उतारी गईं थीं उन सबको मानते हैं, और परलोक में विश्वास रखते हैं। ऐसे लोग अपने प्रभु की ओर से सीधे मार्ग पर हैं और वही पूर्ण काम हैं।" (२:४-५)

"और डरो उस दिन से जब कोई किसी के तनिक भी काम न आएगा, न किसी से कोई अर्थ दण्ड स्वीकार किया जाएगा, न कोई सिफ़ारिश ही आदमी को लाभ पहुँचा सकेगी, और न अपराधियों को कहीं से कोई सहायता पहुँच सकेगी।" (२:१२३)

"नेकी यह नहीं है कि तुमने अपने चेहरे पूर्व की ओर कर लो या पश्चिम की ओर, बल्कि नेकी यह है कि आदमी अल्लाह को और अंतिम दिन को और फ़रिश्तों को और अल्लाह की उतारी हुई किताब और उसके संदेशवाहकों को दिल से माने, और अल्लाह के प्रेम में अपना मनभाता धन नातेदारों और अनाथों पर, निर्धनों और मुसाफ़िरों पर सहायतार्थ हाथ फैलाने वालों पर और ग़ुलामों की रिहाई पर ख़र्च करे, उपासना (नमाज़) का आयोजन करे और दान दे। और नेक वे लोग हैं कि वचन दें तो उसे पुरा करें, और तंगी और विपत्ति के समय में और सत्य और असत्य के युद्ध में धैर्य दिखाएं। ये हैं सच्चे लोग और यही लोग सुचिन्तित हैं।" (२:१७७)

“पालनहार, तू निश्चय ही सब लोगों को एक दिन इकठ्ठा करने वाला है, जिसके आने में कोई संदेह नहीं। तू कदापि अपने वादे से टलने वाला नहीं है।" (३:९)

"और वे लोग भी अल्लाह को पसन्द नहीं हैं, जो अपने माल केवल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं और वास्तव में न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न अंतिम दिन पर। सच यह है कि शैतान जिसका साथी हुआ उसे बहुत ही बुरा साथ प्राप्त हुआ।" (४:३८)

"हे लोगों जो ईमान लाए हो, बात मानो अल्लाह की और बात मानो रसूल की और उन लोगों की जो तुमसे से आदेश देने के अधिकारी हों। फिर अगर तुम्हारे बीच किसी मामले में झगड़ा खड़ा हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर फेर दो, अगर तुम वास्तव में अल्लाह और अंतिम

दिन पर ईमान रखते हो। यही एक सही कार्यप्रणाली है और परिणाम की दृष्टि से भी अच्छा है।" (४:५९)

“और याद करो जब कि तुम्हारे प्रभु ने घोषणा कर दी कि वह पुनरुज्जीवन के दिन तक निरंतर ऐसे लोग उन (इस्राईलियों) पर नियुक्त करता रहेगा जो उनको बहुत ही यातना देंगे। निश्चय ही तुम्हारा प्रभु दण्ड देने में तीव्र है और निश्चय ही वह क्षमा और दया से भी काम लेने वाला है।" (७:१६७)

"अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करने वाले (सेवक) तो वही लोग हो सकते हैं जो अल्लाह और अंतिम दिन को मानें, और नमाज़ का आयोजन करें, दान दें, और अल्लाह के सिवा किसी से न डरें। उन ही से यह आशा है कि सीधी राह चलेंगे। क्या तुम लोगों ने हाजियों को पानी पिलाने और प्रतिष्ठित मस्जिद (काबा) की मुजाविरी करने को उस व्यक्ति के काम के बराबर ठहरा लिया है जो ईमान लाया अल्लाह पर और अंतिम दिन पर और जिसने संघर्ष किया अल्लाह के मार्ग में? अल्लाह की दृष्टि में तो ये दोनों बराबर नहीं है और अल्लाह अत्याचारियों को राह पर नहीं लगाया करता।" (९:१८-१९)

“(आज ये दुनिया की ज़िंदगी में मस्त हैं) और जिस दिन अल्लाह इनको इकठ्ठा करेगा तो (यही दुनिया की ज़िंदगी इन्हें ऐसी लगेगी) मानो ये केवल एक घड़ी भर आपस में जान-पहचान करने को ठहरे थे। (उस समय सिद्ध हो जाएगा कि) वास्तव में बड़े घाट में रहे वे लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और कदापि वे सीधे मार्ग पर नथे।" (१०:४५)

"तुम्हारा पूज्य प्रभु बस एक ही पूज्य है। किंतु जो लोग परलोक को नहीं मानते उनके दिलों में इंकार बस कर रह गया है और वे घमण्ड में पड़ गए हैं। अल्लाह निश्चय ही इन सबकी करतूद जानता है छुपी हुई भी और खुली हुई भी। वह उन लोगों को कदापि पसंद नहीं करता जो अहंकार में पड़े हुए हों।" (१६:२२-२३)

“वास्तविकता यह है कि जो लोग परलोक को नहीं मानते उनके लिए हमने उनकी करतूतों को शोभायमान बना दिया है, इसलिए वे भटकते फिरते हैं।" (२७:४)

“अलिफ-लाम-मीम यह तत्वदर्शिता युक्त ग्रन्थ की आयतें हैं, मार्गदर्शन और दयालुता उत्तमकार लोगों के लिए, जो नमाज़ क़ायम करते हैं, ज़कात देते हैं और परलोक पर विश्वास रखते हैं।" (३१:१-४)

क़ुरआन और ज्ञान

लोगों का ख़ियाल है कि धर्म और ज्ञान एक जगह जमा नहीं हो सकते, क्योंकि धर्म की रूपरेखा अंध विश्वास पर स्थित है, जहाँ ज्ञान की रौशनी पहुँच कर हलचल मचा देती है। इसलिए धार्मिक पुरुषों ने लोगों के ज्ञान प्राप्त करने पर रोक लगा रखी है। यही वजह थी कि जब यूरोप में ज्ञान की रौशनी फैली तो पोप व्याकुल हो उठे और उन्होंने ईसाई मत को बचाने के लिए विद्वानों की कड़ी आलोचना शुरू कर दी, यहाँ तक कि सैंकड़ों वैज्ञानिक फाँसी के तख्ते पर लटका दिए गए और उनकी मेहनत के फल को आग में डाल दिया गया। जिसके नतीजे में ऐसे विचार फैलने लगे कि धर्म और ज्ञान कभी भी एक स्थान पर जमा नहीं हो सकते और आज फिर इसी विचार को पूरी शक्ति के साथ लोगों में फैलाया जा रहा है।

वैसे हम धार्मिक इतिहास का अध्ययन करते हैं तो पता चलता है कि बहुत सारे धर्मों की स्थापना अंधविश्वास पर ही हुई है, और धर्म की व्याख्या ख़याली बातों से की गई है। इन्हें जब ज्ञान की कसौटी पर रख कर परखा जाता है तो दोनों मे बड़ा अंतर दिखाई पड़ता है। इसलिए कि आज के ज्ञानी लोग देवी देवताओं की कहनियों में यक़ीन नहीं रखते। इतिहास के ख़याली सूरमाओं से उनका विश्वास उठता जा रहा है। धर्म के रस्मों रिवाज में उनको कोई कशिश नहीं दिखाई देती और अब वे पूजा पाठ से बेज़ार दिखाई देते हैं। उनकी इस हालत ने उनको ईश्वर का बाग़ी बना दिया है।

बीसवीं शताब्दी में यह हैं धर्म की विकृत अवधारणा। शायद इंसानी बुद्धि की वह अंतिम पहुँच है, जब वह स्थान और समय की हद पार कर अपने ज्ञान की रौशनी में ही अपने भविष्य को प्रत्यक्ष देखना चाहता है। अब वह धरती पर रहते हुए आकाश की सैर कर रहा है। अब इसका पाँव चाँद के सौन्दर्य को भी रौंदने लगा है। शायद इसी लिए आज के वैज्ञानिक युग में भी कुछ लोग धर्म को केवल कुछ अंधविश्वासों का मजमूआ समझने पर तुले हुए हैं, जिस के कारण धर्म का एक ग़लत रूप लोगों के सामने आने लगा है।

इस समय मैं दूसरे धर्मों से हट कर केवल इस्लाम की उन शिक्षाओं को आप के सामने प्रस्तूत करना चाहता हूँ जिसमें उसने ज्ञान प्राप्त करने पर पूरा-पूरा ज़ोर दिया है और ज्ञान रहित विश्वास को कोई महत्व नहीं दिया है। इसको पढ़ते हुए आप आज से चौदह सौ साल पहले का माहौल अपने सामने रखें तो आप को अच्छी तरह मालूम हो जाएगा कि इस्लाम की शिक्षा कितनी वैज्ञानिक और सत्यता पर आधारित है कि उसने ऐसे समय में भी ज्ञान प्राप्त करने की शिक्षा दी जब ज्ञान नाम की कोई चीज़ नहीं थी। जीवन या तो खाने-पीने का नाम था या फिर कुछ देवी देवताओं के प्रति अंधविश्वास का। क़ुरआन की सबसे पहली आयत जो ईश्वर के पैग़म्बर प्रेषित मुहम्मद ﷺ पर अवतरित हुई वह यह थीः

> “पढ़ अपने पालनहार का नाम लेकर, जिसने पैदा किया। पैदा किया इंसान को एक लोथड़े से। पढ़ और तेरा पालनहार बड़ा ही उदार है, जिसने ज्ञान सिखाया, क़लम के द्वारा, ज्ञान दिया इंसान को उस चीज़ का जिस को वह नहीं जानता था।" (९६:१-५)

इन आयतों पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि इस्लाम शिक्षा पर कितना बल देता है, जिसकी पहली पुकार ही ज्ञान प्राप्त करने से सम्बंध रखती है और सही बात तो यह है कि जिस धर्म का आरम्भ ही शिक्षा और ज्ञान से हो उसका अंत कितना अधिक ज्ञान से पूर्ण होगा।

आगे के पृष्ठों में हम साबित करेंगे कि क़ुरआन कितना वैज्ञानिक ग्रंथ है जिसमें ज्ञान का एक ऐसा भण्डार है कि उस पर जितना भी विचार किया जाए अंत होने को नहीं आता।

शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणाः

क़ुरआन कहता है:

> "ऐसा क्यों न हुआ कि उनके हर गिरोह में से एक टोली निकलती ताकि वे धर्म में समझ पैदा करते और वे अपने लोगों को होशियार करते, जब कि वे उनकी ओर पलटते। इस तरह शायद वे बुरे कामों से बच जाते।" (९:१२२)

क़ुरआन की यह एक आयत उन सब आरोपो को झुठलाने के लिए काफ़ी है, जिनके अनुसार इस्लाम ज्ञान और विज्ञान के खिलाफ़ है। अगर ऐसी बात होती तो क़ुरआन इस तरह पुकार कर आवाज़ न लगाता कि ऐ लोगों! अपने घरों से शिक्षा प्राप्त करने के लिए निकलो, ताकि संसार को सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म और अच्छे बुरे कर्मों से सचते कर सको।

आज सारा संसार ज़ुल्म की आग में झुलस रहा है, जब कि इंसान धरती पर रहते हुए आकाश का स्वप्न देखने लगा है। मगर जिस सुख चैन के लिए उसने अपनी पूँजी ख़र्च कर डाली है वह उसको अब तक प्राप्त नहीं हुआ। इसलिए कि वह अपने सत्य मार्ग से मुँह मोड़कर किसी और रास्ते पर चल पड़ा है। उसकी शिक्षा का मक़सद था कि संसार की सही रहनुमाई और मार्गदर्शन करे, परन्तु आज वह एटम बम बनाकर उसको ग़लत जगह इस्तेमाल कर रहा है और अपनी ताक़त को इंसानों की भलाई के बजाए उसे नष्ट-विनष्ट करने में लगा हुआ है। अगर शिक्षा इसी का नाम है तो वास्तव में इस्लाम इसके ख़िलाफ़ है, मगर वह शिक्षा जो इंसान को इंसान बनाने के लिए प्राप्त की जाए, इस्लाम के ख़िलाफ़ कभी नहीं रहा न है और न रहेगा। आप को ताज्जुब होगा कि क़ुरआन अपने नबी को सम्बोधित कर के कहता है:

"हे (मुहम्मद) जान लो कि अल्लाह के अलावा और कोई इबादत के लायक नहीं।" (४७:१९)

इसमें इस बात की तरफ़ इशारा है कि ईश्वर की उपासना और इबादत उस समय तक सही नही होगी जब तक उपासक को यह न मालूम हो जाए कि लायक़ तो केवल ईश्वर है। दूसरे शब्दों में ये कह सकते हैं कि उपासक को चाहिए कि उपासना करने से पहले अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त कर ले। अगर ऐसा नहीं किया तो उसकी उपासना कोई महत्व नहीं रखती।

इसमें उन लोगों के लिए चेतावनी है जो धर्म को केवल अंधविश्वासों का योग समझते हैं और उसकी वास्तविकता से अच्छी तरह परिचित होने की चेष्टा

नहीं करते। हो सकता है कि उनका यह दृष्टिकोण दूसरे धर्मों के लिए सत्य हो परंतु इस्लाम इसके बिलकुल विपरीत है।

मैं अपनी इस बात को कुछ और स्पष्ट करने के लिए यहाँ प्रेषित मुहम्मद ﷺ की कुछ पवित्र शिक्षाएं नक़ल कर रहा हूँ ताकि इस्लाम में शिक्षा के महत्व को भली-भाँति समझा जा सके।

क़ैस बिन कसीर कहते है कि एक बार मैं हज़रत अबू दरदा के साथ दमिश्क़ की मस्जिद में बैठा था कि इतने मे एक आदमी आया और कहने लगा, ऐ अबू दरदा! मैं मदीने से आप के पास इसलिए आया हूँ कि मुझे ख़बर मिली है कि मुहम्मद ﷺ की हदीस बयान करते हैं।

अबू दरदा ने फ़रमाया, मैंने अल्लाह के रसूल ﷺ से सुना है, आप फ़रमाते थे: ((जो व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करने के लिए रास्ता तय करके आगे बढ़ता है उसके रास्ते में फ़रिश्ते पर बिछाते हैं और ईश्वर उसके रास्ते को आसान कर देता है।)) (अबू दाऊद तथा तिर्मिजी)

हज़रत अनस रज़ीयल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमायाः ((जो व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करने के लिए निकलता है वह अल्लाह के रास्ते में है, यहाँ तक कि वापस आ जाए)) (तिर्मिजी)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमायाः ((जिसके साथ ईश्वर भलाई करना चाहता है उसको धर्म में सूझ-बूझ प्रदान कर देता है।)) (तिर्मिजी)

अबू दरदा कहते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ का उपदेश है कि: ((शिक्षित व्यक्ति की विशेषता उपासक पर उसी प्रकार है, जिस प्रकार चौदहवीं के चाँद की विशेषता सारे सितारों पर। और शिक्षित लोग नबियों के वारिस हैं और नबी दीनार तथा दिरहम नहीं छोड़ कर जाते, बल्कि वे शिक्षा और ज्ञान छोड़ते हैं, इसलिए जिसने शिक्षा ग्रहण की उसने बहुत बड़ा भाग्य प्राप्त किया।) (तिर्मिजी)

अबू हुरैरह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल ने फ़रमाया: ((ज्ञान की बात मोमिन की खोई हुई सम्पत्ति है। इसलिए वह उसको जहाँ भी पायें उसके वही हक़दार है।)) (तिर्मिजी)

ये तो कुछ वे हदीसें हुई जो शिक्षा प्राप्त करने पर उभारती हैं। अब आईए आपको कुछ ऐसी हदीसें भी सुनाऊँ जो ज्ञान छिपाने और उसको दूसरों तक न पहुँचाने पर कड़ी आलोचना करती है। इस प्रकार आप को मालूम हो जाएगा कि इस्लाम शिक्षा प्राप्त करने पर किस तरह उभारता है और दूसरे शब्दों में इस्लाम कितना वैज्ञानिक धर्म है।

ज्ञान छिपाने वालों की कड़ी आलोचनाः

शिक्षा की इसी विशेषता के कारण क़ुरआन उन लोगों की कड़ी आलोचना करता है जो ज्ञान रखते हुए भी उसको दूसरों से छिपाते हैं और उस को समाज में फैलाने की कोशिश करते, ताकि और लोग उससे लाभ उठा सकें। इससे यह बात भली-भाँति स्पष्ट हो जाती है कि इस्लाम में शिक्षा का कितना महत्व है।

आईए आप के सामने क़ुरआन की कुछ ऐसी आयतों का अर्थ स्पष्ट कर दूं जो ज्ञान छिपाने वालों की कड़ी आलोचना करती है:

"और उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जिसके पास ईश्वर की ओर से गवाही हो और वह उसे छिपाए।" (२:१४०)

गवाही का अर्थ उलमा यह लेते हैं कि यहूदियों और ईसाईयों की किताबों में मुहम्मद ﷺ के आने की ख़बर दी गई थी, परंतु उन्होंने उसको छिपा दिया और नबी ने अपने नबी होने का दावा किया तो उन्होंने आपको ठुकरा दिया।

*

* हिन्दु धर्म के ग्रंथ वेद और पुराणों में भी प्रेषित मुहम्मद ﷺ के आने की सूचना दी गई है। इसके कुछ नमूने यहाँ पेश करते है:

((एक-दूसरे देश में एक आचार्य अपने मित्रों के साथ आएंगे उनका नाम महामद होगा, वे रेगिस्तानी क्षेत्र में आएंगे। (भविष्य पुराण अ. ३२३ सू. ५/८)

स्पष्ट रूप से इस श्लोक और सूत्र में नाम और स्थान के संकेत हैं। आने वाले महान पुरूष की अन्य निशानियाँ इस प्रकार बयान हुई है:

((पैदाईशी तौर पर उनका ख़तना किया हुआ होगा, उनके जटा नहीं होगी, वे दाढ़ी रखे हुए होंगे, गोश्त खाएंगे, अपना संदेश स्पष्ट शब्दों में जोरदार तरीक़े से प्रसारित करेंगे, अपने संदेश के मानने वालों को मूसलाई नाम से पुकारेंगे।))

इस श्लोक को ध्यानपूर्वक देखिए। ख़तने का रिवाज हिंदुओं में नहीं था। जटा यहाँ का धार्मिक निशान था। आने वाले महान पुरूष अर्थात मुहम्मद ﷺ के अंदर ये सभी बातें पाई जाती हैं। फिर इस संदेश के मानने वालों के लिए मूसलाई का नाम है। यह शब्द मुस्लिम और मुसलमान की ओर संकेत करता है।

अथर्व वेद अध्याय २० में हम निम्नलिखित श्लोक देख सकते हैं: ((हे भगतो! इस को ध्यान से सुनो, प्रशंसा किया गया, प्रशंसा किया जाने वाला वह महामहे महान ऋषि साठ हजार नव्वे लोगों के बीच आएगा।)

मुहम्मद के मायने हैं जिसकी प्रशंसा की गई हो। आप की पैदाईश के समय मक्का की आबादी साठ हजार थी।

क़ुरआन मजीद नबी को 'जगत के रहमत' के नाम से याद करता है। ऋग्वेद में भी है: ((रहमत का नाम पाने वाला, प्रशंसा किया हुआ दस हजार साथियों के साथ आएगा।) (मंत्र ५/२८)

इसी तरह वेद में महामहे और महामद के नाम से भी के आगमन का उल्लेख है। (देखिए लेखक की अरबी पुस्तक "दिरासाति फ़िल् यहूदिय्यति वल् मसिहिय्यति व अद्यानल् हिन्द)

यह अर्थ अपने स्थान पर सही है मगर आप इसको और भी विस्तृत कीजिए और इस में हर उस गवाही को शामिल कर लीजिए जो अल्लाह ने आप को सौंपी है, चाहे वह शिक्षा हो या किसी विशेष वस्तु का ज्ञान, जो मानव समाज के लिए लाभदायक हो।

"सत्य को असत्य से गड-मड न करो और जानते बूझते सत्य को न छिपाओ।" (२:४२)

"रसूल पर पहुँचा-देने के अलावा और कोई ज़िम्मेदारी नहीं, और अल्लाह सब जानता है जो कुछ तुम खुले करते हो और जो छिपाते हो। (५:९९)

"और याद करो जब अल्लाह ने उन लोगों से जिन्हें किताब दी गई थी यह पक्का वादा लिया कि तुम इस किताब को लोगों के सामने भली-भाँति स्पष्ट करोगे और इसे छिपाओगे नहीं, तो उन्होंने इसे पीठ पीछे डाल दिया और

थोड़े मूल्य पर इसका सौदा किया। तो क्या ही बुरा सौदा है जो ये करते हैं।" (३:१८७)

इन आयतों से यह बात अच्छी तरह स्पष्ट हो जाती है कि पिछली जातियों ने अल्लाह की ओर से दी गई किताब को लोगों से छिपा कर रखा और उसको भली-भाँति उन तक नहीं पहुँचाया और यह एक प्रकार का बहुत बड़ा अत्याचार है, क्योंकि यह किताब ज्ञान का भंडार थी उसको छिपाने वाला बहुत बड़ा अत्याचारी और धर्म विरोधी व्यक्ति है। क़ुरआन में है:

"निस्सन्देह जो लोग हमारी उतारी हुई खुली-खुली निशानियों और मार्गदर्शन को छिपाते हैं, जब कि हम उसे लोगों की रहनुमाई के लिए अपनी किताब में खोल कर बयान कर चुके हैं, वही हैं जिन पर अल्लाह की फटकार पड़ती है और फटकारने वाले जिन्हें फटकारतें हैं। (२:१५९)

"निस्सन्देह जो लोग उस चीज़ को छिपाते हैं जो अल्लाह ने अपनी किताब में उतारी हैं, और उनके बदले थोड़ा मूल्य प्राप्त करते हैं, वे अपने पेट में आग के सिवा किसी और चीज़ को नहीं भर रहे हैं और कयामत के दिन न तो अल्लाह उनसे बात करेगा और न उन्हें पाक करेगा। उनके लिए दुखदायिनी यातना है।" (२:१७४)

ये वे कुछ आयते हैं जो ज्ञान छिपाने वालों पर कड़ी आलोचना करती हैं, इनसे भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है कि इस्लाम में शिक्षा का कितना महत्व हैं। अब आईए अल्लाह के रसूल के कथनों की रौशनी में इस बात को और स्पष्ट करूँ।

अबू हुरैरह रज़ीयल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है, फ़रमाया अल्लाह के रसूल ﷺ नेः ((जिससे कोई ज्ञान की बात पूछी गई हो और वह उसको जानता हो, मगर उसने उसको छिपा दिया, उसे प्रलय के दिन आग की लगाम लगाई जाएगी।)) (तिर्मिज़ी तथा अबूदाऊद)

इस हदीस में उन लोगों की कड़ी आलोचना है जो ज्ञान रखते हुए भी उसको लोगों तक नहीं पहुंचाते, जिसके कारण वह ज्ञान कुछ लोगों तक ही रुक जाता है और उसका लाभ दूसरों को नहीं पहुँचता। क्योंकि दुसरों तक ज्ञान पहुँचाने में उसकी बढ़ोतरी है और अपने तक रख लेना उसके लिए नुक़सान है। यह भी हो सकता है कि ज्ञान जिसे दूसरे तक पहुँचाया गया है, वह उससे अधिक समझ रखने वाला हो और उसके द्वारा अधिक फ़ायदा उठावे जैसा कि एक दूसरी हदीस में आया है।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु का कहना है कि मैंने अल्लाह के रसूल ﷺ को यह कहते सुनाः ((अल्लाह उस बंदे को खुश रखे जिसने मेरी बात सुनी, उसे याद रखा और ठीक रूप में लोगों तक पहुँचाया। क्योंकि प्रायः ऐसा होता है कि समझ और विवेक की बात का पहुँचाने वाला स्वयं समझदार नहीं होता और ऐसा भी होता है कि समझ और विवेक की बात का पहुँचाने वाला ऐसे व्यक्ति तक पहुँचा देता है जो कि उससे कहीं ज्यादा विवेकशील होता है।)) (तिर्मिज़ी तथा अबू दाऊद)

इस हदीस में जिस बात की ओर इशारा किया गया है वह यह है कि ज्ञान वालों को ज्ञान छिपाना नहीं चाहिए। इसकी वजह से पूरे समाज का नुक़सान

होता है, क्योंकि ज्ञान धारक प्राय: अपने ज्ञान का लाभ नहीं समझता। इसलिए अगर वह दूसरों तक वह ज्ञान पहुँचा देता है तो दूसरे उससे इच्छानुसार लाभ उठा सकते हैं, क्योंकि ईश्वर ने प्रत्येक व्यक्ति में यह सलाहियत नहीं रखी है कि अच्छी बातों को समाज में लागू कर सके। इसलिए इस हदीस में एक प्रकार से उन लोगों की आलोचना है जो ज्ञान को दूसरों तक नहीं पहुँचाते।

हाँ, इतनी बात ज़रूर याद रखनी चाहिए कि ज्ञान पहुंचाते हुए उस व्यक्ति को भी अच्छी तरह देख लेना चाहिए, जिसको शिक्षा दी जा रही है कि कहीं वह उस शिक्षा के कारण फ़ितने में न पड़ जाए जैसा कि एक हदीस में आया है: अब्दुल्लाह बिन मसऊद से उल्लिखित है, उन्होंने कहा कि: ((लोगों को हदीस सुनाते समय उनकी समझ-बूझ का ख़ियाल रखो। कहीं ऐसा न हो कि तुम उनको ऐसी बातें बता दो जो उनकी समझ से ऊँची हों और उनके कारण एक प्रकार का फ़ितना पैदा हो जाए।))(मुस्लिम)

यद्यपि यह नबी ﷺ की हदीस नहीं है, परंतु इससे यह बात भली-भाँति स्पष्ट होती है कि हदीस बयान करते समय लोगों की समझ-बूझ का सदैव ख़्याल रखा जाना चाहिए।

यह बातें हमारे समाज के लिए कितनी वैज्ञानिक है कि आज संसार में जो हंगामा और शोर मचा हुआ है उसका एक कारण यह भी है कि हमारे नेता भाषण करते समय यह भूल जाते हैं कि उनकी बातों से समाज पर क्या बुरा असर पड़ेगा।

इस बारे में मैं इतना ही कहूँगा कि ज़रा क़ुरआन पर एक नज़र (दृष्टि) डाल कर देखें, इसमें आपको बहुमूल्य हीरे मिलेंगे, जिस का अगर विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाए तो संसार के सारे कागज़ और रोशनाई समाप्त हो जाए फिर भी उनकी तह तक मनुष्य नहीं पहुँच सकता। इसी ओर क़ुरआन संकेत करता है:

"और धरती में जितने वृक्ष हैं यादि वे सब लेखनी हो जाएं और यह समुद्र हो, जिसे सात और समुद्र रोशनाई पहुँचाए, तब भी अल्लाह की बातें (लिखने से) समाप्त नहीं होगी, निश्चय ही अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।" (३१:२७)

क़ुरआन और समाज

१.संगठन और क़ुरआन

दुनिया में दो तरह के इंसान पाए जाते हैं। एक वे जो अपने लिए जीते हैं और अपने लिए ही मरते हैं, दूसरे वे कि जिनका जीना-मरना दूसरों के लिए होता है। पहली तरह के लोगों में और पृथ्वी के दूसरे कीड़े-मकोड़ों और पशुओं में कोई विशेष अंतर नहीं है। रहे दूसरे प्रकार के लोग तो यही वे हैं जिनको संसार ने बहुत ऊँचा स्थान दिया है। इन्हीं के कारण संसार चल रहा है। जिस दिन इनका वजूद ख़त्म हो जाएगा उस दिन यह हरी-भरी दुनिया भी ख़त्म हो जाएगी। जीते जी दुनीया मौत की गोद में दिखाई देगी। इस लिए संसार के सभी धर्मों ने इसकी बड़ी प्रशंसा की है। दूसरों की मदद पर उभारा है और इसको मानवता का उच्च धर्म बताया है। मनुष्य तो वही है जो मनुष्य के लिए मरे!!

अब आईए हम देखें कि क़ुरआन ने इसके लिए क्या शिक्षा दी है।

> "भलाई के कामों और ईश भय के कामों में एक दूसरे की मदद करो। हाँ, बुरे कामों में और किसी पर अत्याचार करने में मददगार मत बनो।" (५:२)

वास्तव में यह आयत सामाजिक जीवन बिताने का बेहतरीन रास्ता बतला रही है और वह यह कि जब समाज के कुछ अच्छे लोग समाज की बुराईयों को मिटाने की कोशिश करना चाहें तो उनको चाहिए कि सबसे पहले एक

संघ या जमाअत बनाएं उसमें उन लोगों को दाख़िल करें जो समाज की सेवा करना चाहते हैं या यूँ कहिए कि उन सभी लोगों को चाहिए कि स्वयं आगे बढ़कर इस संघ की सहायता करें जो समाज से बुराईयाँ मिटाना चहता है। क्योंकि एक व्यक्ति अकेला समाज की बुराईयों का सामना नहीं कर सकता, एक तो उसकी ताक़त इतनी कम होगी कि कोई उसकी ओर ध्यान भी नही देगा, दूसरे वह ख़ूद बहुत जल्द थक हार कर बैठ जाएगा। आप संसार के किसी भी बड़े से बड़े सेवक का जीवन चरित्र उठा कर देखें तो आप को उनके पीछे पूरी एक सेना दिखाई देगी, जिन्होंने उनका हाथ बटाया, उनको साहस दिया और अंत में वे अपने मिशन में सफ़ल होकर इस संसार से विदा हो गए।

सूरह माएदा की इस आयत में इसी बात की ओर इशारा किया गया है, जब कोई व्यक्ति भलाई की ओर तुम को बुलाए तो तुम्हारे लिए अनिवार्य हो जाता है कि उसकी मदद करो। कहीं ऐसा न हो कि इस हलचल में उस बेचारे की आवाज़ दब कर रह जाए और बुरे लोग ऊपर उठते रहें। इसी की ओर एक दूसरी आयत इशारा कर रही है।

"जो लोग ईश मार्ग से विमुख हैं, वे एक-दूसरे के सहायक हैं (अर्थात दूसरों को भी उसी ओर पुकारते हैं) इसलिए वह जन-समूह जो ईशमार्ग अपनाना चाहते हैं अगर आपस में प्रेम-भाव और महानता का बरताव नहीं करेंगे तो फिर यह पृथ्वी दंगे फसाद का अखाड़ा बन जाएगी।" (८:७३)

देखा आपने इसने तो साफ़-साफ़ व्यक्त कर दिया कि सामाजिक सेवा के लिए एक-दूसरे के साथ हमदर्दी का बरताव बहुत ही ज़रूरी है, नहीं तो यह ज़मीन मानवता के पुण्य रक्त से भर जाएगी और उस समय ईश भक्तों को सिर छिपाने की जगह नहीं मिलेगी।

इस आयत का मतलब तो वे लोग भली-भाँति समझ सकते हैं जिनको कभी यूरोप की यात्रा करने का अवसर मिला हो या जिन्होंने यूरोप का इतिहास ही पढ़ा हो कि आज वहाँ मानवता की कैसी दुर्दशा हो रही है। बाप-बेटी और बहन-भाई में कोई अंतर नही, खुली सड़क पर व्याभिचार हो रहा है। पार्कों और कलबों में नंगा नाच हो रहा है। स्थान-स्थान पर शराब की दुकानें खुली पड़ी हैं। नवयुवक और कोमल कुमारियाँ यौवन मस्ती का नाटक खेल रहे हैं। कॉलेज और विश्वविद्यालय जो कि सभ्यता सिखाने के पुण्य स्थान थे अब व्याभिचार के अड्डे बन गए हैं। मिली-जुली शिक्षा के कारण अस्सी प्रतिशत लड़कियाँ आयु से पहले माँ बन जाती हैं। मैं कहाँ तक उनका वर्णन करूँ, बस यूँ समझ लीजिए कि वह कौन सी बुराई है जो आज यूरोप के खुले बाज़ारों में नहीं पाई जाती। यह इस बात का नतीजा है कि ईश भक्तों ने आपस में मिलकर इन बुराईयों के विरुद्ध कोई संघ नहीं बनाया, बल्कि वे स्वयं आपस में ही लड़ते रहे। बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि आज एशिया भी इन्हीं के मार्ग पर चलना चाहता है। यहाँ भी ईश भक्तों की आपस में लड़ाई छिड़ गई है और अगर यही दशा रही तो यहाँ भी कोई ईश्वर का नाम लेने वाला नहीं रहेगा। वह माँ-बहने जिनकी इज़्ज़त व आबरू के लिए हम जानें

निछावर करते हैं कल खुली सड़क पर नंगें नाटक खेलेंगी। इसी की ओर क़ुरआन संकेत करता है:

"लोगों के गुनाहों के कारण पृथ्वी और समुद्र में फ़साद फैल गया।" (३०:४१)

ईशभक्तों की विशेषता बताते हुए क़ुरआन कहता है:

"ईमान लाने वाले पुरूष और ईमान लाने वाली महिलऐं आपस में एक-दूसरे के संरक्षक मित्र होते हैं। अच्छे कामों की शिक्षा देते हैं और बुरे कामों से रोकते हैं। नमाज़ क़ायम करते हैं और उसके मार्ग में ख़र्च करते हैं, अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञाओं का पालन करते हैं। ऐसे ही लोगों पर अल्लाह दया करेगा, नि:संदेह अल्लाह बड़ी ताक़त और हिकमत वाला है।" (९:७१)

उस गिरोह को क़ुरआन ने सफ़लता का वरदान दिया है जो भलाई की शिक्षा देता है, कहता है:

"तुम में एक ऐसा गिरोह होना चाहिए जो लोगों को भलाई की ओर बुलाए और नेकी का हुक्म दे और बुराईयों से रोके, बस यही लोग हैं जो सफ़लता प्राप्त करने योग्य हैं।" (३:१०४)

१.माँ-बाप और क़ुरआन

माँ-बाप की सेवा इंसान के दिल की पुकार है। मैं तो समझता हूँ कि अगर ईश्वर हमको इसका हुक्म न भी देता तो भी इंसान इससे वंचित नहीं रह

सकता था, क्योंकि जब हम अपने जन्म दिवस से लेकर बड़े होने तक के इस दौर पर विचार करते हैं तो बड़ी आसानी से यह बात समझ में आ सकती है कि माँ-बाप ही ने हमको पाल पोसकर बड़ा किया। अगर वह हमारी ओर ध्यान न देते तो हम एक दिन भी संसार में जीवित न रह सकते थे। इन्होंने हमारी शिक्षा-दीक्षा का अच्छे से अच्छा प्रबंध किया, अगर वे ऐसा न करते तो हम बिल्कुल मूर्ख रहते। अपने सुख चैन को त्याग कर हम पर अपनी गाढ़ी कमाई ख़र्च की, अगर वे ऐसा न करते तो हम एक-एक पाई के लिए तरस जाते। तो क्या वह व्यक्ति जिसने हमारे लिए यह सबकुछ किया उसके प्रति हमारा कर्तव्य नहीं।

क़ुरआन ने इस सिलसिले में बड़ी शिष्टाचारमय एवं उत्तम शिक्षाएं दी हैं:

"और तेरे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो, माँ बाप के साथ उत्तम व्यवहार करो, उन दोनों में से कोई एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएं तो उनको 'उफ़ तक मत कहो और न उनको झिड़को, बल्कि उनके साथ मीठी मीठी बातें करो और उनके लिए दयालुता के साथ विनम्रता की भुजा झुका दो और कहो, हे मेरे रब जिस प्रकार इन्होंने बचपन में मेरा पालन-पोषण किया तू भी इन पर दया कर।" (१७:२३-२४)

“और हमने इंसान को ताकीद की है कि वह अपने माँ और बाप के साथ उत्तम व्यवहार करें। लेकिन अगर वे तुझ पर दबाव डालें कि तू किसी चीज़ को मेरा साझी ठहराए जिसके बारे में तुझे कोई ज्ञान नहीं है तो उनकी इस

बात को ठुकरा देना। (याद रखो कि) तुम्हें मेरी ही ओर वापस लौट कर आना है फिर मैं बता दूँगा कि तुम क्या कुछ करते थे।" (२९:८)

इस आयत में एक ख़ास बात यह बताई गई है कि अगर माँ-बाप ईश्वरीय आज्ञाओं का उल्लंघन कराएं तो संतान को चाहिए कि वह ऐसा करने से इंकार कर दें, क्योंकि ईश्वर ही ने हम को पैदा किया, उसने हमारे लिए दयावान माँ-बाप दिए। उसी ने दुनिया जहान की बेशुमार चीज़ें हमारे लिए बनाईं, तो हमारे लिए यह ज़रूरी है कि उसकी उपासना में किसी को साझी न बनाएं चाहे आज्ञा देने वाले माँ-बाप ही क्यों न हों। इसलिए कि ईश्वर के एहसान हमारे ऊपर सबसे अधिक हैं, फिर जब ईश्वरीय आज्ञा और माँ-बाप की आज्ञा में टकराव हो जाए तो फिर उसकी आज्ञा का पालन करना चाहिए, जिसके एहसानात सब से बढ़ कर हैं। इसका यह मतलब नहीं है कि हम माता-पिता को छोड़ दें और उनकी सेवा ही न करें, नहीं बल्कि सांसारिक जीवन में उनकी सेवा अनिवार्य है। चाहे वह रुपये-पैसे के रूप में हो या और किसी रूप में। इसी की ओर क़ुरआन संकेत करता है:

"और हम ने इंसान को उसके माँ-बाप के बारे में ताकीद की है। उसकी माँ बड़ी कठनाईयों के साथ उसको पेट मे लिए रही और उसका दूध छुटता है दो वर्ष में। तुम मेरा भी एहसान मानो और अपने माँ-बाप का भी। (ध्यान रखो कि) मेरी ही ओर (तुम को पलटकर) आना है। लोकिन अगर वे इस बात की कोशिश करें कि तू मेरे साथ किसी को मेरा साझी बना, जिसका तुझे ज्ञान नहीं है तो ऐसा कदापि न करना, लेकिन हां! संसार में उनके साथ भलाई का बरताव करना।" (३१:१४,१५)

ये आयतें खुले तौर से माँ-बाप के साथ संतान के सम्बंध को प्रकट करती हैं। इस पर जितना ही विचार किया जाए उतना ही आध्यात्मिक भाव हमारे सामने आता है। एक हदीस में तो अल्लाह के रसूल ﷺ ने यहाँ तक कह दिया कि स्वर्ग माँ-बाप के कदमों में है, इसलिए वे लोग कितने बदक़िस्मत हैं जिनको माँ-बाप की सेवा का अवसर मिला, मगर स्वर्ग प्राप्त नहीं कर सके। क़ुरआन में भी बहुत सी आयतें हैं जो माँ-बाप की सेवा पर उभारती हैं।

3. न्याय और क़ुरआन

समाज की सुरक्षा के लिए न्याय का बरताव बहुत ज़रूरी है। वह समाज कभी फूल-फल नहीं सकता जो न्याय से वंचित हो। न्याय मानवता का वह अधिकार है जिसको न धन से ख़रीदा जा सकता है और न शक्ति से छिना जा सकता है। आप देख लीजिए कि जिस समाज ने धन और शक्ति के बल पर न्याय को दबाना चाहा है उसको इतिहास ने माफ़ नहीं किया और न ही भविष्य में माफ़ करेगा। वह दिन अवश्य आएगा जब न्याय का गला घोंटने वालों का गला घोटा जाएगा। दुखी मानवता को शक्ति से दबाने वालों को स्वयं ही दुख की चक्की में पिसना पड़ेगा।

इस संसार का यह अटल नियम है, जिसको कोई व्यक्ति अपनी मूर्खता से बदल नहीं सकता। वे लोग बहुत जल्द अपने आपको भुला दते हैं जो न्याय की कुर्सियों पर बैठते हैं कि वे कितनी कड़ी परीक्षा दे रहे हैं, जिनके एक-एक क्षण और एक-एक अक्षर का मानवता के न्याय गृह में हिसाब लिया जाएगा इससे बचकर निकल गए तो इतिहास के पन्नों को हिसाब देना होगा। अगर

इससे भी बचकर निकल गए तो ईश्वर की अदालत से तो किसी प्रकार बचकर नहीं निकल सकेंगे। इस्लामी शिक्षाओं ने इस सिलसिले में किसी का पक्ष नहीं लिया है, बल्कि साफ़-साफ़ उन लोगों को होशियार रहने का हुक्म दे दिया है जो न्यायाधीश की कुर्सियों पर विराजमान हैं, अन्याय करने वालों को कठिन दंड की चेतावनी दी है। इसलिए इस्लामी न्याय इतिहास के पन्नों में उदाहरण बन गया है। आईए इस न्याय को क़ुरआन से खोजें:

"अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि लोगों की अमानतों को उन तक पहुँचा दो और जब तुम लोगों का निर्णय करो तो न्याय के साथ करो, ईश्वर तुम्हें बेहतरीन उपदेश कर रहा है, याद रखो ईश्वर सुनने और देखने वाला है।" (४:५८)

"ऐ लोगों! जो ईमान लाए, तुम न्याय पर मज़बूती के साथ जमे रहने वाले बनो। अल्लाह के लिए (इंसाफ़ की) गवाही देते हुए। चाहे वह गवाही तुम्हारे ख़ूद अपने या माँ-बाप और नातेदारों के विरुद्ध ही क्यों न पड़े, कोई धनवान हो या निर्धन अल्लाह उन दोनों से ज़्यादा क़रीब है, इसलिए तुम न्याय करने में अपनी इच्छाओं के पीछे मत चलो। अगर तुम कजी करोगे या कतराओगे तो याद रखो कि ईश्वर तुम्हारे कामों को अच्छी तरह जानता है।" (४:१३५)

एक मनुष्य के लिए न्याय मार्ग अपनाना कुछ मुश्किल नहीं है, मगर उसकी आज़माईश उस समय हो जाती है जब कोई समस्या स्वयं या उसके माँ-बाप से सम्बंध रखती हो। ऐसी दशा में देखा गया है कि लोगों के पाँव डगमगा जाते हैं।

यही वह अवसर होता है जब उसके न्याय की पोल खुल जाती है। ऐसे समय में भी क़ुरआन ने दो टूक फ़ैसला सुना दिया है कि न्याय का दामन न छुटने पाए, बल्कि अगर तुमको अपने ऊपर विश्वास न हो तो किसी दूसरी अदालत में स्वयं समस्या को पेश करो और अपने आप को अदालत के इंसाफ़ पर झुका दो। ऐसे ही अवसर के लिए अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया था कि क़सम है उस ईश्वर की जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर मुहम्मद की चहेती बेटी फ़ातिमा भी चोरी करेगी तो मैं उसको भी दंड दूंगा। और क़ुरआन में है:

"ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो। तुम अल्लाह के लिए इंसाफ़ पर मज़बूती के साथ क़ायम रहने वाले बनो, इंसाफ़ की गवाही देते हुए। देखो कहीं ऐसा न हो कि किसी जाति से तुम्हारी नफ़रत और दुश्मनी उनके साथ न्याय का बरताव करने से तुम्हें रोक दे। नहीं, बल्कि न्याय किया करो, क्योंकि यही धर्मपरायणता के अनुकूल बात है। अल्लाह से डरते रहो, जान रखो उसको हर काम की ख़बर है जो तुम करते हो।" (५:८)

आम हालात में इंसान के लिए कुछ मुश्किल नहीं है कि वह लोगों के साथ इंसाफ़ का मामला करे, परंतु ऐसी हालत में जब कि एक ओर अपना क़रीबी दोस्त हो और दूसरी ओर दुश्मन जो कि न्याय का अधिकारी है, यह समय इंसान के लिए बड़ी आज़माईश का होता है। देखा गया है कि ऐसे मौक़े पर लोगों के क़दम डगमगा जाते हैं, दुश्मन से बदला लेने के लिए उनकी ख़्वाहिश भड़क उठती है।

उसमें उनको एक प्रकार का मीठा आनन्द मिलता है। अंत में क़लम अपना फ़ैसला लिख देती है और इतिहास एक और कलंक का टीका अपने माथे पर जड़ लेता है। परंतु इस्लाम ऐसी हालत में भी इंसाफ़ को अपनाने का उपदेश देता और इतिहास को अनगिनत कलंको से बचाकर एक ऐसा आदर्श देता है कि जिस पर इतिहासकार गर्व करने लगता है। अगर आप इस्लामी इतिहास पर एक उचटती हुई नज़र भी डाल लें तो आपका सिर गर्व से ऊँचा उठ जाएगा। क़ुरआन कहता है:

"जब तुम बात कहो तो ऐसी कहो जो इंसाफ़ की हो, चाहे मामला अपने नातेदारों ही का क्यों न हो।" (६:१५२)

"अगर तुमको किसी से बदला भी लेना हो तो उतना ही लो जितना तुम्हें कष्ट पहुँचाया गया हो। और अगर सब्र कर लो तो यह सब्र करने वालों के लिए ज़्यादा अच्छा है।" (१६:१२६)

"ऐ मुहम्मद! तुम लोगों से कह दो कि मैं ईमान लाया हर उस किताब पर जिसको ईश्वर ने नाज़िल किया और मुझे यह आदेश दिया गया कि मैं तुम्हारे बीच इंसाफ़ करूँ।" (४२:१५)

इस आयत में मुहम्मद ﷺ को रसूल बनाकर भेजने का एक मक़सद यह बताया गया कि लोगों के साथ न्याय का बरताव किया करें, अर्थात अगर उन्होंने न्याय का बरताव नहीं किया तो गोया उनके भेजने का एक मक़सद जो न्याय करना है ख़त्म हो गया। दूसरे स्थान पर क़ुरआन और भी खुले तौर से आदेश देता है:

"अगर तुम लोगों के बीच फ़ैसला करो तो इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करो, निस्संदेह ईश्वर इंसाफ़ करने वालों को पसंद करता है।" (५:४२)

मानव समाज की कामयाबी के लिए यह है क़ुरआन का न्याय और सिद्धांत। इसको त्याग देने के कारण आज मानवता सिसक रही है, क्योंकि इंसाफ़ के दरवाज़े निर्धनों तथा निर्बलों के लिए बन्द हो चुके हैं, अब जब तक उनको फिर से नहीं खोला जाएगा उस समय तक समाज को सिसकना पड़ेगा। हो सकता है कि एक दिन यह सिसकी भी बन्द हो जाएं और मानवता सदा के लिए दम तोड़ दे।

क़ुरआन और राजनीतिक व्यवस्था

वास्तविक शासक

क़ुरआन के दृष्टिकोण से यह सारा ब्रह्माण्ड जिस सृष्टिकर्ता ने रचा है वही इसका संचालक भी है। जिसको चाहता है बादशाह बना देता है और जिससे चाहता है बादशाही छीन लेता है। उसके विचारों पर कोई सत्ता प्रभाव नहीं डाल सकता।

क़ुरआन में है:

> "कहो ! हे प्रभु, राज सत्ता के स्वामी ! तू जिसे चाहे राजपाट दे दे और जिस से चाहे छिन ले, जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे बेइज़्ज़त कर दे। तेरे ही हाथ में सारी भलाई है बेशक तू प्रत्येक चीज़ पर सत्ता रखता है।" (३:२६)

> "यह पृथ्वी अल्लाह की है, वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उसका वारिस बना देता है।" (७:१२८)

यह है क़ुरआन की केन्द्रीय विचारधारा। अब आईए राजनीति के एक-एक विषय पर क़ुरआन का अध्ययन करें। यह बात तो अच्छी तरह साफ़ हो चुकी है कि ब्रह्माण्ड का रचयिता हमारा पालनकर्ता है। जिसने अपनी सत्ता से यहाँ के कण-कण को पैदा किया। सारी दुनिया को बेहतरीन प्रबंध में जकड़ दिया, उसके इस प्रबंध से यहाँ का एक कण भी बाहर नहीं जा सकता। ये सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, धरती और आकाश तथा दूसरी चीज़ें जो अपने-अपने कामों में

लगे हुए हैं, एक क्षण के लिए भी ईश्वरीय बंधन से अलग नहीं हो सकते, यहाँ तक कि हमारे शरीर का कोई अंग अपने कर्तव्य को छोड़कर दूसरा कार्य नही कर सकता। हमारा पाँव चलने के लिए बना है उससे कभी सोच-विचार का काम नहीं लिया जा सकता, हाथ काम करने के लिए बना है, उससे चबाने का काम नहीं लिया जा सकता, कान सुनने के लिए बना है उससे कभी देखने का काम नहीं लिया जा सकता। इसी प्रकार दूसरे अंग हैं। लेकिन ईश्वर ने अपनी मेहरबानी से हम को कुछ स्वतंत्रता दी है और इसी स्वतंत्रता में हमारी परीक्षा भी है। अब देखना यह है कि इस स्वतंत्रता का उपयोग हम सही तरह से कर पाते हैं या नहीं। वह स्वतंत्रता क्या है तो सुन लीजिए, वह है सोचने विचारने की स्वतंत्रता, अपने जीवन के लिए सत्य या असत्य मार्ग अपनाने की स्वतंत्रता, व्याभिचार तथा अत्याचार करने या उससे बचने की स्वतंत्रता। क़ुरआन कहता है:

> "हमने इंसान को मिले जुले नुत्फ़े (वीर्य) से पैदा किया, ताकि उसकी परीक्षा लें, अत: हम ने उसको सुनने और देखने वाला बनाया, हम ने उसको मार्ग दिखा दिया, अब चाहे शुक्रगुज़ार हो या नाशुक्रा। हम ने नाफ़रमानों के लिए ज़ंजीरें, बेड़ियाँ और दहकती हुई आग तैयार कर रखी है।" (७६:२-४)

जब हम को मालूम हो गया कि हम उसके बंधन से मुक्त नहीं हो सकते तो फिर ज़रूरी है कि हम उसी के संविधान को अपनाएं, उसके बताए हुए मार्ग पर चलें, क्योंकि जिस सत्ता ने हमें पैदा किया वह सत्ता ही हमारे लिए सही संविधान और दस्तूर की रचना भी कर सकती है। क़ुरआन में है:

"याद रखो उसी ने पैदा किया है और उसी का हुक्म भी चलता है।" (७:५४)

"कहते हैं क्या हमारे लिए भी आदेश देने का कुछ अधिकार है? कह दो आदेश सारा का सारा अल्लाह ही का है।" (३:१५४)

"आदेश अल्लाह के सिवा किसी का नहीं, उसका आदेश है कि तुम उसके अलावा किसी की रहनुमाई मत स्वीकार करो। यही सत्य मार्ग है, लेकिन क्या किया जाए कि बहुत सारे लोग इस बात को नहीं जानते।" (१२:४०)

यह और इसी प्रकार की दूसरी बहुत सारी आयतें यही बात बताती हैं कि संविधान तो उसी का होना चाहिए जिसने हम को पैदा किया, क्योंकि वही हमारी ज़रूरतों को अच्छी तरह जान सकता है। क्योंकि उसको ग़ैब (परोक्ष) का इल्म है, बल्कि उसके लिए ग़ैब कोई चीज़ ही नहीं है। क़ुरआन में है:

"हो सकता है कि तुम एक चीज़ को नापसंद करो और वह तुम्हारे लिए भली हो और हो सकता है कि एक चीज़ को तुम पसंद करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।" (२:२१६)

आपको यहाँ यह बात खटकेगी कि एक ओर तो ईश्वर ने हमें स्वतंत्रता दी, दूसरी ओर यह पाबन्दी लगाई जो स्वतंत्रता के विरुद्ध है। इसका उत्तर यह है कि स्वतंत्रता का यह अर्थ नहीं है कि मनुष्य सारे क़ानूनों को तोड़कर अपनी मनमानी करने लगे। अगर आज़ादी का यही मतलब हो तो फिर मुझे कहने दीजिए कि यह आज़ादी नहीं बल्कि हैवानियत है, जो हर तरह की पाबंदियों से मुक्त है। यह भी कहने दीजिए कि अगर यही आज़ादी है तो फिर आज

संसार का कोई देश आज़ाद नहीं है, बल्कि आज़ादी का सही अर्थ यह है कि इंसान अपने जैसे लोगों की ग़ुलामी से आज़ाद हो जाए। अपने ऊपर अपने ही जैसे लोगों के बनाए हुए संविधान को ध्वस्त कर के अपने प्रभु और पालनकर्ता की दासता स्वीकार कर ले। यही वह सही आज़ादी है जिसकी ओर क़ुरआन बुलाता है।

एक बात और जान लेनी चाहिए कि क़ुरआन का क़ानून दुनिया के अपने बनाए हुए क़ानूनों से बहुत भिन्न है। दुनिया के क़ानून इंसान अपने दिमाग़ से बनाता है इसलिए उसको उस पर पूरा-पूरा विश्वास नहीं होता, बल्कि समय के बदलने से उसका क़ानून भी बदलता रहता है। इसके विपरीत क़ुरआन का क़ानून हमेशा-हमेशा के लिए आया है और जिस में किसी प्रकार का भी फेर बदल नहीं हो सकता, क़ुरआन में है:

> “पालन करो उस (क़ानून) का जो तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से आया है, उसके अलावा दूसरे संरक्षक मित्रों की रहनुमाई क़ुबूल मत करो।" (७:३)

> "अगर तूने ज्ञान आने के बाद भी उन अज्ञानियों की ख़्वाहिशों की पैरवी की तो न अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारा कोई संरक्षक मित्र होगा और न बचाने वाला।" (१३:३७)

सर्वोच्च क़ानून

अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म क़ुरआन के दृष्टिकोण से सुप्रीम है। इसलिए कोई मुसलमान इस क़ानून की मुख़ालिफ़त करने का अधिकार नहीं

रखता बल्कि इसका विरोध करने वाला ईमान से बाहर होता है, क़ुरआन का फ़रमान है:

"किसी ईमान वाले नर एवं नारी को यह अधिकार नहीं है कि जब अल्लाह और उसके रसूल का किसी मामले में फ़ैसला हो तो उसके ख़िलाफ़ रवैया अपनाए, और जो ऐसा करे वह खुली गुमराही में पड़ गया।" (३३:३६)

आचार संहिता

१.जीवन सुरक्षाः

"किसी जान को क़त्ल न करो जिसके क़त्ल को अल्लाह ने हराम कर दिया है सिवाए हक़ के।" (१७:३३)

२.धन सुरक्षाः

"अपने धन को आपस में अवैध रूप में मत खाओ।" (२:१८८)

३.मानसुरक्षाः

“कोई गिरोह दूसरे गिरोह का मज़ाक न उड़ाए... और एक-दूसरे का अपमान न करे... और न ही बुरे नामों से याद करे, न कोई किसी की पीठ पीछे बुराई बयान करे...।" (४९:११-१२)

४.घरेलू जीवन सुरक्षाः

“अपने घरों के सिवा दूसरे के घरों मे बिना आज्ञा दाख़िल न हो।" (२४:२७)

५. बदज़ुबानी पसंद नहीं:

"अल्लाह बदज़ुबानी को पसंद नहीं करता सिवाए इसके कि किसी पर अत्याचार हुआ हो।" (४:१४८)

६. भलाई के लिए संघ की रचनाः

"तुम में एक ऐसा संघ होना चाहिए जो भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके, ऐसे ही लोग सफ़लता पा सकते हैं।" (३:१०४)

७:धर्म की स्वतंत्रताः

"धर्म के विषय में किसी पर कोई ज़बरदस्ती नहीं।" (२:२५६)

"क्या तू लोगों को मजबूर करेगा कि मोमिन हो जाएं। (ऐसा मत करना)।" (१०:९९)

८: किसी दूसरे धर्म वालों के पूज्य को गाली न देनाः

"अल्लाह को छोड़ कर जिनको ये लोग पुकारते हैं उनको गालियाँ मत दो।" (६:१०८)

९:कोई व्यक्ति दूसरे के कर्म पर पकड़ा नहीं जाएगा:

"हर व्यक्ति जो कमाई करता है उसका वह ख़ूद जवाबदेह है, कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।" (६:१६४)

१०: फ़ैसला करने से पहले अच्छी तरह जाँच पड़ताल की जाए:

"अगर कोई दुराचारी तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो अच्छी तरह उसकी जांच पड़ताल कर लो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी क़ौम को बिना परखे हानि पहुँचा बैठो और फिर तुम्हें पछतावा हो। (४९:६)

"किसी ऐसी बात के पीछे न लग जाओ जिसका तुम्हें ज्ञान न हो।" (१७:३६)

११:राज्य की नज़र में सब बराबर है:

"फ़िरऔन ने धरती में सिर उठाया, लोगों को भिन्न-भिन्न वर्गों में बाँट दिया, एक वर्ग को दुर्बल बना दिया। वह उनके बेटों को क़त्ल कर देता था और उनकी औरतों को जीवित रहने देता। सही तो यह है कि वह बिगाड़ फैलाने वाला था।" (२८:४)

१२: मजबूर और लाचारों का हक़:

“और उनके धन में माँगने वालों का और उनका हक़ है जो पाने से रह गए हों।" (५१:१९)

क़ुरआन और नैतिक मूल्य

संसार की सभी धार्मिक पुस्तकों में शिष्टाचार की शिक्षा दी गई है, इसलिए यह बात क़ुरआन के लिए ही विशेष नहीं है। मगर जब हम दूसरे धार्मिक विद्वानों की रचनाओं का अध्ययन करते हैं या उनके धार्मिक ग्रन्थों को देखते हैं तो पता चलता है कि उनमें बहुत सारी बातों की कमी है। और यह कोई बुरी बात नहीं है, क्योंकि जो भी धर्म या धार्मिक पुरूष इस संसार में पधारे वे एक विशेष समाज और समयकाल से प्रतिबंधित थे, उनकी शिक्षा भी जीवन के कुछ भागों के लिए विशेष थी। उन्होंने अपने विचारों को संक्षिप्त और समयानुकूल रखा, इसलिए उनकी शिक्षा वहीं तक सीमित थीं जहाँ तक समाज उसका प्रतिपालन कर सकता था। हज़रत मूसा, ईसा तथा दूसरे ईशदूतों की शिक्षाओं का गहरा अध्ययन करें तो आप को आसानी से महसूस हो जाएगा कि उन्होंने अपने समयकाल के अनुकूल शिष्टाचार की शिक्षाएं दीं जो अपने समय के बेहतरीन उपदेश थे।

परंतु क़ुरआन ईश्वर की आख़िरी किताब है, जिस में न किसी समय की विशेषता है न किसी देश की। यह प्रलय तक संसार के नेतृत्व के लिए आई है, इसलिए यह ज़रूरी था कि इसमें शिष्टाचार की शिक्षाओं की भी पूर्ण रूप से व्याख्या कर दी जाए। अब आईए हम संक्षेप में इसका अध्ययन करें। मैं यह नहीं कर सकता कि इस में समयकाल का कोई अंश नहीं है। परंतु इसके लिए जो भाषा शैली अपनाई गई है वह सामाजिक बंधनों से मुक्त है। यही

वह विशेषता है जिसने चौदह सौ वर्ष पूर्व आने वाले क़ुरआन को ऐसा रूप दे दिया है कि मालूम होता है जैसे अभी-अभी उतर रहा है।

मुक्तिमार्ग

क़ुरआन में है:

"हे लोगों ! जो ईश्वर पर विश्वास रखते हो, क्या मैं तुम्हें ऐसा व्यापार बताऊँ जो तुम को एक दुख भरी यातना से सुरक्षित रखे। यह व्यापार यह है कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ, और ईश मार्ग में अपने तन, मन और धन से जिहाद करो, यही तुम्हारे लिए उत्तम है, अगर जानते हो। इससे यह लाभ होगा कि वह तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा और तुम को ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और बेहतरीन घरों में जो सदा रहने वाले बाग़ों में होंगे, यही सबसे बड़ी सफ़लता है।" (६१:१०-१२)

"लोगों में कुछ ऐसे हैं जिन्होंने ईश्वर की ख़ुशी के लिए अपने आप को बेच (त्याग) दिया है। वास्तव में ईश्वर अपने दासों पर बड़ा दयावान है।" (२:२०७)

"जब उन लोगों ने उसको भुला दिया जिसका उपदेश दिया गया था तो हमने उन लोगों को बचा लिया जो बुराई से रोकते थे और अत्याचारियों को हमने उसकी नाफ़रमानी की वजह से सख़्त सज़ा दी।" (७:१६५)

"और हमने बचा लिया उन लोगों को जो ईमान लाए और ईश्वर की पकड़ से डरते रहे।" (२७:५३)

"और अल्लाह उन लोगों को उनकी सफ़लता के साथ बचा लेगा जो डरते रहे उसकी पकड़ से, उनको न तो कोई तकलीफ़ होगी और न ही वे ग़मग़ीन होंगे।" (३९:६१)

क़ुरआन ने बार-बार इस बात का एलान किया है कि मुक्ति और सफ़लता वही लोग प्राप्त कर सकते हैं जो अपने पालनकर्ता के आदेशों की ख़िलाफ़वर्जी नहीं करते और हर समय उसकी याद में लीन रहते हैं, एक क्षण के लिए भी उससे ग़ाफ़िल नहीं होते। बल्कि उसकी पकड़ से काँपते रहते हैं।

भलाई का मार्ग

क़ुरआन मजीद कहता है:

"जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने उत्तम कार्य किए वही लोग सर्वश्रेष्ठ हैं, उनका फल उनके पालनकर्ता के पास सदाबहार बाग़ों के रूप में है, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे सदैव उसमें रहेंगे। ईश्वर उनसे प्रसन्न हुआ और वे ईश्वर से प्रसन्न हुए। यह उसके लिए है जो अपने रब से डरे। (९८:७-८)

"जिसने भला काम किया, उसका लाभ उसी को पहुँचेगा और जिसने बुरे काम किए उसकी हानि उसी के लिए है। तेरा पालनकर्ता दासों पर बिल्कुल अत्याचार नहीं करता।" (४१:४६)

"तुम लोगों को भले काम करने का हुक्म देते हो और स्वयं को भुला देते हो, जब कि तुम पुस्तक (ईश्वरीय ग्रंथ) का पाठ करते हो। क्या अक़्ल से काम नहीं लेते।" (२:४४)

"बुराई और भलाई दोनों बराबर हो ही नहीं सकते इसलिए बुराई को भलाई से दूर करो।" (४१:३४)

"वे जो भलाई करेंगे उसकी नाक़द्री नहीं की जाएगी। ईश्वर डरने वालों को भली-भाँति जानता है।" (३:११५)

“जो भले कार्य करे और इसके साथ वह ईमान वाला भी हो, उसे न किसी ज़ुल्म का भय होगा न हक़ मारे जाने का।" (२०:११२)

इन आयतों में भले काम करने पर उभारा गया है। वे भले और उत्तम कार्य क्या है? इसका संक्षिप्त वर्णन आएगा, यहाँ इतना जान लेना काफ़ी है कि ईश्वर का आज्ञापालन सबसे उच्च कार्य है। उसी के साथ-साथ उन बुराईयों से बचना भी ज़रूरी है जिनसे उसने रोका है। क़ुरआन में है:

"ईमान वाले तो भाई-भाई हैं तो अपने दो भाईयों के बीच सुलह एवं सफ़ाई करा दो और अल्लाह का डर रखो ताकि तुम पर दया की जाए।" (४९:१०)

"हे लोगों! हमने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम को जातियों और वंशों में बाँट दिया ताकि तुम पहचान सको। लेकिन तुम्हारे पालनकर्ता के यहाँ वही अधिक सम्मान योग्य है जो सबसे अधिक

उससे डरने वाला है, सच तो यह है कि ईश्वर सब कुछ जानता है और सारी ख़बर रखता है।" (४९:१३)

क़ुरआन बार-बार लोगों से इस बात का मुतालबा करता है कि आपस में प्रेम भाव का व्यवहार करें, छल-कपट, लड़ाई-झगड़े से बचें, क्योंकि यह उनके पैदा किए जाने के मक़सद के ख़िलाफ़ है। क़ुरआन की नज़र में किसी जात पात से कोई भिन्नता नहीं है, सब एक ही माँ बाप की संतान हैं, अगर किसी को किसी पर कोई उच्चता प्राप्त है तो यह उसके अच्छे कार्य के कारण है, न कि उच्च परिवार में पैदा होने के कारण। भिन्न-भिन्न जातियों को भिन्न-भिन्न विशेषताओं के साथ ईश्वर ही ने पैदा किया है, मगर उससे उनकी उच्चता या नीचता का कोई पारस्परिक सम्बंध नहीं है, बल्कि यह तो केवल एक-दूसरे को जानने पहचानने का साधन है।

फिर क़ुरआन लोगों को इस बात पर होशियार करता है कि देखो प्रेमभाव को मज़बूती से पकड़ लो। एक दुसरे की जान लेने की फ़िक्र मत करो, तुम से पहले बनी इस्राईल को भी ख़बरदार कर दिया गया था कि:

"जो किसी एक जीव की भी अकारण हत्या करेगा या पृथ्वी में उपद्रव मचाएगा, तो उसका पाप उस व्यक्ति की भाँति होगा जिसने सारी मानवता की हत्या की। और जिसने एक जीव को जीवित रखा, उसको उस व्यक्ति का पुण्य मिलेगा जिसने सारी मानवता की रक्षा की। सत्य तो यह है कि हमारे संदेशवाहक उनके पास खुली दलीलें लेकर आए, परंतु उनमें से अधिकतर लोग इसके बाद भी पृथ्वी पर उपद्रव करते हैं।" (५:३२)

इसलिए उन लोगों को होशियार हो जाना चाहिए जो आज भी मानवता के सुख-चैन की केवल बात करते रहते हैं, क्योंकि उसकी पकड़ बड़ी ही दर्दनाक है।

क्षमा भाव

क्षमा मनुष्य का एक ऐसा आभूषण है जो उसकी सारी बुराईयों को ढाँक लेता है, परंतु इससे शोभायमान बहुत कम लोग हो पाते हैं, क्योंकि यह विशेषता मनुष्य के हृदय में जन्म लेती है, जो विचार धाराओं का संगम है और मानव-शरीर की पूरी रूप रेखा उसी पर आश्रित है। ऐसी दशा में किसी का क्षमाशील होना, उसके हृदय की वह भावना है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। फिर क्षमा का स्रोत शक्ति के समुद्र में फटता है, जिसकी अथाह गहराईयों में डूबने से बहुत कम लोग बचते हैं। बल्कि यूँ समझिए कि जिस समुद्र में क्षमा का स्रोत नहीं होता है वह स्वयं भी डूब जाता है और मानवता को भी डुबा देता है। क्योंकि शक्ति का घमण्ड एक काला नाग है कि जो इस पर सवार हुआ, उसको नाग से भी भयंकार बना दिया।

इसी कारण क़ुरआन ने इंसान को इस आभूषण से अपने आपको शोभायमान करने की बार-बार प्रेरणा दी है। लीजिए अब आप भी इस आभूषण को धारण कीजिए।

"(हे नबी!) तुम उनसे क्षमा का बरताव करो और उनके लिए मुक्ति की दुआ करते रहो।" (३:१५९)

"(हे नबी!) नर्मी और क्षमा से काम लो, अच्छी बातों का उपदेश करते रहो और मूर्खों के मुँह मत लगो।" (७:१९९)

क़ुरआन ने नबी के द्वारा पूरी मानवता को क्षमा का उपदेश दिया है। किसी को शंका न हो कि नबी क्षमा के आभूषण से वंचित थे, इसलिए उनको इसका आदेश दिया गया है। नहीं-नहीं, बल्कि वह नबी तो क्षमा करने में सबसे अधिक आगे थे।

क्या आपने इतिहास में नही पढ़ा कि जिस मक्के वालों ने आप को तेरह साल तक सताया, यहाँ तक कि अपनी मातृभूमि त्याग करने पर भी मजबूर कर दिया, परंतु जब आपने उस पर विजय प्राप्त की तो सब को क्षमा कर दिया। क्या उस बद्दू की कहानी याद नहीं है जो नंगी तलवार लेकर आप के सिर के पास खड़ा हो गया, परंतु उसके हाथ कांपने के कारण तलवार गिर पड़ी और आप जाग उठे। तलवार आप के क़ाबू में थी, आप चाहते तो उसे मौत के घाट उतार देते, लेकिन आपने उसको क्षमा कर दिया। उसी समय वह आपके क़दमों पर गिर पड़ा। इसी प्रकार आप का जीवन क्षमा जैसे आभूषण से परिपूर्ण है। बल्कि इस का मतलब यह है कि नबी को संकेत कर के क़ुरआन पूरी मानवता को इस बड़ी खूबी की ओर बुला रहा है। क़ुरआन में है:

“एक अच्छी बात और क्षमा का बरताव उस दान-पुण्य से उत्तम है, जिस के साथ दुख की बात हो। (अर्थात दान देकर उस पर अपना एहसान जताना।)" (२:२६३)

“जो लोग कुशादगी और तंगी हर हालत में (ईश मार्ग में) ख़र्च करते हैं और गुस्से को पी डालते हैं तथा लोगों के साथ क्षमा का व्यवहार करते हैं। अल्लाह भलाई करने वालों को पसंद करता है।" (३:१३४)

"बुराई का बदला उसी के समान बुराई है। लेकिन जिसने क्षमा कर दिया और अपने आप को संवार लिया तो उसका फल अल्लाह के पास है। वह अत्याचार करने वालों को पसंद नहीं करता।" (४२:४०)

शान्तिमार्ग

इस सम्बंध में क़ुरआन की ये आयतें देखिए:

“उनके लिए उनके पालनकर्ता के पास शान्ति गृह है। और वह उनका संरक्षक है। यह उनके कर्मों का फल है।" (६:१२७)

"तुम्हारे ऊपर शक्ति की वर्षा हो, इसलिए कि तुमने सब्र किया, क्या ही उत्तम ठिकाना है।" (१३:२४)

"अगर वे सन्धि और सलामतों की ओर झुकें तो तुम भी इसके लिए झुक जाओ और ईश्वर पर ही भरोसा करो, क्योंकि वह सब कुछ सुनने और जानने वाला है।" (८:६१)

“ईश्वर के वास्तविक दास तो वे हैं जो पृथ्वी पर बड़ी नम्रता से चलते हैं और जब उनसे कोई मूर्ख उलझ पड़ता है तो सलाम करके आगे बढ़ जाते हैं।" (२५:६३)

"उन लोगों को जो अपने पालनकर्ता से डरते रहते हैं संघ बना कर स्वर्ग की ओर ले जाया जाएगा। यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुँच जाएंगे तो उनका संरक्षक उन पर सलामती भेजेगा, (उनकी आवभगत करते हुए कहेगा कि) आप बहुत अच्छे रहे, पधारिए अब आप को सदैव इस में रहना है।" (३९:७३)

“और अगर ईश्वर चाहता तो उनको तुम पर विजय दे देता, बस फिर तो वे तुम को क़त्ल कर डालते और अगर वे युद्ध करने से रुक जाएं बल्कि तुम से सलामती की इच्छा करें तो फिर तुम्हारे लिए उचित नहीं कि तुम उनसे युद्ध करो। क्योंकि फिर ईश्वर ने उन के विरुद्ध तुम्हारे लिए कोई रास्ता नहीं रखा है।" (४:९०)

इन आयात में शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने का आदेश दिया गया है। कुछ लोग धोखे में यह कह देते है कि क़ुरआन तो युद्ध करने पर उभारता है, यह बात अपने स्थान पर सत्य है परंतु उनको जानना चाहिए कि क़ुरआन ने किन हालात में युद्ध करने पर उभारा है। आप ही बताईए कि जब शत्रु आपके देश पर हमला कर दे तो क्या आप बैठ कर तमाशा देखेंगे या बहादुरी के साथ उसके छक्के छुड़ा देंगे।

सत्य तो यह है कि क़ुरआन जिस शान्ति मार्ग की ओर संकेत करता है अगर आज संसार उन मार्गों पर चले तो बहुत जल्द मनुष्य को शांति मिल जाएगी।

प्रेम भावना

क़ुरआन कहता है:

"और उसकी निशानियों मे से यह है कि उसने तुम ही में से तुम्हारे जोड़े बनाए ताकि तुम उनके पास आराम और चैन पाओ, और तुम्हारे बीच उसने प्रेम भावना तथा दया भावना को उत्पन्न किया। इन बातों में उन लोगों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं जो विचार करते हैं।" (३०:२१)

इस आयत में एक ऐसी बात का वर्णन किया गया है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन सामना करना पड़ता है, और वह है अपने जीवन साथी से प्रेम का व्यवहार; जो आपकी संतान की माँ और तत्पश्चात कुटुंब की महारानी कहलाती है। मैं पूछता हूँ कि आख़िर वह अजनबी लड़की जिससे अब तक आप का कोई सम्बंध नहीं है अगर कल वही आपकी जीवन साथी बन कर आप के घर आती है तो उसमें और आप में क्यों इतना दृढ़ सम्पर्क हो जाता है। दो हृदय एक ही शरीर में क्यों धड़कने लगते हैं ? क़ुरआन इसको ईश्वर की देन बताता है और यह पालनकर्ता का हम पर बड़ा उपकार है कि उसने हमको पैदा कर के कीड़े मकोड़ों की भाँति नहीं छोड़ दिया, बल्कि हमारे लिए एक कुटुम्ब की रचना कर दी जिसका प्रत्येक प्राणी दूसरे के लिए दयालु बन गया। क़ुरआन कहता है:

"ऐ लोगों! उस पालनकर्ता से डरो जिसने तुमको एक जान (अर्थात आदम) से पैदा किया, फिर उससे जोड़ा बनाया, फिर उन दोनों के द्वारा पूरी मानवता की रचना की, जिससे स्त्री पुरूष दोनों हैं। इसलिए डरो उस ईश्वर से जिसके विषय में और आपस के मेल जोल के विषय में पूछे जाओगे। वास्तव में ईश्वर तुम्हारी भली-भाँति निगरानी कर रहा है।" (४:१)

इस आयत में इस बात की शिक्षा मिलती है कि ईश्वर ने मनुष्य के हृदय में दूसरों के लिए प्रेम और मुहब्बत पैदा की है। इसलिए वे लोग बड़े घाटे में हैं जो आपस में फूट डालने का प्रयत्न करते है। क़ुरआन में है:

"और जब हम ने बनी इस्राईल से कहा कि ईश्वर के अलावा किसी और की उपासना मत करो और अपने माता-पिता, रिश्तेदार, अपाहिज तथा निर्धनों के साथ अच्छा व्यवहार और लोगों से अच्छी बात करो।"(२:८२)

"और अपने चेहरे को लोगों की ओर से मत फेर, न पृथ्वी पर अकड़ कर चल, क्योंकि ईश्वर ऐसे घमण्डियों से प्रसन्न नहीं होता।" (३१:१८)

"हे ईमान वालों! जब तुम्हें कहा जाए कि बैठक में दूसरों के लिए स्थान पैदा कर दो तो कर दिया करो, ईश्वर तुम्हारे लिए स्थान पैदा कर देगा। और जब कहा जाए कि बैठक से उठ जाओ तो उठ जाया करो।" (५८:११)

इन आयतों से यह बताना अभिप्रेत है कि ईश्वर ने मानवता को दयालुता के ऐसे बंधन में बाँध रखा है कि उसकी सफ़लता इसी में है। अब समाज बड़ा ही बदक़िस्मत होगा जो ईश्वर की इस दयालुता को ठुकरा कर क्रूरता का व्यवहार करता है। इसीलिए क़ुरआन ने प्रेषित मुहम्मद ﷺ की सबसे बड़ी विशेषता यह बताई है कि बड़े ही दयावान हैं और उनको मानवता के लिए रहमत बना कर भेजा गया है।

दूसरा भाग

क़ुरआन की शीतल छाया

विश्वास की शीतल छाया में

महा मानव प्रेषित मुहम्मद ﷺ का देहांत होते ही इस्लामी दुनिया में एक हलचल मच गई, बहुत सारे क़बीले इस्लाम छोड़ बैठे। बहुतों का ईमान ख़तरे में पड़ गया। उन भोले भाले मुसलमानों की समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि इतना महान पुरूष जिसने केवल तेईस वर्ष में संसार की काया पलट दी, चोरों, डाकुओं और लुटेरों को ईश भक्त बना दिया, चरवाहों और किसानों को ज़मीन का बादशाह बना दिया, घमंडियों के घमंड तोड़ दिए, अत्याचार को न्याय और व्यभिचार करने वालों को आचार का आदर्श बना दिया। भला वह व्यक्ति भी कभी इस दुनिया से सिधार सकता है। वह तो संसार की मर्यादा और आकाश का बादशाह है, यहाँ तक कि हज़रत उमर जिनके बारे में स्वयं महामानव ने फ़रमाया था कि उमर जिस रास्ते से गुज़रते हैं, शैतान रास्ता बदल देता है; वह भी किसी प्रकार यह मानने के लिए तैयार नहीं थे कि प्रेषित मुहम्मद ﷺ का देहांत हो गया है, क्योंकि उन्होंने अपनी आँखों से एक ऐसा चमत्कार देखा जैसा न तो अब तक किसी ने सुना था और न देखा था। इसलिए अपनी चमकती हुई तलवार लेकर मैदान में निकल आए और लोगों को संबोधित करके फ़रमाया अगर किसी ने यह कहा कि मुहम्मद ﷺ का देहान्त हो गया तो उसके टुकड़े कर दूंगा।

ऐसे विकट और जानलेवा समय में एक व्यक्ति उठता है, जिसको न क़बिलों के इस्लाम से फिर जाने का भय है और न ही उमर की चमकती हुई तलवार से दो टुकड़े हो जाने का डर है, बल्कि वह जिस ईश्वर पर ईमान लाया है, वह सर्वव्यापी है और हर क्षण उसकी सहायता के लिए तत्पर है। इसलिए इस भयंकर हिलोरे मारते हुए समुद्र और तेज व तुन्द हवाओं के सामने खड़े होकर यह एलान करता है:

"हे लोगों! जो मुहम्मद ﷺ की पूजा करते थे वे सुन लें! आज मुहम्मद ﷺ का देहान्त हो चुका है और जो ईश्वर की उपासना करते थे तो वह जीवित हैं उसको मृत्यु नहीं आती।" यह एलान करने के बाद वह क़ुरआन की यह आयत पड़ता है:

"मुहम्मद एक रसूल के अलावा कुछ नहीं हैं। उन जैसे बहुतेरे रसूल गुज़र चुके हैं, तो क्या उनके देहान्त हो जाने या क़त्ल हो जाने से तुम सत्यधर्म छोड़ बैठोगे। याद रखो जो भी सत्य धर्म से विमुख होगा वह ईश्वर का कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। अल्लाह भलाई करने वालों को अच्छा बदला देने वाला है।" (३:१४४)

क्या आप जानते हैं कि यह एलान करने वाला कौन था? वह अबू बक्र रज़ीयल्लाहु अन्हु थे, जिनके एलान को सुनते ही उमर की तलवार म्यान में चली गई। उनका कहना था कि इस आयत को मैंने कितनी बार पढ़ा था मगर आज ऐसा महसूस हुआ जैसे यह अभी-अभी नाज़िल हुई है।

यह था अबू बक्र रज़ीयल्लाहु अन्हु का ईमान। ऐसा ईमान जिसको पृथ्वी और आकाश ने फिर नहीं देखा।

सत्य की खोज

मैं एक ईरानी था। मेरे पिता मंदिर के संचालक थे जिनकी आज्ञा से मैं मंदिर में आग जलाया करता था और यह प्रयत्न करता था कि कभी बुझने न पाए, जिसके कारण मेरे पिता मुझसे बहुत प्रेम करते थे। यहाँ तक कि मुझे घर से नहीं निकलने देते थे।

एक बार मैं किसी काम के लिए पिता ही की आज्ञा से घर से निकला, थोड़ी दूर चलने के बाद मुझे एक गिर्जाघर से घंटा बजने की आवाज़ आई। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह कैसी आवाज़ है और आज तक मुझे कभी इसके सुनने का अवसर नहीं मिला। मैं उस गिर्जाघर में दाख़िल हो गया और उनकी पूजा-पाठ को ध्यान से देखने लगा, शाम होने तक उनके यहाँ ठहरा रहा फिर घर आ गया। मेरे पिता ने देर से घर आने पर पूछा कि तुम कहाँ थे? मैने कहा कि मैं गिर्जाघर चला गया था, वहाँ ईसाईयों के पूजा-पाठ को देखता रहा जो मुझे बहुत पसंद आया, यह सुनना था कि मेरे पिता ने मुझे लोहे की ज़ंजीर से बाँध दिया और कहने लगे तुम्हारा धर्म उनसे उत्तम है। परंतु मुझे तो उनका धर्म उत्तम लगने लगा। इसलिए मैंने ईसाई पादरी को संदेश भेजा कि मैं ईसाई धर्म के विषय में अधिक जानना चाहता हूँ। उसने उत्तर दिया कि हमारा महान गिर्जाघर शाम में है, वहाँ तुमको ईसाई धर्म की अधिक शिक्षा मिल सकती है। मैंने उनको पैग़ाम भेजा, जब कोई गिरोह शाम से आए तो मुझे सूचित करना मैं उनके साथ शाम जाऊँगा। वह दिन आ गया जब मैं अपने पैरों की बेड़ियाँ काट कर शाम के लिए रवाना हो गया। वहाँ

पहुँच कर मैं महान पुरोहित की सेवा में उपस्थित हुआ और उसकी सेवा करने लगा वह मुझ से बड़ा प्रसन्न हुआ परंतु मैंने देखा कि वह एक बहुत ही बुरा आदमी है। लोगों से दान लेता तो है परंतु निर्धनों पर ख़र्च नहीं करता, बल्कि उसको छुपा कर रखे हुए था। जब उसका देहांत हो गया और लोग उसको दफ़न करने के लिए आए तो मैंने उनको उसकी वास्तविकता बता दी। लोगों ने प्रमाण मांगा तो मैं उनको एक कोठरी में ले गया जहाँ उसने सोने और चाँदी के ढेर लगा रखे थे। यह देख कर लोगों को बड़ा क्रोध आया, उन्होंने उसे सूली पर लटका दिया और पत्थर मारने लगे। फिर एक दूसरा पादरी नियुक्त किया जो पहले वाले से अधिक उत्तम था। संसार से बैरागी और आख़िरत का इच्छुक था। मैं उसकी सेवा में लग गया, जब उसकी मृत्यु निकट आ गई तो मैंने उससे कहा: हे पादरी तुम जानते हो कि मैं तुम से कितना प्यार करता हूँ। अब तुम संसार से जाने वाले हो, बताओ मैं क्या करूँ और कहाँ जाऊँ। उसने कहा: ऐ पुत्र लोग बदल गए हैं, आज मुझे संसार में कोई ऐसा पादरी मालूम नहीं होता है जिस प्रकार मैं था। हाँ शहर “मुसिल” (इराक़) में एक पादरी है तुम उसके पास चले जाओ, उसको तुम मेरी ही तरह पाओगे।

उसकी मृत्यु के पश्चात मैं "मुसिल” चला गया और वहाँ के पादरी को बता दिया कि मुझे उसके पास किसने भेजा है। वह बड़ा प्रसन्न हुआ और अपनी सेवा में रख लिया। उसको भी मैंने पहले वाले की तरह पाया। जो बड़ा सदाचारी था, जब उसकी मृत्यु निकट आई तो मैंने उससे कहा: हे आदरणीय पादरी! तुम मृत्यु के निकट हो, अब बताओ मैं कहाँ जाऊँ? उसने कहा कि

हे पुत्र ! मुझे तो कोई व्यक्ति इस प्रकार का नहीं मिल रहा है जिस प्रकार हम थे। परंतु तुम “नुसीबीन" चले जाओ। पादरी के मृत्यु के पश्चात मैं नुसीबीन चला गया और वहाँ के पादरी को मैंने पहले के पादरी की बातें बताई तो वह बड़ा प्रसन्न हुआ और अपने पास रहने की अनुमति दे दी।

उसको भी मैंने पहले दो पादरियों की तरह ईशभक्त पाया। परंतु जब वह भी मृत्यु के निकट पहुँच गया तो मैंने उससे कहा: हे पादरी ! अब तुम बताओ मैं किसके पास जाँऊ। उसने कहा तुम “अमोरिया" चले जाओ, वहाँ का पादरी ऐसे ही होगा जैसे तुमने हमें पाया है। "नुसीबीन” पादरी की मृत्यु के पश्चात मैं “अमोरिया” चला गया, वहाँ रहने लगा वहाँ मैने व्यापार भी किया और बहुत सारी गायों का स्वामी बन गया, जब उसकी मृत्यु भी निकट आ गई तो मैंने उससे कहा: हे पादरी ! तुमको अपनी कहानी बता चुका हूँ, अब बताओ मैं कहा जाँऊ? उसने कहा: “हे पुत्र इस समय इस धरती पर कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसके पास जाने का परामर्श दूँ, लेकिन तुम मेरी यह बात ध्यान से सुनोः अब एक नबी के आने का समय आ गया है, जो “इब्राहीम" के धर्म पर होगा, जो “अरब” में पैदा होगा, फिर वह एक ऐसे स्थान की ओर हिजरत (स्वदेश त्याग) करेगा जो खजूर के वृक्षों से भरा होगा, उसके कुछ चिन्ह हैं जो यह हैं। वह भेंट की हुई वस्तुएं तो खाएगा परंतु सदक़ा (दान) की चीज़ें नहीं खाएगा। उसके दोनों मोढ़ों के बीच में नबूवत की मुहर होगी। अब अगर तुम उसके देश की यात्रा कर सकते हो तो वही चले जाओ और उसको तलाश करो। इसके बाद उसका देहांत हो गया।

यह तुर्की के शहर का नाम है जो सीरिया के बार्डर पर पड़ता है इसको तुर्की में इस प्रकार लिखते हैं (NUSAYBIN). यह भी तुर्की के एक शहर है जिसको इस प्रकार लिखते हैं। (AMORION)

पादरी के मरने के पश्चात मैं “अमोरिया” में कुछ दिन ठहरा रहा, इतने में मुझे पता चला कि कुछ अरब के व्यापारी आए हुए हैं। मैंने उनसे मुलाकात की और इच्छा प्रकट किया कि मेरे पास जो यह गायें और बकरियाँ हैं तुम ले लो और मुझे अपेन साथ अरब देश ले चलो। उन्होंने स्वीकार कर लिया, लेकिन जब वह “वादी क़ुरा" (जो शाम और मदीना के बीच है) पहुँचे तो उन्होंने एक यहूदी के हाथ मुझे बेच दिया। मैं उस यहूदी के पास रहने लगा, यह स्थान खजूरों से भरा हुआ था। विचार करने लगा कहीं यह वहीं स्थान तो नहीं जहाँ मुझे जाना है। इतने में उस यहूदी के चचा के बेटे का वहाँ आना हुआ जो मदीना का रहने वाला था, उसने मुझे ख़रीद लिया और मुझे लेकर मदीना आ गया। मदीना देखते ही मेरे नेत्रों में प्रकाश दौड़ गया और पूरा विश्वास हो गया कि यह वही स्थान है जिसका वर्णन पादरी ने किया था। मैं इसी प्रकार ग़ुलामी का जीवन व्यतीत कर रहा था, अपने मालिक के काम से बहुत कम समय मिलता था।

एक दिन क्या सुनता हूँ कि मेरे मालिक से उसके चचा के बेटे ने कहा: क्या तुम ने सुना है कि "क़ुबा” वाले एक व्यक्ति के पास जमा हैं जो मक्के से आया है, और कहता हैं मैं नबी हूँ। उसकी बातें सुन कर मुझे झुरझरी आ गई, मैंने दुबारा पूछा कि तुम क्या कर रहे थे? यह सुनना था कि मेरे मालिक ने मुझे डाँटा और कहा कि तुम अपना काम करो इन बातों पर ध्यान मत दो।

रात्रि के अंधेरे में एक दिन मैं उस नबी के पास पहुंचा और कहा, आप और आप के साथी हिजरत कर के आए हैं? आप अवश्य मुहताज होंगे, मेरे पास जो कुछ है मैं आप को दान करता हूँ। यह कहते हुए मैंने उनके सामने कुछ खाने की वस्तुएं रख दिया। नबी ने अपने साथियों से कहा तुम लोग इसे खाओ और स्वयं आप ने अपना हाथ उठा लिया और उसमें से कुछ भी नहीं खाया। मैंने अपने मन में कहा कि चलो आज एक परीक्षा हो गई कि वह दान नहीं खाता। फिर नबी मदीना में प्रवेश कर गए तो एक दिन मैं उनकी सेवा में उपस्थित हुआ और कहा मैंने देखा की आप दान नहीं खाते, इसलिए मैं आप के लिए उपहार (तोहफ़ा) लेकर आया हूँ, तो आपने इसे स्वीकार कर लिया और स्वयं उसमें से कुछ खाया और अपने साथियों को खाने के लिए कहा, मैंने अपने मन में विचार किया कि यह दूसरी बात सच निकली।

फिर एक दिन मैं उनसे मिलने के लिए हाज़िर हुआ तो आप बक़ीअ् में किसी को दफ़्न करने के बाद बैठे हुए थे और आप का शरीर दो चादरों में लिपटा हुआ था। मैंने आप को सलाम किया और आप की पीठ की ओर कुछ खोजने लगा। आपने अपनी पीठ से चादर हटा ली, यह देखते ही मैं आप के ऊपर गिर कर रोने लगा और नबूवत की मुहर को बोसा देने लगा, आप ने बड़े प्यार से मुझे अपने पास बैठाया और मुझ से पूछा, क्या बात है बताओ? मैंने शुरू से अपनी कहानी सुनाई और बताया कि आप की तलाश में मैंने क्या कुछ नहीं किया और आज मैं अपने आप को बड़ा भाग्यशाली समझता हूँ कि अल्लाह ने मुझे सत्य तक पहुँचा दिया।

नबी और आप के सहाबा यह कहानी सुन कर बड़े प्रभावित हुए। आप जानते हैं यह कौन थे?

यह हज़रत सलमान फ़ारसी थे, जो आप ﷺ के प्रयत्नों से स्वतंत्र हुए। इस्लाम में आप को बड़ी महानता प्राप्त हुई।

किसी ने ठीक कहा है जो प्रयत्न करेगा सत्य को प्राप्त कर लेगा।

उसकी दाढ़ी आँसुओं से भीग गई

यह हब्शा (ईथोपिया) का इसाई राजा नजाशी है जो अपनी दयालुता तथा न्याय में प्रसिद्ध है, जिसके दरबार में इसाई धर्म के बड़े-बड़े विद्वान उपस्थित रहत थे।

जब मक्के के काफ़िर नए मुसलमानों को विभिन्न प्रकार से सताने लगे, कभी उनको मक्के की गर्म रेत पर लिटा दिया जाता था, कभी किसी के गले में रस्सी बाँध कर बच्चों को थमा दिया जाता था जो जानवरों की तरह सड़कों पर घसीटते थे। बल्कि किसी की हत्या करने से भी नहीं डरते थे, जैसे की अम्मार बिन यासिर की माँ। नबी ﷺ यह सब कुछ देखते थे परंतु कुछ नहीं कर सकते थे, केवल इसके कि उनको धैर्य रखने का आदेश दें। परंतु जब अत्याचार हद से बढ़ गया तो एक दिन आपने अपने साथियों को इकट्ठा किया और फ़रमाया: मेरे प्रिय साथियों! तुम पर किया जाने वाला अत्याचार अब मुझसे देखा नहीं जाता, इसलिए तुम अपना देश छोड़कर “हब्शा" (ईथोपिया) चले जाओ, क्योंकि वहाँ का राजा किसी पर अत्याचार नहीं करता और तुम लोग वहीं रहो जब तक अल्लाह तुम्हारे लिए कोई सरलता न पैदा कर दे।

इस प्रकार मुसलमान अपने धर्म की रक्षा के लिए इस्लामी इतिहास में पहली बार स्वदेश त्याग पर बाध्य हो गए। उनमें नबी ﷺ की पुत्री रुक़य्या और उनके पति उस्मान भी थे। उनमें नबी ﷺ के चचा अबू तालिब के बेटे जाफ़र भी थे। इस प्रकार लगभग तिरासी लोगों ने स्वदेश त्याग किया।

परंतु मक्के के काफ़िरों को यह बात भी पसंद नहीं आई कि यह नए मुसलमान हम से बचकर निकल जाएं, इसलिए उन्होंने उनको मक्का वापस लाने के लिए दो व्यक्तियों को नजाशी राजा के पास भेजा। उनके द्वारा नजाशी के लिए कुछ तोहफ़े भी भेजे। उन्होंने नजाशी के दरबार में हाज़िर होकर कहा कि हे राजाः

हमारी जाति ने हमें तुम्हारे पास इस लिए भेजा है कि कुछ लोगों ने अपना प्रथम धर्म छोड़कर नए धर्म को ग्राहण कर लिया है। जो ऐसा धर्म है जिसको न हम जानते हैं न तुम जानते हो। इसलिए हम इन लोगों को वापस मक्का ले जाने के लिए आए हैं।

नजाशी के दरबार में बैठे हुए पुजारियों ने कहा कि हाँ, ऐ राजा ऐसा ही करना चाहिए कि इन लोगों को वापस भेज दिया जाए। इस बात पर राजा नजाशी क्रोधित हो उठा और कहने लगा कदापि ऐसा नहीं हो सकता, इन लोगों ने हमको ग्रहण किया है हमारे देश में शरण ली है, जब तक मैं उनको बुला कर यह पूछ न लूँ कि वह कौनसा धर्म है जिसको उन्होंने स्वीकार किया है, मैं उनको वापस नहीं भेज सकता।

नजाशी के बुलाने पर सब लोग उसके दरबार में इकट्ठा हो गए, नजाशी ने कहा तुम लोगों ने कौन सा धर्म ग्रहण कर लिया जो न मेरा धर्म इसाई है और न तुम्हारी जाति का धर्म? सबकी ओर से जाफ़र खड़े हुए और उत्तर दिया, हे राजा! हम अंधविश्वासियों का जीवन व्यतीत कर रहे थे, मूर्ति पूजा करते थे, मरी हुई चीजें खाते थे, हर प्रकार की बुराईयां करते थे, अपने रिश्तेदारों के

अधिकार अदा नहीं करते थे, पड़ोसियों के अधिकार भुला चुके थे, हम में जो शक्तिशाली था वह दुर्बल को खा जाता था। हम इसी अवस्था में थे कि अल्लाह ने एक नबी भेजा, जो स्वयं हमारी जाति में से है, हम जिसके आदर्श को भली-भाँति जानते हैं, उसने हमें ऐकेश्वरवाद की ओर बुलाया, सारे बुतों को छोड़ कर केवल उसकी उपासना का आदेश दिया, सच्चाई ग्रहण करने का हुक्म दिया, अमानतों को वापस करने, रिश्तेदारों का हक़ अदा करने, पड़ोसियों का ध्यान रखने, अनाथों की सेवा करने का हुक्म दिया, हत्या करने, झुठी गवाही देने से मना किया, पाक दामन स्त्रियों पर किसी प्रकार का मिथ्यारोप लगाने तथा अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की उपासना से मना किया। नमाज़ पढ़ने, जकात देने तथा रोज़ा रखने का हुक्म दिया, हम ने उसको सच्चा पाया, उस पर ईमान लाए, जो कुछ अल्लाह की ओर से लाया उस पर अमल किया, अब हम केवल एक अल्लाह की उपासना करते हैं, उसने जिसको हराम कहा हराम समझते हैं, जिसको हलाल कहा हलाल समझते हैं। इस पर हमारी जाति वाले हम पर क्रोधित हो उठे, विभिन्न प्रकार से हमें सताने लगे ताकि हम इस धर्म को छोड़ कर फिर मूर्ति पूजा करने लगें, वह चाहते हैं कि हम फिर मुर्दा खाएं जैसे पहले खाते थे।

जब उनका अत्याचार हद से बढ़ गया तो हम तुम्हारी ओर चले आए, तुमको किसी और पर तरजीह नहीं दिया, क्योंकि हमारे नबी ने बताया कि तुम्हारे पास किसी पर अत्याचार नहीं किया जाता। नजाशी ने कहा क्या तुम कुछ सुना सकते हो जो तुम्हारे नबी पर नाज़िल हुआ है? जाफ़र ने कहाः क्यों नही। इसके बाद उन्होंने सूरह मरयम की यह आयतें पढ़ कर सुनाईः

काफ.हा.या.ऐन.साद. (1) यह है तेरे प्रभु की उस कृपा का वर्णन, जो उसने अपने भक्त ज़करिया पर की थी। (2) जब कि उसने अपने प्रभु से गुप्त रूप से प्रार्थना की थी। (3) कहा कि हे मेरे प्रभु! मेरी अस्थियाँ निरबल हो गई हैं तथा सिर बुढ़ापे के कारण भड़क उठा है। परंतु मैं कभी तुझसे प्रार्थना करके वंचित नहीं रहा। (4) तथा मुझे अपने (मरने के) पश्चात अपने निकट सम्बन्धियों का भय है, मेरी पत्नी भी बाँझ है, परंतु तू मुझे अपनी ओर से उत्तराधिकारी प्रदान कर। (5) जो मेरा भी उत्तराधिकारी हो तथा याकूब के वंश का भी उत्तराधिकारी, तथा हे मेरे प्रभु! तू उसे स्वीकृत भक्त बना ले। (6)

हे ज़करिया! हम तुझे एक बालक की शुभसूचना देते हैं, जिसका नाम यहया है, हमने उससे पूर्व इसका नाम भी किसी को नहीं किया। (7) (ज़करिया) कहने लगे मेरे प्रभु! मेरे यहाँ बालक कैसे होगा, मेरी पत्नी बाँझ तथा मैं स्वयं बुढ़ापे की अति निरबल अवस्था को पहुंच चुका हूँ। (8) आदेश हुआ कि (वचन) इसी प्रकार हो चुका, तेरे प्रभु ने कह दिया है कि मुझ पर तो यह बिल्कुल सरल है तथा तू स्वयं जबकि कुछ न था मैं तुझे पैदा कर चुका हूँ। (9)

कहने लगे हे मेरे प्रभु! मेरे लिए कोई लक्षण बना दे, आदेश हुआ कि तेरे लिए लक्षण यह है कि स्वस्थ होने के उपरान्त भी तू तीन रातों तक किसी व्यक्ति से बोल न सकेगा। (10)

अब ज़करिया अपने कमरे (हुजरे) से निकल कर अपने समुदाय के पास आकर उन्हें संकेत करते हैं कि तुम प्रात: तथा सायं अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करो। (11)

हे यहया ! (मेरी) किताब को दृढ़ता से थाम ले तथा हमने उसे बाल्यकाल ही से ज्ञान प्रदान किया। (12) तथा अपने पास से दया तथा पवित्रता भी वह परहेज़गार (संत) व्यक्ति था। (13) तथा अपने माता-पिता के साथ सुशिल था, वह क्रूर तथा पापी न था। (14) उस पर शांति है जिस दिन उसने जन्म लिया तथा जिस दिन वह मरे, तथा जिस दिन वह जीवित करके उठाया जाएगा। (15)

इस किताब में मरयम की कथा भी वर्णन कर जब कि वह अपने परिवार के लोगों से अलग होकर पूर्वी ओर आयीं। (16) तथा उन लोगों की ओर से पर्दा कर लिया, फिर हमने उसके पास अपनी आत्मा (जिब्रील अलैहिस्सलाम) को भेजा, तो वह उसके समक्ष पूरा मनुष्य बन कर प्रकट हुआ। (17) यह कहने लगीं मैं तुझसे दयालु (रहमान) की शरण माँगती हूँ यदि तू कुछ भी अल्लाह से डरने वाला है। (18) (उसने) कहा कि मैं अल्लाह का भेजा हुआ संदेशवाहक हूँ, तुझे एक पवित्र बालक देने आया हूँ। (19) कहने लगीं कि भला मेरे यहाँ बालक कैसे हो सकता है? मुझे तो किसी पुरुष का हाथ तक स्पर्श नहीं हुआ, तथा न मैं व्यभिचारी हूँ। (20) उसने कहा बात तो यही है, (परंतु) तेरे प्रभु का आदेश है कि वह मुझ पर अति सरल है, हम तो उसे लोगों के लिए एक प्रतीक बना देंगे तथा अपनी विशेष कृपा, यह तो एक निर्धारित बात है। (21)

फिर वह गर्भवती हो गई तथा इसी कारण वह एकाग्र होकर एक दूर स्थान पर चली गईं। (22) फिर उसे प्रसव पीड़ा एक खजूर के वृक्ष के तने के नीचे ले आई तथा सहसा मुख से निकल गया कि हाय, मैं इससे पूर्व मर गई होती तथा लोगों की याद से भूली बिसरी हो जाती। (23) इतने में उसे नीचे से ही आवाज़ दी कि निराश न हो, तेरे प्रभु ने तेरे पाँव के नीचे एक जलस्रोत प्रवाहित कर दिया है। (24) तथा उस खजूर के तने को अपनी ओर हिला, यह तेरे समक्ष ताज़ा पकी खजूरें गिरा देगा। (25) अब निश्चित होकर खा पी तथा आँखें ठंडी रख, यदि तुझे कोई मनुष्य दिखाई दे तो कह देना कि मैंने अल्लाह कृपालु के नाम का व्रत रखा है। मैं आज किसी व्यक्ति से बात न करूंगी। (26)

अब (आदरणीय ईसा) को लिए हुए वह अपने समुदाय में आईं। सब ने कहा कि मरयम तूने बहुत कुकर्म किया। (27) हे हारून की बहन! न तो तेरा पिता बुरा आदमी था न तो तेरी माता व्यभिचारिणी थी। (28) (मरयम ने) अपने बच्चे की ओर संकेत किया। सब कहने लगे कि लो भला हम गोद के बालक से बातें कैसे करें? (29) (बालक) बोल उठा कि मैं अल्लाह तआला का भक्त हूँ। उसने मुझे किताब प्रदान की है तथा मुझे अपना दूत (पैग़म्बर) बनाया है। (30) तथा उसने मुझे शुभ बनाया है जहाँ भी मैं रहूँ तथा उसने मुझे नमाज़ तथा ज़कात का आदेश दिया है, जब तक भी मैं जीवित रहूँ। (31) तथा उसने मुझे अपनी माता का सेवक बनाया है तथा मुझे क्रूर तथा हतभाग नहीं किया। (32) तथा मुझ पर मेरे

जन्म के दिन तथा मेरी मृत्यु के दिन तथा जिस दिन कि मैं पुनः जीवित खड़ा किया जाऊँगा सलाम ही सलाम है। (33)

यह है सत्य कथा ईसा पुत्र मरयम की, यही है वह सत्य बातें जिसमें लोग शंका तथा संदेह मे लिप्त हैं। (34) अल्लाह के लिए संतान का होना उचित नहीं, वह तो अत्यंत शुद्ध है, वह तो किसी कार्य के करने का विचार करता है तो उसे कहता है कि हो जा, वह उसी समय हो जाता है। (35) मेरा तथा तुम सबका प्रभु अल्लाह तआला ही है। तुम सब उसी की उपासना (इबादत) करो, यही सीधा मार्ग है। (36)

इन आयतों के सुनने के बाद राजा नजाशी रो पड़ा, उसके आँसुओं से उसकी दाढ़ी भीग गई, उसके साथ दरबार में बैठे इसाई विद्वान भी रो पड़े, यहाँ तक कि वह जो अपनी पवित्र पुस्तक लेकर बैठे थे वह उनके आँसुओं से भीग गई, उसके पश्चात नजाशी ने एक ऐसा वाक्य (जुमला) कहा जो इतिहास का भाग बन गया, वह यह है: “मैं अल्लाह की शपथ खाकर कहता हूँ, यह तो वही बात है जो हज़रत ईसा लेकर आए थे, दोनों की शिक्षाएं वास्तव में एक ही दीप के प्रकाश हैं, मैं अपनी शरण में आने वाले इन मुसलमानों को तुम्हारे साथ कदापि नहीं भेज सकता, इसलिए तुम लोग अपनी भेंट लेकर मक्के वापस चले जाओ।"

यह था हब्शा का नजाशी राजा, जिसके राज्य में किसी पर अत्याचार नहीं किया जाता था। नजाशी की बात से यह भी प्रकट होता है कि आज जो कुछ इंजील में पाया जाता है वह हज़रत ईसा की शिक्षा के विरुद्ध है।

नजाशी के जीवन चरित्र से पता चलता है कि वह भी मुसलमान हो गया था, परंतु उसने अपने इस्लाम को गुप्त रखा कि कहीं उसकी जाति वाले उपद्रव न कर दें। जब उसका देहांत हुआ तो नबी ने उसके जनाज़े की ग़ाएबाना (अनुपस्थित) नमाज़ पढ़ाई।

क़ुरआन और मार्गदर्शन

मैं कुछ लोगों को यह कहते हुए सुनता हूँ कि भला चौदह सौ साल पहले का क़ुरआन इस इक्कीसवीं सदी में हमारी क्या रहनुमाई करेगा। ऐसा कहने वालों में अधिकतर ग़ैर मुस्लिम हैं । लेकिन वे मजबूर हैं इसलिये कि वे क़ुरआन की वास्तविकता से परिचित नहीं है। इसका सारा दोष उन लोगों पर है जो अपने आप को क़ुरआन का अनुयायी समझते हैं। हम उनसे पूछना चाहते हैं कि उन्होंने क़ुरआन का पैग़ाम दूसरों तक क्यों नहीं पहुँचाया? क्या उन्होंने क़ुरआन को अपनी सम्पत्ति समझ लिया है? यह उनकी ग़लती है चाहे माने या ना मानें। पर जब मैं उन लोगों की ज़ुबान से यह कहते सुनता हूँ कि इस इक्कीसवीं शताब्दी में क़ुरआन हमारी क्या रहनुमाई करेगा जो अपने आप को क़ुरआन का अनुयायी कहते हैं तो मेरे आश्चर्य की कोई सीमा नहीं रहती और यह सोचकर दिल तड़प उठता है कि क़ुरआन अपने ही लोगों के यहाँ कितना अजनबी है? कितना मज़लूम है? कितना बेबस है? जो सारी दुनिया को शांति का पैग़ाम सुनाने आया था जीवन का एक मुकम्मल क़ानून लेकर आया था, उसका काम केवल इतना रह गया है कि कोई बीमार पड़े तो कुछ पढ़ कर फूंक दिया, कोई मर गया तो उसकी क़ब्र पर कुछ पढ़ दिया और नमाज़ के लिए खड़े हुए तो कुछ पढ़ लिया और बस।

अफ़सोस ! इससे बड़ा अत्याचार क़ुरआन पर और क्या हो सकता है?

ऐसा कहने वाले कुछ नासमझ मुसलमान ही नहीं हैं, बल्कि अच्छे भले पढ़े लिखे लोग भी हैं, जिनके पास डॉक्टरेट और वकालत की बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ हैं वे भी ऐसा कहते हुए दिखाई देते हैं।

जब इसके कारण पर हम विचार करते हैं तो पता चलता है कि ये लोग भी क़ुरआन से उतने ही अपरिचित हैं जितना एक देहाती किसान। यह क़ुरआन की एक आयत तो सही पढ़ नहीं सकते, समझना तो बड़ी बात है। फिर क़ुरआन के विषय में वे जो कुछ कहते हैं वह उनकी बात नहीं होती है, बल्कि उनकी बातें हैं जो क़ुरआन के घोर विरोधी हैं, जो दिन-रात क़ुरआन पर आरोप लगाते रहते हैं। ये बेचारे जिन को क़ुरआन की एक आयत का अर्थ भी नहीं मालूम जब अमरीका या लंदन जाते हैं और ईसाईयों का क़ुरआन पर आरोप सुनते हैं तो बड़ी जल्दी प्रभावित हो उठते हैं, क्योंकि उनकी प्रसन्नता प्राप्त करने के बाद ही उनको डॉक्टरेट और वकालत की डिग्रियाँ मिलती हैं। इसलिए हम ऐसे लोगों से अनुरोध करते हैं कि वे सबसे पहले स्वयं क़ुरआन को समझने की कोशिश करें, क्योंकि किसी भी धर्म को समझने के लिए स्वयं उसके विद्वानों की ओर रुजू करना चाहिए। जब उनसे पूरी तरह उनका धर्म समझ में आ जाए तो फिर उस पर आरोप लगाने वालों को देखना चाहिए। इससे स्वयं ही मालूम हो जाएगा कि विरोधियों का लगाया हुआ आरोप कहाँ तक सही है और कहाँ तक झूठ। इस की मिसाल बिल्कुल ऐसी है की कोई व्यक्ति वेद को समझने के लिए किसी पादरी या अरबी के आलिम के पास जाए तो वेद क्या ख़ाक समझ में आएगा। बिल्कुल इसी प्रकार क़ुरआन को समझने के लिए सबसे पहले किसी अरबी जानने वाले

विद्वान को पकड़िए जो आप को उसका अर्थ समझा सके, फिर आप देखिए कि क़ुरआन इस इक्कीसवीं शताब्दी के लिए शांति का पैग़ाम सुनाता है या नहीं? हमें आशा है कि हमारे भाई हमारी प्रार्थना पर ध्यान देंगे और क़ुरआन को उसके अपने रूप में समझने का प्रयत्न करेंगे।

हज़रत उमर और आटे की बोरियाँ

एक अंधेरी रात की बात है हज़रत उमर अपने नियमानुसार मदीने का दौरा कर रहे थे, आप के साथ आप का ग़ुलाम असलम भी था। दूर से जलती हुई आग दिखाई दी तो आप ने ग़ुलाम से कहा, हे असलम! ऐसा मालूम होता है कि रात में कोई काफ़िला आकर ठहरा है, इसलिए चलों देखें उसे किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं है?

ख़लीफ़ा अपने सेवक के साथ वहाँ जाते हैं तो क्या देखते हैं कि एक औरत है, उसके कई बच्चे हैं जो रो रहे हैं और हाण्डी आग पर चढ़ी हुई है।

ख़लीफ़ा निकट पहुँचकर-“क्या मैं आ सकता हूँ?"

औरत-"भले इरादे के साथ आ सकते हो।"

ख़लीफ़ा और असलम निकट पहुँच जाते हैं, यहाँ तुम क्या कर रही हो? औरत ने कहा, हमारा काफ़िला आगे बढ़ गया है इसलिए मैं यहीं रात काट रहीं हूँ।

आपने कहा, मगर ये बच्चे क्यों रो रहे हैं? औरत ने जवाब दिया कि भूख के मारे, फिर कहा देगची में क्या पका रही हो? औरत ने कहा उसमें पानी है, ताकि देगची को देख कर बच्चे चुप हो जाएं और उनको नींद आ जाए।

यह सुनते ही दोनों भागते चले आ रहे हैं। बैतुलमाल (अनाज का गोदाम) पहुँचकर एक बोरी आटा और खाने-पीने का कुछ दूसरा सामान लिया और असलम से कहा मेरी पीठ पर उठा दो। असलम ने कहा नहीं! अमीरुल

मोमीनीन, यह तो मैं उठा कर ले जाऊँगा। आप ने कहा, अरे असलम! क्या क़यामत के दिन भी मेरे गुनाहों को लादेगा? इसलिए मेरी पीठ पर उठा दे। अब फिर दोनों भागते चले जा रहे हैं लेकिन अब इस ज्ञान से कि इस्लामी राज्य का सम्राट आटे की बोरी लादे हुए है और उसका सेवक साथ है। निकट पहुँच कर आटे की बोरी सामने रख दी और सालन को हाण्डी में डाल दिया। ऐ अल्लाह के बंदो हट जाओ मैं पका देता हूँ। यह कह कर आग फूंकने लगे और आटा गूंध कर रोटी पकाने लगे। असलम कहते हैं कि मैं अपनी आँखों से देख रहा था कि धुंआ आप की दाढ़ी से निकल रहा था। पका चुकने के बाद कहा: बच्चों को खिलाओ, जब बच्चे अच्छी तरह खा चुके तो उठ पड़े। आपके साथ असलम भी उठ गया।

औरत दुआएं देने लगी, अल्लाह आप का भला करे, आप ही को अमीरुल मोमिनीन होना चाहिए था। उमर ने कहा कोई बात नहीं जब तुम अमीरुल मोमिनीन के पास सुबह आओगी तो वहाँ मुझे पाओगी। यह कहते हुए दोनों भागते हुए फिर वापस आ गए। हाँ, इससे पहले भी भागते हुए आए थे। लेकिन उस समय ज़िम्मेदारियों को पूरा न करने की सज़ा के डर से काँप रहे थे। मगर इस बार दिल खुश था, क्योंकि बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी अदा कर के आ रहे थे।

यह था दो शक्तिशाली राज्यों का विजय करने वाला और सम्पूर्ण इस्लामी आदर्श का सम्राट। क्या इस के जीवन चरित्र की एक-एक घटना हमारी समस्याओं का समाधान करने के लिए काफ़ी नहीं हैं? क्यों नहीं, काफ़ी है। मगर ख़ुदग़र्ज़ी और स्वार्थपरायणता ने हमारे दिल पर अधिकार जमा लिया

है। अपने सुख के अलावा किसी के सुख की हमें क्या चिन्ता? हमको ईश्वर ने इसलिए पैदा नहीं किया है कि दूसरों के दुख-दर्द का अनुभव करें। हम को तो अपनी आत्मा को संतुष्ट करना है दूसरे जहन्नम में जाएं। हम से कोई सरोकार नहीं।

नहीं, नहीं आईए! एक बार फिर उस इस्लाम का अध्ययन करें जिसको लेकर हमारे नबी मुहम्मद ﷺ पधारे, फिर देखें हमारी समस्याओं का समाधान होता है या नहीं?

हज़रत उमर और मिलावटी दूध

वह रात बड़ी ही सुनसान थी, हाथ को हाथ नहीं सुझाई देता था। एक-एक क़दम उठाना मुश्किल हो रहा था। रास्तों में काँटे और छोटी-छोटी झाड़ियाँ थीं, जिनमें कभी-कभी पांव फँस जाता। इसलिए एक-एक क़दम बहुत सोच-विचार के बाद उठाना पड़ता था। आज की तरह बिजली के खम्भे और उसमें जगमगाते बल्ब नहीं थे, सिमेंटेड रोड और गच किए हुए फुटपाथ नहीं थे। चौकीदारों और रक्षकों का वह प्रबन्ध भी नहीं था जो आज दिखाई देता है, लेकिन हाँ लोगों के हृदय इस्लाम के दिव्य प्रकाश से दमक रहे थे।

ऐसे सन्नाटे और सुनसान समय में हज़रत उमर मदीना की गलियों में अकेले घूम रहे थे। जब से आप ख़लीफ़ा बने, रातों का आराम त्याग दिया। कुछ समय अपने ईश्वर से दुआ और इबादत में गुज़ारने बाक़ी समय जनता की देखभाल में बिताते ताकि दिनभर की थकी हारी जनता रात में आराम से सो जाए।

एक रात की घटना है कि आप अपनी आदत के अनुसार मदीना की गलियों में घूम रहे थे। अचानक किसी घर से कुछ आवाज़ सुनाई दी। आपने सोचा कि हो सकता है कोई भूखा हो, भूख के कारण उसको नींद नहीं आ रही है इसलिए उसकी हालत से आगाही हासिल करने के लिए दरवाजे पर खड़े हो गए ताकि अगर उनको भोजन की ज़रूरत हो तो उसका प्रबंध कर दें।

एक बुढ़िया की आवाज़ आई, बेटी दूध में पानी मिला दे ताकि सबेरे कुछ अधिक पैसे मिल जाए।

नहीं माँ! आप ऐसा ना करें, क्या आप ने अमीरुल मोमिनीन का यह ऐलान नहीं सुना है कि दूध में पानी न मिलाए।

माँ ने कहा, अरे पगली! क्या अमीरुल मोमिनीन देख रहे हैं?

बेटी ने कहा माँ! अमीरुल मोमिनीन नहीं देख रहे हैं, मगर ख़ुदा तो देख रहा है।

हज़रत उमर यह सुन रहे थे और आपकी आँखों से आँसू बह रहे थे। सबेरा होते ही आप ने अपने बेटे से विवाह के लिए उस लड़की के घर पैग़ाम भेजा और कुछ दिनों में यह देहाती लड़की अमीरुल मोमिनीन की पुत्रबधु बन गई।

यहाँ प्रश्न उठता हैं कि आख़िर वह कौन सी शक्ति थी जो इस अंधेरी रात में भी मासूम बच्ची को क़ानून तोड़ने से रोक रही थी। तो क्या वह इस्लाम का सर्वश्रेष्ठ संविधान नहीं था जिसको अपनाने के बाद मनुष्य केवल मनुष्य के सामने ही जवाबदेह नही होता है, बल्कि उस विशाल शक्ति के सामने भी जवाबदेह होता है जिसने उसको पैदा किया और जिसने उसके लिए एक पूर्ण जीवन व्यवस्था भी बता दी।

प्रत्येक दिन हम अख़बारों में पढ़ते हैं कि फ़ुलां थानेदार ने उसको इतनी रिश्वत लेकर छोड़ दिया, फ़ुलां व्यापारी ने इतना सोना स्मगलिंग किया। सरकार बार-बार इन पर पाबंदी लगाती है, इन पर सी.आई.डी. नियुक्त करती है

मगर इन सारे प्रतिबंधो के होते हुए भी कहीं अवसर मिला और फिर रिश्वत का बाज़ार गर्म हो गया। इसलिए हम आप के सामने एक ऐसा संविधान प्रस्तुत कर रहे हैं जिसको ग्रहण करते ही मनुष्य की काया पलट जाती है। वह अपने हर काम के लिए ईश्वर के सामने उत्तरदायी होता है जिस प्रकार वह भरे बाज़ार में करने से डरता है उसी प्रकार रात के सन्नाटे में भी ईश्वर की पकड़ से भयभीत हो उठता है और उसका हर क़दम जो कभी बुराई की तरफ़ उठा करता था भलाई की ओर मुड़ जाता है।

यह है इस्लामी संविधान जिसके साएं में पली हुई मानवता कभी घुटन का अनुभव नहीं करती, बल्कि इस समाज का हर व्यक्ति अपने कर्तव्य को पूरे करने में एक आध्यात्मिक आनंद पाता है जिसको संसार की सारी पूँजी ख़र्च कर के भी वह प्राप्त नहीं कर सकता।

लोग पूछते हैं कि वह संविधान कहाँ है ? मैं कहता हूँ कि यह मुसलमानों के दुर्भाग्य का काल है, क्योंकि इस संविधान को अपने घरों में रख कर उसको लागू नहीं कर रहे हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब भी इस संविधान को अपनाया गया दुनिया स्वर्ग बन गई।

हज़रत उमर और समानता

अमीरुल मोमिनीन उमर अपनी आरामगाह में आराम फ़रमा रहे थे कि ग़स्सान का आख़िरी बादशाह अपने रक्षकों के साथ मदीने में दाख़िल हुआ। वह यद्यपि इस्लाम स्वीकार कर चुका था फिर भी बादशाही आभूषणों से लदा हुआ था। सिर पर चमकता हुआ स्वर्ण ताज, ज़मीन पर लहराता हुआ लम्बा कुर्ता और आगे-पीछे रक्षकों का समुह दल, जैसे कोई विजयी बादशाह अपने परास्त किए हुए देश में दाख़िल हो रहा है। आते ही हज़रत उमर को सलाम किया और अपने इस्लाम का एलान किया। तीन दिन तक मदीनें में रहा और फिर आप से इजाज़त लेकर मक्का शरीफ़ चला गया, वहाँ बैतुल्लाह की परिक्रमा (तवाफ) कर रहा था कि बद्दू के पाँव से उसका लम्बा चोगा दब गया। ग़स्सानी बादशाह ने उस में अपना अपमान समझा और घमण्ड में आकर बद्दू को एक चपत लगा दिया। बद्दू वहा से सीधा निकला और हज़रत उमर की सेवा में हाज़िर होकर निवेदन किया कि ग़स्सानी बादशाह ने इस कारण एक चपत मारा हैं क्योंकि परिक्रमा के समय जो भीड़ होती है उसमें किसी का कपड़ा पाँव से लग जाना कोई अनहोनी बात नहीं है इसलिए मैं न्याय चाहता हूँ।

हज़रत उमर यह सुन कर बहुत क्रोधित हुए और ग़स्सानी को अदालत में हाज़िर करने का आर्डर भेज दिया। हज़रत उमर अदालत में बैठे हैं, ग़स्सानी और बद्दू खड़े है। ग़स्सानी! तुमने बद्दू को एक चपत मारा है?

जी हाँ! मैंने मारा है इसलिए कि उसने मेरा अपमान किया है। हज़रत उमर- काबा की परिक्रमा से किसी का कपड़ा पाँव से लगा सकते हो लेकिन तुम को मारने का बदला देना पड़ेगा। इसलिए या तो बद्दू को किसी प्रकार राज़ी करो या मार खाने के लिए तैयार हो जाओ। यह खुला इंसाफ़ सुनते ही ग़स्सानी के चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगीं। उसकी समझ में नही आ रहा था कि एक मामूली बद्दू को चपत मारने का बदला किसी बादशाह से भी लिया जा सकता है। इसलिए इसको उसने अपना अपमान समझा और तीन दिन तक इस मामले में विचार करने का अवसर माँगा।

इस घटना से मदीने में एक हलचल मच गई। कुछ लोगों ने हज़रत उमर से शिकायत भी की, मगर आप अपने न्याय पर जमे रहे। तीन दिन बीत जाने के बाद लोगों ने देखा कि ग़स्सानी चम्पत हो चुका है।

क्या कभी आप ने इस घटना पर सोचा कि आख़िर हज़रत उमर ने एक बादशाह और बद्दू को एक ही क़तार में क्यों खड़ा किया? जी हाँ, अंजाम की परवाह किए बिना उनको इस्लामी शिक्षा सम्पूर्ण जनता पर लागू करनी थी, क्योंकि इस्लाम ने मानवता के अंदर कोई अंतर नहीं रखा है। ईश्वर की दृष्टि में सब एक हैं । अगर उसकी नज़र में कोई ऊँचे दर्जे का है तो वह है जो उससे अधिक डरने वाला हो। किसी वंश और कुटुम्ब का इस्लाम के नज़दीक कोई महत्व नहीं। इसी कारण एक बार महामानव मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया था: “अगर मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा भी चोरी करेगी तो उस पर भी इस्लामी सज़ा लागू होगी और वह हाथ काटना है।"

हज़रत आईशा फ़रमाती हैं कि मैंने आपको सबसे ज़्यादा माफ़ करने वाला पाया, लेकिन जब इंसाफ़ का समय आता था तो आप किसी की तरफ़दारी नहीं करते। बल्कि आप ﷺ ने देहांत के कुछ दिन पूर्व यहाँ तक कह दिया कि जिस किसी को मैंने मारा हो या गाली दी हो वह आकर अपना बदल ले ले।

प्यारे बेटे के नाम पिता का ख़त

हज़रत अली ने अपने बेटे हज़रत हसन को लिखाः

"प्यारे बेटे! ज़माने की गर्दिश, दुनिया की बेवफ़ाई और आख़िरत के निकटतम होने ने मुझे हर ओर से बेपरवाह कर दिया, अब अगर कोई अंदेशा है तो बस वह आख़िरत की असफ़लता का, इसलिए इन सारे अंदेशों को छोड़कर आख़िरत के सुधार की चिंता में लग गया हूँ, अब यह आख़िरी वसीयत तेरे नाम लिख रहा हूँ क्योंकि तू मेरी जान है, मेरी आत्मा है, तुझ पर कोई मुसीबत आएगी तो सबसे पहले मुझ पर आएगी।"

प्यारे बेटे! मैं तुझे वसीयत करता हूँ: ईश्वर से डर, उसकी आज्ञा का पालन कर, उसकी रस्सी को मज़बूती से थाम, क्योंकि इससे शक्तिशाली कोई बंधन नहीं। प्यारे बेटे! मन को उत्तम उपदेशों से जीवित रख, घोर तपस्या कर, विश्वास को शक्तिशाली बना, हिक्मत से रौशन कर, मौत की याद दिला कर उस पर अधिकार प्राप्त कर, कठिनाईयों की याद दिलाकर होशियार रख, समय की रंग-रलियों से दूर, गुज़रे हुए की बरबादी से परिचय करा, उनकी आबादियों में घूम-फिर कर उनकी हवेलियों के खंडहर देख, और दिल से सवाल कर, उन लोगों ने क्या किया? कहाँ चले गए, कहाँ जाकर आबाद हो गए। क्या अब वापस नहीं आएंगे? ऐसा करने से तुझे मालूम हो जाएगा कि उनकी आबाद दुनिया वीरान हो गई, तू भी एक दिन ऐसा ही हो जाएगा। इसलिए अपना आचरण ठीक रख, अपनी आख़िरत को दुनिया के बदले मत बेच।

प्यारे बेटे! तू भलाई का उपदेश सुनाएगा तो तू भले लोगों में से बन जाएगा। बुराई को हाथ और ज़ुबान दोनों से बुरा साबित कर, उसके निकट न जा। ईश्वर के मार्ग में मलामत करने वालों से मत डर, सत्य के लिए कठिनाईयों के तूफ़ान में कूद जा, इस प्रकार तू शक्तिशाली बन जाएगा, फिर तुझ पर कोई विजय प्राप्त नहीं कर सकता। तेरी जिस बात से मैं प्रसन्न हूँगा वह यह है कि तू ईश्वर से डरता रहे, उसकी आज्ञा का पालन करे, ईश भक्तों के मार्ग पर चलें, क्योंकि जिस तरह तू आज अपने आप को देखता है, कल इसी तरह वे लोग भी अपने आप को देखते थे। जिस तरह तू सोचता है, वे लोग भी सोचते थे। अंत में ये इस बात पर मजबूर हुए कि सीधी राह पर चलें और बेकार बातों से बचें।

प्यारे बेटे! यह बात अच्छी तरह जान ले कि जिसके हाथ में मौत है उसी के हाथ जिंदगी भी है। जो पैदा करता है वही मारता भी है, जो कठिनाईयों में डालता है वही उससे निजात भी दिलाता है। इसलिए अपनी मौत और जिंदगी को उसी के हाथ सौंप दे और यह पक्का यक़ीन पैदा कर कि संसार की स्थिरता अल्लाह के ठहराए हुए क़ानून पर है। अगर कोई बात तेरी समझ में न आए तो उसका इंकार न कर दे, बल्कि अपनी कमअक़्ली समझ ले, क्योंकि पहले तू जाहिल पैदा हुआ था, फिर धीरे-धीरे तूने ईल्म सीखा और अभी नहीं मालूम कितनी बातें तुझे सीखनी हैं जिनको तू नहीं जानता।

प्यारे बेटे! ईश्वर के विषय में ऐसी शिक्षा किसी ने नहीं दी जैसी प्रेषित मुहम्मद ﷺ ने दी थी। इसलिए उन्हीं को अपना रहनुमा बना और आख़िरत में सफ़लता के लिए उन्हीं को अपना पेशवा बना।

जिन लोगों ने दुनिया को परख लिया है वे उसकी जुदाई से घबराते नहीं, उनकी मिसाल ऐसे यात्रियों की है जो ऊसर-बंजर को छोड़कर हरी-भरी दुनिया की ओर जा रहे हैं। ये मार्ग की कठिनाईयों को सहन करते हैं, भूख-प्यास से घबराते नहीं।

अपने लोगों के बिछड़ जाने का कष्ट सहन करते हैं। किसी तकलीफ़ को तकलीफ़ नहीं समझते। किसी ख़र्च से जी नहीं चुराते, उनके लिए हर क़दम जो कामनाओं की ओर उठता है बड़ा आनंदमय होता है। लेकिन जो लोग दुनिया से चिमटे हुए हैं वे उसकी जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकते। उनकी मिसाल उस यात्री जैसी है जो हरी-भरी दुनिया को छोड़कर ऊसर-बंजर की ओर जा रहा है। उसके लिए यह यात्रा बड़ी भयानक है, वह इतना भयभीत हो उठता है कि उसकी चीख़ें निकल जाती हैं, क्योंकि उसने इस दुनिया को अपना अस्ली निवास स्थान बना लिया था।

प्यारे बेटे! तेरे सामने एक कठिन घाटी है, घाटी को एक हल्का फुल्का व्यक्ति बड़ी सरलता से पार कर सकता है, परंतु बोझल आदमी के क़दम फँस जाते हैं। तुझे इस घाटी से गुज़रना है क्योंकि इसी के बाद स्वर्ग या नरक है, इसलिए अपना ठिकाना अभी से बना ले ताकि मरने के बाद अफ़्सोस न करना पड़े।

प्यारे बेटे! तू आख़िरत के लिए पैदा किया गया है न कि दुनिया के लिए। तू ऐसे स्थान पर है जो डाँवा डोल है और जो आख़िरत में सफ़लता प्राप्त करने की तैयारी की जगह है। मौत तेरा पीछा कर रही है, तू लाख भागे बच नहीं

सकता। एक दिन उसका शिकार हो जाना है। इसलिए होशियार रह कहीं मौत ऐसी दशा में न आ जाए कि तुझे तौबा का अवसर भी न मिल सके, यदि ऐसा हो गया तो तूने अपने आपको हलाक कर डाला।

ख़बरदार! ख़बरदार! तुझे लालच मौत के घाट न ले जाए, जहाँ तक सम्भव हो अपने और ख़ुदा के बीच किसी का एहसान न ले, क्योंकि तेरा भाग तुझे मिल कर रहेगा, ईश्वर का थोड़ा दिया हुआ बंदे के बहुत देने से बेहतर है।

प्यारे बेटे! ज़ालिम के अत्याचार से तंगदिल न हो, क्योंकि वह अपना नुक़सान और तुम्हारा भला कर रहा है।

प्यारे बेटे! अन्न दो प्रकार के होते हैं, एक यह जिसको तुम ढूँढते हो, दूसरा वह जो तुमको ढूँढता है, बस अगर तू ढूँढना छोड़ दे तो वह स्वयं तेरे पास आएगा। दुनिया में तेरा भाग बस इतना है जितने से तेरी आख़िरत सुधर जाए। जो दुनिया को ठुकराता है दुनिया उसे गले लगाती है, यात्रा से पहले यात्रियों को देख लो और ठहरने से पहले पड़ोसियों की जाँच-पड़ताल कर लो।

प्यारे बेटे! जब मैंने अपने आप को देखा, बुढ़ा हो रहा हूँ, तो यह उपदेश लिखने में जल्दी करनी पड़ी, मुझे डर लगा कि कहीं लिखने से पहले ही प्राण-पखेरू न उड़ जाएं या शरीर की तरह अक़्ल भी कमज़ोर न हो जाए या तुझे दुनिया की माया न घेर ले, क्योंकि नवयुवकों का दिल ख़ाली ज़मीन की तरह होता है, जो हर तरह के बीज को सरलतापूर्वक स्वीकार कर लेता है।

प्यारे बेटे! मैं तेरी दुनिया और आख़िरत ईश्वर के सुपुर्द करता हूँ और दोनों लोक में उससे तेरी सफ़लता की दुआ करता हूँ। (नहजुल बलाग़ा से)

वह अपने किए पर पश्चाताप करने लगीं

महामानव प्रेषित मुहम्मद ﷺ के दामाद हज़रत अली रज़ीयल्लाहु अन्हु मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा बने। बचपन से ही आप की देख-भाल अल्लाह के रसूल ने की। आप ही की गोद में पलकर बड़े हुए। इसलिए स्वभावत: आप अपने आचार-विचार में लोगों के लिए एक नमूना और आदर्श थे।

इस्लामी संसार के सम्राट बनने के बाद भी आप अपने स्वाभाविक आचरण पर डटे रहे। ख़िलाफ़त का हर काम इस प्रकार पूरा करते कि आपको किसी के सम्मुख उत्तरदाई होना है। इसलिए मुसलमानों के बैतुलमाल से उतना ही लेते जितने में आपका और आप के परिवार का पालन-पोषण हो सकता था, बल्कि आप इसमें भी कमी करते चले गए यहाँ तक कि आपका ख़र्च इस्लामी संसार के सबसे निर्धन व्यक्ति के समान हो गया। कभी-कभी औरतें शिकायत भी करती थी कि इतने कम दिरहम में हमारा ख़र्च नहीं चल सकता, लेकिन आप ये कह कर टाल देते कि मुसलमानों के बैतुलमाल में हमारा हक़ यही है जितने में हम जीवित रह सकें।

एक बार आप की भाभी (हज़रत जाफ़र की पत्नी जो मौता के युद्ध में शहीद हो गए थे) ने आपको खाने की दावत दी, जिसको आपने बड़ी ख़ुशी से स्वीकार कर लिया। आपकी भाभी का विचार था कि जब खाने के लिए आप आएंगे तो राशन कम होने की शिकायत करूंगी। अत: जब आप खाने के लिए बैठे तो उसने कहा, ऐ अमीरुल मोमनीन ! हमको जो बैतुलमाल से राशन मिलता है वह कम पड़ जाता है इसलिए आप उस को बढ़ा दीजिए।

हज़रत अली बोले, लेकिन भाभी जी यह बताईए कि अगर राशन कम पड़ता है तो आपने मेरी दावत किस प्रकार की? ऐ अमीरुल मोमिनीन! बैतुलमाल से हमें जो राशन मिलता था उसमें से जो रोज़ाना एक चुटकी आटा बचा लिया करती थी और आज एक माह बाद आपकी दावत का प्रबंध कर सकी हूँ। हज़रत अली ने कहा, इसका मतलब है कि एक चुटकी आटा ज्यादा मिलता है कम कर देने से भी आप का काम चल सकता है । यह सुनते ही आप की भाभी आश्चर्य में डूब गईं, मगर क्या करती? अपने किए पर पश्चाताप करने लगीं, क्योंकि दूसरे दिन बैतुलमाल से आटा आया तो उसमें एक चुटकी आटा कम था और फिर यह चुटकी पूरी नहीं आई। यह इस्लामी इतिहास की एक छोटी घटना है जिसको पढ़कर विद्यार्थी आगे बढ़ जाते हैं, लेकिन हर घटना अपने पीछे एक सीख रखती है, इसलिए आईये इस रहस्य की खोज निकालें, जिसने एक चुटकी आटा और कम कर दिया। क्योंकि किस्से-कहानियाँ को पढ़ कर नसीहत प्राप्त किए बिना आगे बढ़ जान यह उनका काम नहीं जो संसार में कुछ करना चाहते हैं।

“काँति” साप्ताहिक दिल्ली के किसी अंक में मैने पढ़ा था कि फ़ुलां वज़ीर साहब ने पाँच हज़ार रूपए की शराब पी और उसका बिल हुकूमत को भेज दिया। किसी दूसरे ने तीन हज़ार की और तीसरे ने दो हज़ार की...।

मैं सोच में पढ़ गया कि क्या समय आ गया है, एक तरफ़ जनता भूख-प्यास से तड़प रही है, शरीर ढाँकने के लिए एक लंगोटी भर को तरस रही है, झोपड़ी न होने के कारण पेड़ के साए में जीवन व्यतीत कर रही है तो दूसरी ओर राज्यकोष को पानी की तरह बहाया जा रहा है। राज्य की दौलत पानी की

तरह बहाने वालों को भूखी, प्यासी और नंगी जनता का कुछ ख़याल नहीं, आख़िर इन दोनों जीवन के बीच यह कौन सी दीवार हायल हो गई है कि एक की छाया दूसरे तक नहीं पहुँचती।

अब हर पाठक इन दोनों घटनाओं को सामने रख कर सरलतापूर्वक इनका अंतर समझ सकता है और अपनी भूखी प्यासी जनता को पैग़ाम पहुँचा सकता है कि दुनिया में एक ऐसी भी व्यवस्था है जिसको ग्रहण करते ही इंसान की काया पलट जाती है । वह अपने हर काम के लिए बड़ी सत्ता के सक्षम उत्तरदायी हो जाता है।

इसलिए फिर क्यों न एक बार उस जीवन व्यवस्था को आज़माएं?

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ख़लीफ़ा बनते हैं

अभी इस्लामी शिक्षा पर एक शताब्दी भी नहीं बीतने पाई थी की मुसलमानों में भी दुनिया परस्ती पैदा होने लगी। उनको भी धन का लालच सताने लगा।

महामानव प्रेषित मुहम्मद ﷺ को मक्का से हिजरत कर के मदीना गए हुए ९९ वर्ष हो चुके हैं। तीस वर्ष तक मदीना इस्लामी राज्य की राजधानी थी, लेकिन अब वहाँ से बदल कर दमिश्क (शाम का एक नगर) इस्लामी राज्य की राजधानी है, जिसकी जामा मस्जिद में मानव का समुद्र ठाठे मार रहा है। क्योंकि सरकार की ओर से यह एलान करा दिया गया है कि आज लोगों को एक ख़ास समाचार से बाखबर करने का प्रोग्राम है। इसलिए हर एक मस्जिद में पहुँचने की कोशिश कर रहे थे।

जब सब लोग इकट्ठा हो गए तो ख़लीफ़ा का मुख्य सलाहकार "रज़ा बिन हैवा" मेम्बर पर खड़े हो गया। उसके हाथ में मुहरबंद एक ख़त था। उसने लोगों को सम्बोधित कर के कहाः हे लोगों! यह ख़लीफ़ा सुलेमान का ख़त है। इसमें ख़लीफ़ा ने अपने बाद एक व्यक्ति को अमीरुल मोमिनीन नियुक्त किया है। क्या आप लोग उस व्यक्ति के हाथ पर बैअत करने के लिए तैयार है?

हाँ, हाँ! ध्वनि से मस्जिद गूंज उठी।

रज़ा बिन हैवा ख़त खोलने लगे और फिर एक बार मस्जिद में सन्नाटा छा गया। लोगों ने अपनी साँसे बंद कर लीं, हर शख़्स इस विचार में डूब गया कि

देखें अब हमारा ख़लीफ़ा कौन बनता है? ख़लीफ़ा सुलेमान के बेटों, भतीजों और दूसरे लोगों के दिल धड़कने लगे, यह जानने के लिए क्षण बाद इस्लामी संसार का कौन मालिक बन रहा है, वह राज्य जिसका झण्डा अब तक एक ओर अफ़्रिका और स्पेन में लहरा था तो दूसरी ओर रूस, चीन और सिंध में भी बोल-बाला था।

रज़ा बिन हैवा ख़त खोल कर पढ़ने लगे।

अमीरुल मोमिनीन सुलेमान की ओर से सारी जनता को सलाम। मैं अपने बाद एक व्यक्ति को अपना ख़लीफ़ा नियुक्त कर रहा हूँ। यह सब कुछ मैंने आप की भलाई के लिए किया है इसलिए मुझे आशा है कि आप लोग उसको पसंद करेंगे। वह हैं उमर बिन अब्दुल अज़ीज़।

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का नाम सुनते ही पूरी मस्जिद फिर गूंज उठी। ख़ुशी से लोग 'अल्लाहु अकबर' के नारे लगाने लगे। लोगों के दिल ख़ुशी से झूम उठे, क्योंकि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की ईश भक्ति और दयालुता से सारे लोग परिचित थे। आप के पिता अब्दुल अज़ीज़ मिस्र के गर्वनर थे, इसलिए आप राजकुमारों के साथ पले-बढ़े थे। घर पर धन का बाहुल्य था आपका बिस्तर गुलाब के फूलों से सजाया जाता, उस पर ख़ुश्बू की वर्षा की जाती, मगर जब सवेरे आपकी सेविका बिस्तर उठाने जाती तो यह देख कर चकित रह जाती है कि गुलाब के फूलों से सज़ा हुआ पलंग वैसे ही पड़ा है इसलिए कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज सारी रात नमाज़ पढ़ते ही बिता देते थे। लोगों का कहना था कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ अपने नाना अमीरुल

मोमिनीन उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु के प्रभाव को लेकर पैदा हुए थे, इसलिए कि जिस लड़की ने रात के अंधेरे में दूध में पानी मिलाने से इंकार कर दिया था और उमर रज़ीयल्लाहु अन्हु ने अपने बेटे आसिम से उसका विवाह कराया था, उसी लड़की के आप नाती थे। इसलिए आपका हज़रत उमर के स्वभाव को लेकर पैदा होना बिल्कुल सम्भव मालूम होता है।

अब लोग उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की ओर बढ़े और आपको पकड़ कर मिम्बर पर खड़ा कर दिया।

लेकिन आप थे कि बराबर "इन्न लिल्लाहि व इन्न इलैहि राजिऊन" (यह एक दुआ है जो संकट काल में पढ़ी जाती है) पढ़ते चले जा रहे थे और बार-बार ख़िलाफ़त के इस बोझ से बचने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन क्या करते जो कुछ होना था, फिर सारी जनता ने आपके हाथ पर बैअत कर ली।

बैअत पूरी हो जाने के बाद 'रज़ा बिन हैवा' ने सुलेमान के देहांत का समाचार सुनाया और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ख़िलाफ़त का भारी बोझ लादे बोझिल क़दमों से अपने घर वापस आकर एक कोने में बैठ गए।

आपकी पत्नी फ़ातिमा अपने पति को इस प्रकार उदास देख कर बड़ी चिंतित हुई और अर्ज़ किया, आज आप इतने उदार और परेशान क्यों है?

उमर: क्यों न चिंतित होऊँ, आज मेरे सिर पर इतना बड़ा बोझ लाद दिया गया जिसको सोचकर ही मेरा हृदय काँप रहा है कि मैं उसको पूरा कर सकूँगा या नहीं?

पत्नी: अच्छा तो वह कौन सा इतना बड़ा बोझ है?"

उमर: "ख़िलाफ़त का।"

यह सुनते ही फ़ातिमा खिल उठी और उसने कहा, क्या यह चिंतित होने का अवसर है? बल्कि यह तो खुश होने की बात है कि अब आज से आप अमीरुल मोमिनीन बन गए। मगर फ़ातिमा को क्या मालूम कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ इस बोझ को कितना भारी समझ रहे हैं। उनके दिमाग़ में अफ़्रिका और स्पेन से लेकर रूस, चीन और सिंध के एक-एक व्यक्ति का विचार घूम रहा था। हर यतीम और अपाहिज का ख़ियाल सता रहा था। वह उस दिन को याद कर के काँप रहे थे जब सिंध का एक साधारण किसान ईश्वर के सम्मुख यह याचना करेगा कि प्रभू! उमर हमारा ख़लीफ़ा था मगर हम पर कुछ ध्यान नहीं देता था, मेरे खेत में पड़ोसी की बकरी चर रही थी मगर उमर को मेरी कोई चिंता नहीं थी।

ये थे मुसलमानों के नए ख़लीफ़ा, जिन्होंने फिर एक बार पूरी एक शताब्दी के बाद ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन का उच्चतम आदर्श पेश किया।

एक गिलास पानी

हारून रशीद बनू अब्बासिया का पाँचवा ख़लीफ़ा था जो १८ दिसम्बर ७८६ ईस्वी को सिंहासन पर विराजमान हुआ। साहस और वीरता में अपना उदाहरण नहीं रखता था। दुश्मनों के मुक़ाबले में जब भी कभी निकलता विजय उसके चरण छूती। परास्त होना तो ऐसा मालूम होता है कि उसे मालूम ही नहीं था। दुनिया का यह तन्हा ख़लीफ़ा है कि एक वर्ष विजय और दुसरे वर्ष हज, इस प्रकार उसने अपने शासनकाल में नौ हज किए, जिस वर्ष हज के लिए नहीं जाता उस वर्ष तीन सौ ईशभक्तों को हज का ख़र्च देकर हज कराता।

इस्लामी शास्त्र में हज बहुत ही बड़ा धार्मिक कर्तव्य है, क्योंकि अगर किसी का एक हज ईश्वर ने स्वीकार कर लिया तो उसका परलोकिक जीवन सुधर गया।

हारून रशीद की राज्य सीमा भी कुछ कम नहीं थी, बल्कि पूरे इस्लामी इतिहास में उसकी और उसके बाद उसके बेटे मामून रशीद की राज्य सीमा का उदाहरण नहीं मिलता। उसके नाम से फ़्रांस का बादशाह सलोमन भी घबराता था। यह सब कुछ होते हुए भी ईशभक्तों का बड़ा आदर सत्कार करता था। उनको अपने दरबार में बुलाकर बार-बार नसीहत करता और कभी-कभी तो ईश्वर की पकड़ से इतना भयभीत हो उठता कि रोते-रोते उसकी बुरी दशा हो जाती, दाढ़ी आँसुओं से भीग जाती। एक बार हारून रशीद ने 'इब्ने समाक' को नसीहत करने के लिए अपने दरबार में बुलाया।

'इब्ने समाक' बहतु बड़े आलिम थे। ईश्वर के अलवा किसी से भयभीत होना नहीं जानते थे।

इब्ने समाक हारून रशीद के दरबार में पहुँचते हैं और उसको नसीहत करते हुए ये उपदेश होते हैं:

हे अमीरुल मोमिनीन! कल आप अल्लाह के सामने हाज़िर होंगे फिर आप के लिए स्वर्ग या नरक का फ़ैसला होगा। इन दोनों के अलावा तीसरा और कोई ठिकाना नहीं।

इब्ने समाक यह कहते जाते थे और हारून रशीद की आँखों से आँसू बहते जाते थे। जिससे उनकी दाढ़ी भीग गई और उसमें से पानी टपकने लगा।

इस दशा को देखते ही बादशाह का वज़ीर फज़ल बिन रबी गुस्से से भर गया और उसने इब्ने समाक को संबोधित कर के कहा इब्न समाक! क्या तुम्हें इस बात का यकीन नहीं है कि अमीरुल मोमिनीन का सही ठिकाना स्वर्ग है।

लेकिन इब्ने समाक ने प्रधानमंत्री की बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वे जानते थे कि ये लोग अपनी-अपनी झोली भरने के लिए चापलूसी की बातें करते हैं। इनके हृदय प्रेम-भावना से बिल्कुल ख़ाली होते हैं, जब तक रोटी का टुकड़ा मिलता रहता है गुण गाते हैं जहाँ वह टुकड़ा छिन गया सब कुछ भूल जाते हैं। कितने दर्द के साथ कहना पड़ता है कि संसार ऐसे ही लोगों के चंगुल में फँसा हुआ है।

इब्न समाक प्रधानमंत्री का विचार किए बिना कहने लगे, हे अमीरुल मोमिनीन! ये लोग जो आज आप के आगे-पीछे लगे हुए हैं उस दिन कुछ काम नहीं आएंगे। इसलिए आप इनकी बातों में मत आ जाईए। जो कुछ तैयारी कर सकते हैं कल की तैयारी कर लीजिए।

यह सुनते ही फिर हारून रशीद पर भय छा गया और उसके नेत्रों से आँसू की धाराएं फूट निकलीं। इसी दशा में उसने सेवक से एक गिलास पानी माँगा।

अभी गिलास मुँह को भी लगाने न पाया था कि इब्ने समाक ने पुकार कर कहाः "अमीरुल मोमिनीन"! रुक जाईए और बताईए कि अगर आप ऐसे चटियल मैदान में हों जहाँ पानी नहीं मिल सकता तो आप इस एक गिलास पानी को कितने मूल्य में ख़रीद लेंगे। हारून रशीद ने कहा:

"अपने आधे राज्य के बदले।" इब्ने समाक बोले: बहुत अच्छा। अब आप पी लीजिए। पीने के बाद फिर इब्ने समाक पूछते है:

हे अमीरुल मोमिनीन! गिलास का पानी तो आप ने पी लिया, इसके बाद अगर आपका पेशाब रुक जाए तो आप क्या करेंगे? और इसके इलाज में कितना ख़र्च करने को आप राजी होंगे। अमीरुल मोमिनीन ने कहा शेष आधा राज्य। आप ने कहा, हे अमीरुल मोमिनीन! विचार कीजिए कि जिस राज्य का मूल्य केवल एक गिलास पानी हो उस पर आदमी क्यों गर्व करे। इससे भी बढ़ कर मनुष्य की और क्या मूर्खता हो सकती है कि इतनी हक़ीर चीज़ के लिए इतराता फिरे। यह कह कर इब्ने समाक तो चले आए परंतु हारून

रशीद बेहोश हो गए। कुछ लोगों को भय हुआ कि कहीं अमीरुल मोमिनीन का स्वर्गवास न हो जाए। चेहरे पर पानी छिड़का गया और हारून ने अपनी आँखें खोल दीं। वास्तव में आप की आँख तो अब खुली थी, अब तक आपका जीवन किस अंधकार में था, अब उससे पश्चाताप करने लगे। फिर जीवन का मार्ग इस प्रकार बदला कि बड़े-बड़े ईश भक्त भी आश्चर्य करने लगे। रातों की नींद हराम कर ली, सौ-सौ रक्अत नमाज़ पढ़ने लगे, जनता में न्याय का ऐसा प्रबंध किया कि बकरी और शेर एक घाट पर पानी पीने लगे। ग़रीबों और फ़क़ीरों के लिए राज्य कोष का द्वार खोल दिया। इसके अलावा प्रत्येक महीने एक हजार दिरहम अपनी जेब से दान पुण्य में ख़र्च करने लगे और देहान्त इस दशा में हुआ कि आख़िरत के लिए बहुत कुछ कमा लिया था।

हसन बसरी का एक विचारात्मक पत्र

नेक दिल और ईश्वर से डरने वाले ख़लीफ़ा, विद्वानों और ईश भक्तों का बड़ा आदर एवं सत्कार करते थे। उनको अपने दरबार में बुलाते और उनकी सेवा करते। स्वयं उनके घर भी जाते और जो कुछ बन पड़ता उनको भेंट देकर आते। क्योंकि यह सच है कि आदमी जितना सांसारिक कामों में फंसेगा उतना ही ईश्वर से दूर होता रहेगा, इसलिए यह बड़ी कठिन परीक्षा है कि मनुष्य दुनिया के कामों में फंसकर भी अपने ईश्वर को याद करता रहे। इसके लिए साधारण तरीका है कि ख़लीफ़ा अपने समय का कुछ भाग संतों और ईश भक्तों में व्यतीत करे। उनसे नसीहतें हासिल करे, उनकी सेवा में आनन्द अनुभव करे, उनके लिए भोजन सामग्री तथा वस्त्र इत्यादी का प्रबंध करे और उनकी दुआएं हासिल करे।

इस मार्ग को हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने पा लिया था, जिसके कारण आप के दरबार में विद्वानों और ईश भक्तों का जमघट लगा रहता था। उनकी सोहबत से आप लाभ उठाते थे। वह सदैव आप को आख़िरत की याद दिलाते रहते जिसके कारण आपका शरीर तो सांसारिक कार्यों में लगा रहता परंतु हृदय ईश्वर स्मरण में मग्न रहता। इतने रंग-बिरंगे संसार के होते हुए भी आप के नेत्र आख़िरत के ध्यान में आँसू बहाते रहते क्योंकि उस दिन की सफ़लता ही जीवन की सफ़लता है।

हज़रत हसन बसरी अपने समय के बहुत बड़े विद्वान और ईश भक्त थे। सारा इस्लामी संसार आपसे परिचित था और आपका आदर करता था।

एक बार एक बद्दू बसरह में आया और लोगों से पूछा कि इस शहर में सबसे बड़ा विद्वान कौन है? लोगों ने कहा, हसन बसरी।

बद्दू ने कहा कैसे?

लोगों ने कहा, इसलिए कि वे हमारी दुनिया से बेपरवाह हैं, उन्हें हमारे धन-दौलत से कोई सरोकार नहीं, मगर हम उनके इल्म के मुहताज हैं।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर भी हसन बसरी का बड़ा आदर करते थे। आपने एक बार उनसे नसीहत करने की गुज़ारिश की तो आप ने यह पत्र उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के नाम लिखाः

हे अमीरुल मोमिनीन! अल्लाह ने ख़लीफ़ा को हर टेढ़ी राह से रोकने और ज़ालिम को ज़ुल्म से मना करने के लिए बनाया है। अल्लाह ने ख़लीफ़ा को निर्बल के लिए शक्ति, मज़लूम के लिए ढाल और चिंतित जनों के लिए आनन्द पहुँचाने वाला बनाया है। ख़लीफ़ा उस चरवाहे की तरह है जो अपने पशुओं को उत्तम से उत्तम चारा खिलाता है और उनको हलाकत की जगहों से बचाता है। हिंसक पशुओं से सुरक्षित रखना और सर्दी, गर्मी से बचाना भी ख़लीफ़ा का काम है।

हे अमीरुल मोमिनीन! ख़लीफ़ा माँ-बाप के समान है जो अपनी संतान पर कृपा करते हैं, बड़े हों तो उनके लिए शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध करते हैं । जब तक जीवित रहते हैं संतान के लिए कमाई करते हैं, मर जाते हैं तो उनके लिए छोड़ जाते हैं। हे अमीरुल मोमिनीन! ख़लीफ़ा माँ की तरह होता है जो बड़े कष्ट के साथ बच्चे को पेट में लिए रहती है और बड़े कष्ट के साथ उसको जन्ती

है, फिर अपना रक्त दूध बना कर बच्चे को पिलाती है। जब तक बच्चा स्वस्थ रहता है माँ भी प्रसन्न होती है जहाँ कोई तकलीफ़ पहुंची कि माँ तड़प उठती है।

हे अमीरुल मोमिनीन! ख़लीफ़ा अनाथों का संरक्षक और निर्धनों का ढारस है। छोटे हों तो उनकी शिक्षा का प्रबंध करता है, बड़े हो तो उनकी आवश्यकताओं को पूरा करता है।

हे अमीरुल मोमिनीन! ख़लीफ़ा का सामाजिक जीवन में वही स्थान है जो दिल का सारे शरीर में। जब तक दिल ठीक रहता है पूरा शरीर स्वस्थ रहता है, जहाँ दिल ख़राब हुआ कि सारा शरीर दूषित हो उठा।

हे अमीरुल मोमिनीन! ख़लीफ़ा ईश्वर की वाणी सुनता है और लोगों को सुनाता है वह पढ़ता है और लोगों को पढ़ाता है, वह अल्लाह की उपासना करता है और लोगों से उपासना कराता है। इसलिए हे अमीरुल मोमिनीन! आप उस सेवक की तरह न हो जाएं जिसको उसके स्वामी ने धन-दौलत और परिवार की रक्षा के लिए नियुक्त किया मगर उसने किसी की रक्षा नहीं की।

हे अमीरुल मोमिनीन! अल्लाह ने बुरी बातों से रोका है और ख़लीफ़ा को अपना प्रतिनिधि बनाया है, मगर जब ख़लीफ़ा बुरे काम करने लगे तो जनता की क्या दशा होगी।

हे अमीरुल मोमिनीन! मौत को याद कीजिए और सोचिए कि उस समय कोई आपका मित्र नहीं होगा, कोई आप का संरक्षक नहीं होगा, संसार की धन-

दौलत कुछ काम नहीं आएगी। आप को जिस घर में रखा जाएगा वह बहुत तंग होगा, उसमे चिराग़ भी नहीं होगा। सब लोग आपको वहाँ छोड़कर चले आएंगे। उस समय के लिए सामग्री जुटाईए। फिर आपको क़ब्र से उठाया जाएगा और जो कुछ आप के दिल में होगा उसका भी हिसाब लिया जाएगा। इसलिए इस समय आप को मुहलत मिली है उससे लाभ उठाईए और उस दिन के लिए भी कुछ कमाई कीजिए जिसके बाद कमाने का अवसर नहीं मिलेगा।

हे अमीरुल मोमिनीन! जाहिलों और मुर्खों की तरह फ़ैसला न करना और जनता के साथ अत्याचारपूर्ण व्यवहार न होने पाए। निर्बलों पर ज़ालिमों को मत चढ़ाना, क्योंकि वे किसी पर दया नहीं करते। इस प्रकार एक तो आप को अपना बोझ उठाना पड़ेगा, दूसरे इन मज़लूमों का । आप उन लोगों से धोखा मत खाईए जो आपको अज़ाब में डाल कर मज़े उड़ा रहे हैं, क्योंकि उनकी दुनिया तो बनेगी, परंतु आख़िरत बिगड़ेगी।

हे अमीरुल मोमिनीन! आप अपनी शक्ति की ओर मत देखिए बल्कि उस दिन का विचार कीजिए जब आप के पास कोई शक्ति नहीं रहेगी और अपनी पेशानी को अपने प्रभु के सम्मुख रगड़-रगड़ कर आप क्षमा माँगते होंगे, उस दिन कोई आप की सहायता के लिए नहीं आएगा।

हे अमीरुल मोमिनीन! यद्यपि मैं वैसे नसीहत नहीं कर सकता जैसी मुझसे प्रथम विद्वानों ने की थी, परंतु मैने दिल में कुछ रखे बिना सब कुछ कह दिया।

इसमें कुछ बातें आप को सख़्त भी लगेंगी, लेकिन इन बातों को किसी हार्दिक मित्र की कड़वी दवा समझिए जो अपने साथी के उपचार के लिए देता है।

वस्सलाम

हसन बसरी

यह एक संत विद्वान का पत्र है जिसको उसने आठवीं शताब्दी के महान सम्राट के नाम लिखा था।

यह तुम्हारी पत्नी (बीवी) है

शैख़ सईद बिन मुसय्यिब मदीने के सबसे बड़े विद्वान थे, सारे मदीने वाले उनका आदर सत्कार करते थे, एक दिन शैख़ ने अपने विद्यार्थी से पूछाः

अबू बर्रा तुम तीन दिन तक क्यों अनुपस्थित रहे? अबू बर्रा ने उत्तर दिया कि मेरी पत्नी का देहांत हो गया था, उसको दफ़्न करने और शोक मनाने में तीन दिन गुज़र गए। शैख़ ने (दुआ के बाद) फ़रमाया: तो फिर तुमने दूसरी शादी कर ली। अबू बर्रा की आँख से दो-तीन बूंदें गीर पड़ती हैं, भराई हुई आवाज़ में कहता है : शैख़ मैं एक निर्धन विद्यार्थी हूँ, भला कोई मुझसे शादी के लिए भी तैयार होगा?

शैख़ ने फ़रमाया: कि तुम्हारे पास क्या है? अबू बर्रा ने उत्तर दिया: तीन दिरहम (बारह आना)। शैख़ ने फ़रमाया: मैं अपनी बेटी का विवाह करना चाहता हूँ, क्या तुम राज़ी हो? अबू बर्रा ने उत्तर दियाः धन्य हो हुज़ूर का, आप की आज्ञा सिर-आँखों पर।

शैख़ ने निकाह का ख़ुत्बा पढ़ कर दो दिरहम (आठ आना) के बदले महर में मैंने अपनी बेटी की शादी तुम से कर दी, बोलो तुम्हें कुबूल है? अबू बर्रा ने कहाः जी हाँ, क़ुबूल है, मज्लिस ख़त्म हो गई, शैख़ अपने घर चले गए।

बिस्तर पर पड़ कर अबू बर्रा आज की पूरी कहानी पर विचार करने लगा, लेकिन उसको किसी प्रकार विश्वास नहीं आ रहा था कि आज उसकी शादी हो गई है। वह भी शैख़ की बेटी से जो उस समय इस्लामी दुनिया में सबसे बड़ी आलिमा थी। बड़े-बड़े विद्वान उसके पास विद्या सीखने आते थे। इन

बातों को सोच-सोच कर वह परेशान हो रहा था कि क्या वास्तव में मैं शैख़ कि इस बुद्धिमान बेटी का पति हूं। दरवाज़े से आवाज़ आई, अबू बर्रा! और वह चौक गया, नाम पूछने पर आने वाले ने नाम बताया। उसकी समझ में कुछ नहीं आया, वह सोचने लगा इतनी रात गए कौन सईद आया है? एक-एक करके सभी सईद उसको याद आने लगे, लेकिन "सईद" बिन मुसय्यिब किसी प्रकार याद नहीं आ रहे थे, क्योंकि चालीस साल से शैख़ को किसी ने घर और मस्जिद के अलावा दूसरे स्थान पर नहीं देखा था। अंत में अबू बर्रा ने फाटक खोल दिया, क्या देखता है कि शैख़ सईद बिन मुसय्यिब खड़े हैं।

अबू बर्रा परेशान हो गया, उसने विचार किया कि शायद शैख़ ने अपनी बेटी से उसका विवाह कर के ग़लत किया है, अब पश्चाताप करने आए हैं। इतने में शैख़ ने फ़रमाया: 'अबू बर्रा!' तुम्हारी शादी हो गई है अब मुझे यह बात पसंद नहीं कि तुम मियाँ-बीवी अलग-अलग रहो, देखो यह तुम्हारी बीवी है। अपनी बेटी का हाथ अबू बर्रा के हाथ में थमा कर शैख़ अपने घर को चल दिए।

यह है हमारा इस्लामी इतिहास जिस पर हमको गर्व है। लेकिन आज के गैर मुस्लिम हमारी दुर्दशा को देख कर हमारे धर्म को बदनाम कर रहे हैं। इसमें केवल उनकी ग़लती नहीं है बल्कि यह हमारी इस्लाम से दूरी का ही कारण है। अगर आज भी हम अपने इस्लाम को सही-सही अपना लें तो उसकी ज्योति से सारी धरती प्रकाशित हो जाएगी, मुझे मुसलमान भाईयों से आशा है कि वे दुबारा इस्लाम और इस्लामी इतिहास का अध्ययन करेंगे और उसके अनुसार अपना जीवन बिताने का प्रयत्न करेंगे। ईश्वर उनकी और हमारी कामनाओं को पूरा करे!!

मदीने में रमज़ान का स्वागत

यह सन १९६६ ईस्वी की बात है, जब मैं मदीने पहुँचा। पहली रमज़ान को मदीने में बड़ी चहल-पहल थी। दुकानें सजी हुई, सड़कें और गलियाँ भरी हुई, प्रकाश का अनोखा प्रबंध, जिसे देखने से जान पड़ता था कि कोई श्रेष्ठ व्यक्ति इस नगर में प्रवेश करने वाला है यह किसी महान दिवस का स्वागत किया जाने वाला है।

जिनके पास रेडियो है वे खोले हुए किसी नए समाचार की प्रतीक्षा कर रहे हैं। बात अनोखी है, न तो आज बी.बी.सी. से समाचार सुना जा रहा है न अमरीकी सभ्यता पर वार्तालाप हो रही है, न इस्राईल के अत्याचारों का वर्णन है बल्कि रेडियो की सुई किसी मीटर पर है तो वह है सौतुल इस्लाम' (इस्लाम की वाणी) मक्का पर है। थोड़ी देर के इन्तिज़ार के बाद रियाज़ के गर्वनर की आवाज़ आई जो सऊदी अरब के बादशाह को इन शब्दो में मुबारकबाद दे रहे थे।

अल्लाह आप को रमज़ान का माह मुबारक करे और भविष्य में बार-बार आप को आनन्दित होने के अवसर प्रदान करे। यह सुनना था कि बच्चे ख़ुशी से उछलने लगे, लोग एक-दूसरे को रमज़ान की बधाई देने लगे। नबी की मस्जिद में लगा हुआ लाल बल्ब जलने लगा, सला नामी पहाड़ से धमाके होने लगे, जिसकी गम्भीर आवाज़ से पूरा मदीना शहर गूंजने लगा। यहाँ तक कि दूर-दूर फैले हुए देहाती भी रमज़ान के आने से बाखबर हो गए। यह चहल-पहल, यह धूम-धाम, यह सजी-सजाई दुकानें अभी खुली ही पड़ी थीं

कि ईशा की अज़ान वातावरण में गूंजने लगी, आज इस स्वर में भी एक आकर्षण शक्ति थी, जो सुनता था वही मदमत्त खड़ा हो जाता था और धीमी-धीमी आवाज़ में बार-बार अल्लाहु अकबर,अल्लाहु अकबर दुहराता था।

और फिर सड़कों पर चलने-फिरने वाले एक-एक कर के मस्जिद की ओर बढ़ने लगे। यहाँ तक कि वही सड़क जो अब से कुछ देर पहले भरी पड़ी थी वीरान और सुनसान हो गई। वे दुकानें जिन पर लोगों की भीड़ थी खाली हो गईं, उनमें रौशनी वैसी ही हो रही थी, दरवाज़े वैसे ही खुले थे, बाहर लटकी हुई वस्तुएं वैसी ही पड़ी थीं। मगर न बेचने वालों का पता है न ख़रीदने वालों का। ऐसा जान पड़ता था जैसे अलाउद्दीन के चिराग़ का करिश्मा हो। दुकानें सजी-सजाई हैं, सड़के साफ़-सुथरी हैं, मगर किसी मनुष्य का नामो निशान भी दिखाई नहीं दे रहा है।

बिल्कुल यही काल्पनिक दृश्य आज मदीने का है, अगर कोई अजनबी इधर-उधर निकल आए तो हैरान हो जाएगा, चकित होने वालों में से मैं भी एक हूँ, क्योंकि आज प्रथम बार अलाउद्दीन नामी पाठ का चित्रण अपनी आँखों से देख रहा हूँ, कभी-कभी मुझे अपने ऊपर शंका होने लगती है कि क्या मैं स्वप्न में अलाउद्दीन की दुनिया में तो नहीं आ गया हूँ?

इन हृदयांकित दृश्यों को देखने के बाद जब मस्जिदे नबवी में गया तो तिल धरने की जगह नहीं थी। अंदर के दोनो आँगन और मस्जिद के दोनों भागों में मनुष्यों का समुद्र ठाठे मार रहा था। कोई नमाज़ में लीन है तो कोई क़ुरआन की तिलावत में मग्न है, कहीं महान विद्वानों का व्याख्यान हो रहा है

तो कहीं विद्यार्थियों का समूह अध्ययन में लगा हुआ है। अर्थात सब अपने परमात्मा की याद में लीन हैं। चेहरों पर प्रसन्नता का दिव्य प्रकाश दौड़ रहा है।

अब इशा के लिए इक़ामत होने लगी, लोग अपनी-अपनी क़तारें ठीक कर रहे हैं लोग क्षण भर में इस प्रकार खड़े हो गए जैसे फ़ौजी बैंड सुन कर सम्मोहित रह जाएं। ऐसा इसलिए हुआ कि ये लोग किसी नेता के सम्मुख नहीं, किसी शासक या राष्ट्रपति के स्वागत में नहीं बल्कि अपने ईश्वर के आगे खड़े हैं, जो हृदयों में उठने वाले विचारों से भी परिचित है। इमाम साहब अल्लाहु अकबर कह कर हाथों को सीने पर बाँधे पालनहार की याद में मग्न हो गए। ऐसा ज्ञात होता था कि इन लोगों को दुनिया से कोई मतलब नहीं। किसी सहाबी ने ख़ूब कहा थाः

हम लोग जब महामानव प्रेषित मुहम्मद ﷺ के पास बैठते हैं तो इतने अदब और आदर-सत्कार से बैठते हैं अगर पक्षी हमारे सिरों पर बैठ जाएं तो वे हम को जीवित न समझें। अर्थात हम तनिक भी हिलते-डुलते नहीं बिल्कुल इसी प्रकार आज असंख्य मनुष्यों का समूह अपने ईश्वर के सम्मुख खड़ा है।

दोबारा अल्लाहु अकबर की आवाज़ आई और सारे लोग रुकुअ में चले गए। इसमें बड़े-बड़े जज हैं, गर्वनर और मजिस्ट्रेट हैं, इंस्पेक्टर और थानेदार हैं, धनवान और निर्धन हैं, बलवान और निर्बल हैं, कुली और मज़दूर हैं, बूढ़े और अपाहिज हैं अर्थात हर प्रकार के लोग हैं, सब ईश्वर के आगे झुके हुए

हैं । न छोटे-बड़े का अंतर है न धनी-निर्धन का भेद है, न शक्तिशाली और दुर्बल में फ़र्क है।

यह है इस्लामी सभ्यता! यह है इस्लामी समानता! यह है इस्लामी शिक्षा! क्या है कोई जो इस्लाम का अध्ययन करे? क्या है कोई जो उसका जीवन मार्ग बताए? क्या है कोई जो इसका प्रचार करे?

अभी और देखिए! अब सब लोग अपने पालनकर्ता के सम्मुख गिर पड़े हैं। न किसी को सुंदर कपड़ों का ख़ियाल है न बड़प्पन का विचार है । बल्कि वही लोग जो अब तक सिर झुकाएं खड़े थे, ईश्वर की आज्ञा पाते ही उसके आगे अपना सिर रख कर झुकाए खड़े थे, ईश्वर की आज्ञा पाते ही उसके आगे अपना सिर रख कर उसकी तौहीद बयान करने लगे, उसकी बड़ाई का इक़रार करने लगे, उससे रो-रोकर दुआएं करने लगे, उसकी उपासना करने में लीन हो गए। नेकी के मार्ग पर चलने का वचन देने लगे और बुरी राहों पर चलने से पनाह माँगने लगे। इस प्रकार यह जनसमूह घंटों नमाज़ पढ़ता रहा, चार रकअत फर्ज़ पढ़ी, बीस रकअत तरावीह पढ़ी और तीन रकअत वित्र ।

नमाज़ खत्म होते ही फिर शहर में चहल-पहल शुरू हो गई और यह रात के आख़िरी भाग तक जारी रही।

यहाँ के लोग सहरी खाकर सुबह की नमाज़ पढ़ते हैं। दुकानें बंद हो जाती हैं। दफ़्तर और ऑफ़िस का समय बदल जाता है अर्थात पूरे वातावरण पर एक सन्नाटा छा जाता है।

पूरे दिन न कोई होटल खुला मिलेगा न चाए की दुकान खुली मिलेगी न कोई सड़क पर सिगरेट पीता दिखाई देगा न कोई गाली-गलौज करता नज़र आएगा। अर्थात पूरा शहर शांतिमय समुद्र की भाँति लहराता हुआ नज़र आता है।

दोपहर की नमाज़ के बाद फिर कुछ दुकानें खुली हुइ दिखाई देती हैं। अधिकतर लोग खाने-पीने की वस्तुएं ख़रीदते हैं। बाकी दुकानों पर दुकानदार क़ुरआन ही पढ़ता दिखाई देता है।

हाँ, अस्र की नमाज़ हुई कि फिर बहार वापस आ गई। अब फिर सड़कों पर चहल-पहल प्रारम्भ हो गई, नबी की मस्जिद में व्याख्यान होने लगा, विद्यार्थी विद्या का अध्ययन में लग गए, मानो थके हुए मुसाफ़िर ने थोड़ी देर सुस्ता कर सफ़र प्रारम्भ कर दिया हो।

सूर्यास्त होने से एक घंटा पहले मस्जिद भरने लगी दस्तर ख़्वान बिछने लगे, लोग अपने घरों से इफ़्तारी लाने लगे, सुराहियों में पानी भरने लगे। मोटरों की दौड़-धूप, कारों की आवाज और बसों की इंजनों के शोर से सारा शहर गूंज उठा।

अब फिर न किसी बड़े की बड़ाई है न छोटे की छोटाई, हर रोज़ेदार चाहे जहाँ अपना फल वगैरह लेकर बैठ जाए। जिधर से गुज़रिये पधारिये-पधारिये ही की ध्वनि सुनाई देती है। सुर्यास्त होने का समय ज्यों-ज्यों निकट आ रहा है लोगों का उत्साह उतना ही बढ़ रहा हैं । समुद्र की मौजें तेज़ होती चली जा रही हैं। जिधर देखिए मनुष्य ही मनुष्य, मानों एक विशाल

पुष्पवाटिका में खिले हुए फूल पवन के झोकों से आपस में गले मिल रहे हैं। बाद में मालूम हुआ कि लोग बहुत दूर-दूर से नबी ﷺ की मस्जिद में रोज़ा खोलने आते हैं।

अब सूर्यास्त हो गया, लाल बत्ती जल गई। धमाके की गम्भीर आवाज़ भी कानों गूंजने लगी। फिर क्या था दिन भर के रोज़ेदार बंदे अपने अल्लाह की आज्ञा पाते ही रोज़ा खोलने लगे। न कोई छीना-झपटी है न कोई हंगामा, बल्कि लाखो पुरूषों और स्त्रियों का समूह शांतिपूर्वक रोज़ा खोल रहा है। केवल दस मिनट के अंदर-अंदर रोज़ा खोल कर नमाज़ के लिए तत्पर हो गया है।

रमज़ान के पूरे माह मैं अपनी आँखों से यह दृश्य देखता रहा। जितना भी मैंने इस विषय पर विचार किया मेरा मस्तिष्क उतना ही चकराता रहा। अंत में इस नतीजे पर पहुँचा कि यह एक ऐसी जाति की सभ्यता है जिसके अंग में ईश्वरवादिता और शिष्टाचार भर दिया गया है। इसलिए हर व्यक्ति को चाहिए कि इसकी सच्चाई का अच्छी तरह अध्ययन करे।

एक वे भी थे

रात अपनी काली चादर को समेट कर रुख़्सत हो रही थी। आकाश पर झिलमिलाते तारे डूबने की तैयारी कर रहे थे। ऐसा महसूस होता था कि आज आकाश पर उदासी हुई है, जिसके ग़मगीन चेहरे किसी की जुदाई की ख़बर दे रहे हैं। इतने में वातावरण के इस सन्नाटे को तोड़ते हुए मुअज़्ज़िन की आवाज़ गूंजी, मगर उसकी आवाज़ में भी बला का दर्द था, सुनेन वाले अपने बिस्तरों से उठ पड़े और वज़ू करके पुकारने वाले की ओर भागने लगे।

जब मस्जिद आदमियों से भर गई तो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ीयल्लाहु अन्हू अपने कमरे से निकले और नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़े हो गए। अल्लाहु अकबर कह कर आपने हाथ बाँध लिये और लोगों ने भी हाथ बाँध लिए।

लोग क़ुरआन सुनने की प्रतीक्षा करने लगे, लेकिन क़ुरआन की जगह यह सुन कर आश्चर्य में डूब गए: 'उसने मुझे मार डाला और फिर आप ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ का हाथ पकड़ कर आगे बढ़ा दिया।

अब्दुर्रहमान ने नमाज़ पढ़ाई, नमाज़ ख़त्म होने के बाद आपने इब्ने अब्बास से पूछा, देखो किसने मुझ पर हमला किया है? इब्ने अब्बास ने देखने के बाद बताया 'मुग़ीरा का सेवक अबू लू-लू ने। 'अब आप को बड़ा आश्चर्य हुआ, फ़रमाया : मैंने उसके साथ भलाई की और उसने यह बदला दिया।

आपको उठा कर घर ले जाया गया। हमला इतना सख़्त था कि ज़िंदगी की उम्मीद नहीं रही। लोग भविष्य के ख़लीफ़ा के लिए चिंतित हो उठे। अब ख़लीफ़ा के चुनाव का प्रश्न उठा तो आप ने छः व्यक्तियों की एक कमेटी बना दी, जिसमें अली, उस्मान, तल्हा, ज़ुबैर, इब्ने औफ़ और साद बिन अबू वक़्क़ास रज़ीयल्लाहु अन्हुम सम्मिलित थे, और यह फ़रमाया कि जिस एक पर लोगों की राए ठहरे वह मेरे बाद ख़लीफ़ा होगा।

हज़रत मुग़ीरा और दूसरे सहाबा ने कहाः हे अमीरुल मोमिनीन! अपने बेटे अब्दुल्लाह को ख़लीफ़ा बना दीजिए, हम उन से ख़ुश हैं, यह सुन कर फ़रमायाः हे लोगों! हम को तुम्हारे धन से कोई सरोकार नहीं, और न तुम्हारे ख़लीफ़ा बनने की ज़रूरत, अगर इसमें कुछ भलाई थी तो हम को मिल चुकी है, और अगर हमे कुछ ग़लती हुई है तो क्या यह काफ़ी नहीं कि उमर के कुटुम्ब का एक व्यक्ति अपने परमेश्वर के सम्मुख खड़ा होकर उसका हिसाब दे।

फिर आपने बड़े ही दुख भरे स्वर में कहाः हे प्रभु! मैं तुझ से वंदना करता हूँ कि मेरी भलाईयों और बुराईयों को बराबर कर दे। अगर मैं प्रलय के दिन ख़िलाफ़त का हिसाब देकर बच जाऊँ तो अपने आप को बड़ा ही भाग्यशाली समझूंगा।

यह थी मुसलमानों के अमीर की भावनाएँ, जिसने ख़लीफ़ा बनने के बाद रात की नींद हराम कर ली। भूखों का खाना पकाया, अपाहिजों और बेवाओं के घर झाड़ू लगाए, अपने बाल-बच्चों के लिए बैतुलमाल से उतना लिया जितना

एक आम व्यक्ति को दिया। अपने सेवकों के संग भी समानता का वह व्यवहार किया, जिसकी मिसाल लाने में इतिहास थक गया, जिसने जीवन में प्रत्येक क़दम यह सोच कर उठाया कि किसी बड़ी सत्ता के समक्ष उत्तर देना है। वह मृत्यु के समय यह कामना करता है कि प्रभु मेरी भलाईयों और बुराईयों को बराबर कर दे।

और आगे देखिए.....।

आप ने अपने बेटे अब्दुल्लाह को बुला कर कहा, बेटे! हज़रत आईशा के पास जाकर कहो कि उमर आप को सलाम कहता है, हाँ, अमीरुल मोमिनीन मत कहना, क्योंकि अब मैं मुसलमानों का अमीर नहीं हूँ और फिर कहो, उमर अपने दोनों साथियों के पास दफ़्न होना चाहता है (अर्थात हज़रत रसूलुल्लाह ﷺ और हज़रत अबू बक्र रज़ीयल्लाह अन्हु) अब्दुल्लाह ने हज़रत आईशा से कहा तो उन्होंने उत्तर दिया, उस स्थान को तो मैंने अपने लिए चुन रखा था, परंतु आज उमर को अपने ऊपर तरजीह दूंगी।

अब्दुल्लाह वापस आकर हज़रत उमर के पास गए और यह ख़ुशख़बरी सुनाई, जिसको सुनते ही आप का चेहरा चमक उठा। आप लेटे हुए थे उठकर बैठ गए और फ़रमया:

इससे बड़ी मेरे लिए कोई बात नहीं है कि मैं रसूलुल्लाह ﷺ और अबू बक्र के निकट में दफ़्न होऊँ। और फिर कहाः जब मैं मर जाऊँ तो फिर एक बार हज़रत आईशा से कहों कि उमर अपने दोनों साथियों के पास दफ़्न

होना चाहता है, अगर आज्ञा दें तो ठीक है, नहीं तो आम मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में दफ़्न कर देना।

ये थे हज़रत उमर, जिनके पैरों तले दुनिया का दो तिहाई भाग पड़ा था, मगर मरने के पश्चात भी दो गज़ ज़मीन के लिए सवाल कर रहे थे। यहाँ तक कि दो-दो बार पूछने के पश्चात आप ने हज़रत आईशा के हुजरे में दफ़्न होना पसंद किया।

इस्लामी इतिहास के ये सुनहरे पन्ने हैं, चाहिए कि हर व्यक्ति इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़े और विचार करे कि इसी पृथ्वी पर कुछ ऐसे भी शासक रह चुके हैं जिनका एक-एक पल ईश्वर की याद में व्यतीत था जो अपेन हर काम के लिए ईश्वर के सम्मुख उत्तरदायी थे। कहते हैं कि गाँधी जी ने सफ़ल राज्य की परिभाषा में इसी शासन काल का उदाहरण प्रस्तुत किया था।

वे भी व्यापार करते थे

आज ईमानदारी ख़त्म होती जा रही है। बाज़ार से लेकर सरकारी विभागों तक में बेईमानी आम है। बाज़ार में दूध, मलाई, घी और तेल से लेकर सोना-चाँदी तक कोई चीज़ भी तो असली और शुद्ध नहीं मिलती। दवाईयाँ तक नक़ली बिक रही हैं। रहे विधान व नियम तो वे पुस्तकों की शोभा बने हुए हैं। कारोबार और व्यापार में उनका कोई दख्ल नहीं है। इस्लाम ने मानव जाति को दो विश्वास दिए हैं।

अल्लाह (ईश्वर) पर विश्वास और आख़िरत में पूछताछ का विश्वास। जब मानव जीवन पर इन विश्वासों का प्रभाव था उस समय की ईमानदारी का पैमाना क्या था? इसे निम्न घटनाओं में पढ़िए:

१. एक व्यक्ति अपना ऊँट बेचने के लिए आया, ऊँट के पाँवों में कोई ऐब था। उसने ऊँट को एक व्यक्ति के हाथों ३०० दिरहम में बेच दिया। वहाँ एक सहाबी हज़रत वासिला इब्ने असक़ा रज़ीयल्लाहु अन्हु मौजूद थे। पहले तो उनका ध्यान इसे ख़रीदने और बेचने की ओर नहीं गया पर जब ख़रीदार ऊँट लेकर चला गया तो उनको याद आया कि ऊँट के पाँवों मे ऐब है। वे दौड़े और ख़रीदार से मिलकर उसे बाता दिया कि ऊँट ऐबदार है और ऊँट को वापस लौटा दिया।

ऊँट वाले ने कहाः आपको क्या पड़ी थी कि आपने मेरा सौदा ख़राब कर दिया।

उन्होंने फ़रमाया: प्रेषित मुहम्मद ﷺ का कथन है कि यह सही नहीं कि कोई चीज़ बेची जाए और ख़रीदार पर उसका ऐब ज़ाहिर न किया जाए और उस व्यक्ति के लिए भी सही नहीं कि जो माल के ऐब को जानता हो पर ख़रीदार को न बताए।

हुज़ूर ﷺ ने हम से इस का वचन लिया है कि लोगों का हित चाहें और उनके साथ अच्छा व्यवहार करें।

२. बसरा के एक व्यापारी को उसके सेवक ने सोस नगर से यह ख़बर दी कि इस साल गन्ने की फ़सल ख़राब हो गई है, यह बात किसी पर प्रकट न हो वरना चीनी की क़ीमत चढ़ जाएगी। व्यापारी ने सेवक के मश्विरे से बहुत सी चीनी ख़रीद कर रख ली और जब उसे एक व्यक्ति के हाथ बेचा तो तीस हज़ार दिरहम का फ़ाएदा हुआ।

जब यह सौदा हो चुका तो व्यापारी को ख़ियाल आया कि उसके लिए यह सही न था कि गन्ने की फ़सल को छिपा कर इस-इस तरह मुनाफ़ा उठाया जाए । ऐसा कर वह तीस हज़ार दिरहम लेकर उस व्यक्ति के पास गया, कहा, यह रक़म वापस ले लो। उसने कारण पूछा तो कारण बता दिया। उसने कहा, जो हो, अब यह रक़म आप की हो चुकी, व्यापारी के आग्रह पर भी उसने यह रक़म वापस न ली, तो वह वापस चला गया। रात में उसकी अन्तरात्मा ने उसे झिझोंड़ना शुरू किया। वह सुबह फिर ख़रीदार के पास गया और उसका मन उसी समय शांत हुआ जब ख़रीदार ने रक़म वापस ले ली।

३. हज़रत सक़ती सिर्री (रहिमहुल्लाह) ऊँचे दर्जे धर्मात्मा होने के बावजूद व्यापार करते थे। उन्होंने अपना यह नियम बना लिया था कि ३% से अधिक नफ़ा न लिया करेंगे। एक बार उन्होंने साठ दिरहम के बादाम ख़रीदे, उसका भाव चढ़ गया। एक दलाल बादाम का सौदा करने आया, आपने कहा, मैं इस शर्त पर यह सौदा तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ जब तुम इसे ६३ दिरहम से ज़्यादा में न बेचो। उसने कहा, अब तो १०० का माल ही है। आप ने फ़रमाया: मैं अपने नियम को तोड़कर अधिक मुनाफ़ा नहीं ले सकता।

४. प्रेषित मुहम्मद इब्ने मुन्क़दिर (रहिमहुल्लाह) बहुत बड़े धर्मात्मा थे। कपड़े की दुकान चलाया करते थे। उनकी ग़ैर हाज़िरी में उनके शिष्य ने ५ रु. वाला थान १० रु. में बेच दिया। आप दुकान पर आए और यह बात मालूम हुई तो आप ख़रीदार की खोज में निकले, आख़िर भेंट हो ही गई। आपने फ़रमाया: जो थान तुमने ख़रीदा है वह १० रु. का है। या तो तुम ५ रू. वापस ले लो या फिर साथ चलों मैं तुम्हें १० रू. वाला थान दूं। आख़िर उसके ५ रू. वापस कर दिए। ख़रीदार चकित था कि वह कौन व्यक्ति है। लोगों ने जब आप का परिचय कराया तो समझ में आया।

तब और अब

शाम का समय था। पैग़म्बरे इस्लाम ﷺ का दरबार लगा हुआ था। उसी समय एक ग़रीब व्यक्ति जो बेहद भूखा था, दरबार में हाज़िर हुआ। हुज़ूर ﷺ के क़रीब पहुँचकर उसने निवेदन किया, ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ ! मैं बहुत भूखा हूँ, कुछ खिलवाईएगा? हुज़ूर ने उसे तसल्ली दी और घर में पूछा क्या कुछ खाना है?

जवाब मिला, पानी के सिवा कुछ भी नहीं है।

जवाब सुन कर बड़ी चिंता में पड़ गए। तभी कुछ सोच कर आप ने अपने सहाबा की तरफ़ रूख़ कर के कहा, कोई है जो मेज़बानी का सौभाग्य हासिल करे और इस भूखे को खाना खिलाए?

एक सहाबी जिनका नाम अबू तल्हा था, उठे और बोले, हुज़ूर मैं हाज़िर हूँ, मैं इन साहब को अपने साथ ले जाने की इजाज़त चाहता हूँ। हुज़ूर ने इजाज़त दी और अबू तल्हा मेहमान को अपने घर ले गए, उसे घर के दरवाज़े पर खड़ा कर के खुद अंदर पहुँचे और अपनी बीवी से पूछा, क्या खाना तैयार है? अरे, आज इतने सवेरे कैसे भूख लग गई, ख़ैरियत तो है? बीवी ने हैरत से कहा। खाना मुझे नहीं चाहिए, बल्कि मेहमान को चाहिए जिसे मैं दरवाज़े पर खड़ा कर आया हूँ। उफ़, ओह! लेकिन आज तो घर में सिर्फ बच्चों के लिए खाना है।

ओह! यह तो बुरी ख़बर सुनाई तुमने, अबू तल्हा ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा, मेहमान हमारे घर से भूखा लौट जाए इससे बढ़कर दुर्भाग्य और क्या हो सकता है?

तभी एकाएक उन्हें एक तरकीब सूझी, मुस्कुराते हुए उन्होंने कहा, सुनो, ऐसा करो बच्चों को तुम बहला कर सुला दो और जब वे सो जाएं तो खाना मेहमान के सामने लाकर रख देना। लेकिन खाना तो सिर्फ़ एक आदमी के लिए पूरा हो सकता है जब कि मेज़बान को यानी हम को मेहमान का साथ देना ज़रूरी है। तुम इस बात की फ़िक्र न करो मेरे दिमाग़ में एक अच्छी तरकीब आ गई। वह क्या? बीवी ने आश्चर्य से पूछा। देखो जब हम खाने के लिए बैठेंगे उस समय तुम्हारा यह काम होगा तुम बत्ती बढ़ाने के बहाने चिराग गुल कर देना और .....।

बस, बस मैं समझ गई, अच्छी तरकीब है।

तब कुछ देर के बाद जब बच्चे सो गए तो खाना परोसा गया और जैसा कि दस्तूर था मेहमान और मेज़बान एक साथ खाने के लिए बैठे। खाना शुरू करने के थोड़े ही समय बाद चिराग़ गुल कर दिया गया और तब मेज़बान (अबू तल्हा) अपना हाथ खाने तक ले जाकर ऐसे ही झूठ-मूठ खाना खाने जैसी आवाज़ करके यह ज़ाहिर करने लगे कि वे खाना खा रहे हैं। इस प्रकार मेहमान ने पेट भर खाना खा लिया और मेज़बान ने इसे अपना बहुत बड़ा सौभाग्य समझकर संतोष की साँस ली।

इच्छाओं का अंतिम केन्द

आज से हज़ारों साल पहले संसार के एक कोने में एक अनोखा इन्क़िलाब हो रहा था। ईश्वर का एक भक्त जो अपने निर्बल जीवन के अलावा किसी दूसरी चीज़ का मालिक नहीं था, यहाँ तक कि इसके माँ-बाप की शीतल छाया भी सिर से उठ चुकी थी, वह देखता है कि उसके आस-पास का मनुष्य बड़ी दुर्दशाओं में साँस ले रहा है। कहीं अत्याचार का बोलबाला है तो कहीं मूर्ति पूजा जैसे अंधविश्वास।

इन विभिन्न प्रकार की बुराईयों को देख कर वह मनुष्य उद्धार का बीड़ा उठाता है। यद्यपि वह निर्बल है, निर्धन है, निःसहाय है, परंतु उसके मन में अपने पालनहार का विश्वास है। उसे यकीन है कि उसका परमात्मा उसकी सहायता करेगा।

यह केवल उसके देश ही की दुर्दशा नहीं थी, बल्कि उसके पड़ोसी राज्य इराक़ और शाम में भी यही सारी की सारी बुराईयाँ प्रचलित थीं, इंसान, इंसान से लड़ रहा था। आपस में पशुओं जैसा बरताव कर रहा था। वह चोरी, डकैती, मूर्ति पूजा और पता नहीं, किन-किन बुराईयों में लिपटा हुआ था।

स्वयं भारत जिसका कण-कण किसी न किसी ऋषि और मुनि का साक्षी है, जिसको इस बात पर गर्व है कि उसका देश ईश संदेष्टाओं का केन्द्र रहा है और धर्मपालन जिसके वासियों की मुख्य विशेषता है। परंतु समय के साथ-साथ उनकी शिक्षाएं भी लुप्त हो गई यहाँ तक कि वह समय आ गया जब

ईशवाणी से भारत की धरती खाली हो गई, रामायण और वेदों का नाम तो शेष रह गया, परंतु उनकी वास्तविक शिक्षाओं को बदल दिया गया, अनेकेश्वरवाद ने अपना अधिकार जमा लिया, मूर्ति पूजा हिंदुस्तान की सभ्यता बन गई।

ऐसे अंधकारमय वातावरण में एक ईश भक्त पैदा हुआ। चालीस वर्ष तक मानव सुधार के मार्ग सोचता रहा। अंत में ईश्वर ने अपनी दया से क़यामत तक के लिए सम्पूर्ण मानव जाति की रहनुमाई के लिए उसे चुन लिया।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि जब उसने अपनी बिगड़ी जनता को सुधारने का बीड़ा उठाया तो वे लोग उस पर और बिगड़ गए। उसको विभिन्न प्रकार से सताने लगे, उसके मार्ग में काँटे बिछाए गए, उसको सामाजिक सम्बंध से अलग कर दिया गया। उसको पागल, जादूगर और पता नहीं कितने नामों से बादनाम करने की कोशिश की गई। परंतु वह यह सब कुछ सहता रहा और ईशवाणी लोगों तक पहुँचाता रहा, यहाँ तक कि उसकी ही जाति ने उनके जीवन का अंत करने का षड़यंत्र रचा तो वह ईश्वरीय आज्ञानुसार ईश्वर की रक्षा में मातृभूमि त्याग कर एक-दूसरे शहर में बस गया। जहाँ वह दस साल के भीतर ईशवाणी को सम्पूर्ण मानव जाति तक पहुँचा कर ईश्वर के पास चला गया।

आज उसकी शिक्षाओं पर लगभग चौदह सौ वर्ष बीत रहे है, परंतु उसकी सत्यता का सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि आज भी वह पुस्तक जो उसके द्वारा उतरी थी ज्यों का त्यों मौजूद है। एक शब्द का बल्कि एक अक्षर का

भी अंतर नहीं पाया जाता। यही कारण है कि अब एक अरब से अधिक लोग उसको अपना पैग़म्बर और संदेष्टा मान चुके हैं। और अपनी आन्तरिक भावनाओं का वर्णन कुछ इस प्रकार करते हैं।

'हे ईश्वर के अंतिम संदेष्टा! अगर आप न पधारते तो आज भी मानव जाति अंधकार के समुद्र में फंसी रहती और वह शांति के मार्ग से परिचित न हो पाती। वह ऐकेश्वरवाद के स्थान पर अनेकेश्वरवाद को अपनाए होती और ईश्वर की प्रसन्नता से प्रलय तक वंचित रहती। आप के इस परोपकार का हम क्या बदला दें। हम निर्धन हैं, निःसहाय हैं, निर्बल हैं, इसलिए हमारी ओर से सलाम ही स्वीकार कीजिए।'

सम्भव है अब आप को ज्ञात हो गया कि वह कौन सा नबी है? जी हाँ, वे मुहम्मद ﷺ हैं। जिनका लाया हुआ धर्म ही अब मानव इच्छाओं का अंतिम केन्द्र है। उसी में हमारे सांसारिक तथा परलोकिक जीवन की सफ़लता है। इसलिए आईए उसके लाए हुए धर्म का अध्ययन करें, कहीं ऐसा न हो कि हम हिरन की तरह कस्तूरी की खोज में चमन-चमन भटकते रहें जब कि कस्तूरी स्वयं उसकी नाभी में लगी हुई है।

क़ुरआन जगत प्रसिद्ध विभूतियों की नज़र में

गाँधी जी ने क़ुरआन का अध्ययन करने के बाद कहाः "क़ुरआन का अनेकों बार मैंने ध्यान पूर्वक अध्ययन किया। सच्चाई और अहिंसा की शिक्षा उसमें देख कर मुझे अत्याधिक प्रसन्नता हुई।"

श्रीमती सरोजनी नायडू ने पहली जनवरी १९४७ ईस्वी को कलकत्ता में इस महान ग्रंथ के बारे में अपने विचार यूं व्यक्त किए: "क़ुरआन मजीद शिष्टाचार और न्याय का घोषणा पत्र है। आज़ादी का चार्टर है। व्यवहारिक जीवन में सत्य और न्याय की शिक्षा देने वाली क़ानून की महान पुस्तक है। क़ुरआन के अलावा कोई अन्य धार्मिक पुस्तक जीवन के सारे ही मामलों और पहलुओं की व्यवहारिक व्याख्या और हल पेश नहीं करती।"

नेपोलियन ने कहा था: "वह दिन दूर नहीं कि सारे ही देशों के नीतिज्ञ मिल कर क़ुरआन के सिद्धांतों के अनुसार एक ही ढंग के शासन को अपनाएंगे। क़ुरआन की शिक्षाएं और उसके सिद्धान्त सत्य पर आधारित हैं और मानव जाति को ख़ुशियों और ख़ुशहालियों से मालामाल करने वाले हैं। अत: ख़ुदा के भेजे हुए रसूल मुहम्मद ﷺ और उन पर अवतरित की हुई किताब क़ुरआन पर मुझे गर्व है और आप ﷺ की सेवा में श्रद्धांजलि पेश करता हूँ।

डॉ. सेमूएक जॉनसन अपनी जगत प्रसिद्ध पुस्तक 'ओरियन्टल रिलिजेन्स' में लिखते हैं: "वह (क़ुरआन) एक आहवानकर्ता की पुकार है। हिक्मतों से भरी हुई, जिद्दो जेहद की ओर अमल का जोश भर देने वाली किताब है। अपने

संदेश का विरोध करने वालों को चुनौती देने वाली किताब, दर्द और सहानुभूति के साथ उन्हें समझाने वाली किताब....."

सबसे पहले इस किताब ने अपने संदेश को अपनाने वालों के दिलों को गरमाया, फिर उनको एक सामूहिक आंदोलन में बदल दिया। यह आंदोलन तूफ़ान की तरह उठा और ईरान तथा एशिया के विभिन्न देशों से गुज़रता हुआ दूर तक जा पहुँचा।

मिस्टर राडवेल ने क़ुरआन मजीद के बारे में कहा: "अरब के जाहिल, अनपढ़ और असभ्य लोगों को एक थोड़ी सी अवधि में दुनिया के नेतृत्व और शासन के योग्य इस किताब ने बनाया। मानो किसी ने जादू की छड़ी घुमा दी और एक महान क्रांति अरबों में तुरंत फैल गई।"

जर्मनी के विद्वान गोयटे ने कहाः "जब भी मैं क़ुरआन को देखता हूँ, नए-नए मायने वह खोलता चला जाता है। यह किताब अपने पढ़ने वाले को धीरे-धीरे अपनी ओर खींचती जाती है और अन्तत: उसके मन-मस्तिष्क पर छा जाती है।"

प्रसिद्ध इतिहासकार गिब्बन ने इन शब्दों में अपनी श्रद्धा प्रकट की है: "एकेश्वरवाद को स्पष्ट शब्दों में बयान करने वाली और दिलों पर एकेश्वरवाद की छाप लगाने वाली महान पुस्तक क़ुरआन मजीद है।"

इन्साइक्लोपीडिया आफ़ ब्रिटानिका के सम्पादक लिखते हैं: "दुनिया में सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली और कठंस्थ की जाने वाली पुस्तक क़ुरआन है। यह विशेषता दुनिया की अन्य किसी भी धार्मिक पुस्तक में नहीं है।"

डॉ. मौरिस बुकाई लिखते हैं: “आधुनिक ज्ञान के प्रकाश में क़ुरआन का निष्पक्ष हो कर अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि दोनों में परस्पर मतैक्य पाया जाता है।

यह सम्भव ही नहीं कि हम यह सोच सकें कि प्रेषित मुहम्मद ﷺ के समय का कोई मनुष्य अपने समय के ज्ञान के आधार पर ऐसे वक्तव्यों का रचयिता हो सकता है, आधुनिक जानकारी तो उस समय उपलब्ध ही न थी।"

(प्रकाशक)